

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 जून 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 6, जून 2023



<http://www.kilol.co.in>



म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

आपकी गर्मी की छुट्टियाँ समाप्त होने में कुछ ही दिन बचे हुए हैं। मुझे विश्वास है आप अपनी छुट्टियों व समय का सदुपयोग अपनी रुचि अनुसार खेल, संगीत, पेंटिंग, स्थानीय कामगारों के कार्य एवं पढ़ने-लिखने जैसे सकारात्मक कार्यों के लिए कर रहे होंगे। कुछ लोग तो शादी-विवाह या कहीं दूर भ्रमण में भी व्यस्त हैं। अपने परिजनों से मिलने के लिए भी यह समय बहुत अच्छा रहता है। आप अपने परिवार के बड़े बुजुर्गों दादा-दादी, नाना-नानी के पास बैठ कर बात करें, उनके अनुभवों को सुनें निश्चित ही आपको कुछ नया करने, सीखने को मिलेगा। आप अपनी छुट्टियों के शेष बचे हुए समय का उपयोग अपनी रुचि अनुसार कुछ नया सीखने एवं पढ़ने-गढ़ने में लगा सकते हैं।

इस माह महान संत कबीर जी, गुरुगोविंद सिंह जी की जयंती के साथ विश्व पर्यावरण दिवस है। चलो, हम अपनी प्रकृति के संरक्षण के लिए कम से कम एक पेड़ लगाएँ। स्वयं भी लगाएँ व लोगों को भी प्रेरित करें साथ ही उनकी सेवा करने का संकल्प भी लेवें। और हाँ ! एक बात जरूर ध्यान रखें किलोल पढ़ना न भूलें अपने शिक्षक / परिजनों से सहयोग लेकर अपनी रचनाओं को नियमित भेजे।

**आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा**

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमाणिका

नानी का घर.....	9
बूंदें नाचीं छम- छम- छम.....	10
नन्हीं चिड़िया.....	11
पंचतंत्र की कहानी.....	13
आलू.....	15
सूरज दादा.....	16
कारीगर पक्षी "बया".....	17
अधूरी कहानी पूरी करो.....	19
राजा की बीमारी.....	19
आस्था तंबोली, कक्षा 4, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी.....	19
सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी.....	20
दिनेश विजयवर्गीय, राजस्थान द्वारा पूरी की गई कहानी.....	20
कुमारी वर्षा साहू, कक्षा-आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग द्वारा पूरी की गई कहानी.....	21
करिश्मा साहू सोमनापुर नया कक्षा दसवीं द्वारा पूरी की गई कहानी.....	22
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी.....	22
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी.....	24
आलसी गधे की कहानी.....	24
नई कविता.....	25
ये प्यारे मजदूर.....	27
परीक्षा का समय.....	29
बच्चों में ईश्वर अल्लाह बस्ते हैं.....	31
चित्र देख कर कहानी लिखो.....	33
अनन्या तंबोली कक्षा आठवीं द्वारा भेजी गई कहानी.....	33
सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी.....	34

टोमन लाल मालेकर, बालोद द्वारा भेजी गई कहानी	34
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी	35
डिजेन्द्र कुर्रे, महासमुंद द्वारा भेजी गई कहानी	36
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र	37
अच्छाई का मुखौटा	38
दोस्त हों तो ऐसे	40
शहीदों की कुर्बानी	42
पृथ्वी दिवस विशेष, 22 अप्रैल	44
मैं मजदूर हूँ	47
युवाओं में एक मंत्र की अति ज़रूरत है	49
नया भारत	51
चनाबूट के मजा	53
बाल पहेलियाँ	55
मेरे प्यारे दिनकर	57
हम, हमारी सोच का परिणाम हैं	58
गलती का एहसास	60
संगति का असर	62
कृषि रोबोट: किसानों का किफायती दोस्त	64
शिक्षा के अलख	67
भारत की पहचान	69
पूज्य गुरुवर	71
डॉ. भीमराव अम्बेडकर	73
नन्हीं परी की खुशी	75
बेटी	76
सूरज	78
अपने अंतर्ज्ञान का पालन करें	80
स्कूल का पहला दिन	84

सूरज बड़ा गुस्सैल.....	85
खिलौना घर	87
कीमत	88
घड़े की अच्छाई	89
नानी के घर जाबो	90
रद्दा के रुख राई.....	92
अँगना मा शिक्षा	94
माँ-बाप बच्चों के मालिक बनने की कोशिश न करें.....	96
मजदूर.....	98
साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं	100
बाल गीत	102
सरकारी इस्कूल	104
मेरे घर में है गुलदान	106
रविन्द्र	107
हाथों की धुलाई.....	108
मुर्गों की लड़ाई	109
छलाँग.....	111
छुट्टी आई.....	112
गर्मियों की छुट्टी	114
पहेलिया	116
मेरे पापा	117
अपने जन्मदिन पर.....	119
सिपाही.....	121
हमें समझो तो जरा.....	123
एक महिला की पीड़ा.....	125
लोगों का तो काम है कहना.....	127
सैनिक.....	129

दस्तूर है हमारा	131
जब गरमी के दिन आथे	133
किसान बन गया है भगवान.....	135
मेरा भारत मुस्कुरा रहा है.....	137
बाल पहेलियाँ.....	139
मेरी प्रिय अध्यापिका	141
स्पर्श.....	143
झुकना - विनम्रता.....	145
गर्मी छुट्टी	147
सुनहली तितली	148
किलोल	150
दरोगा और दरोगा साहब.....	152
अभी तो कदम बढ़ाया है	156
धन-धन हे मोर भाग ल ओ दाई	158
सुंदर पीले-रसीले आम	160
मैं भोला-भाला बच्चा हूँ	161
देश भक्त	162
देखो सपने क्या कहते.....	163
बचपन के दिन वापस आएँ	165
नीम का पेड़.....	167
बाल पहेलियाँ.....	168
प्रकृति	170
मेरे स्कूल के बच्चे हैं मन के सच्चे	172
पर्यावरण को बचाना है	174
हरियल तोता	176
नाव हमारी	177
हाथी राम.....	178

उषाकाल	179
बढ़ते जाओ	180
आमा	182
महतारी के सीखोना	184
महात्मा गौतम बुद्ध	185
सतरंगा संसार.....	187
ग्रीष्म ऋतु	189
हवा	191
दर्द पीना ही पड़ेगा.....	193
जननी	195
उल्लू की जान बचाई	197
पर्यावरण.....	199
मौसमी फल.....	200
पौध लगाओ	201
विद्यालयों में मिशन बुनियाद कार्यक्रम 11 मई से चलेगा	202
दुखी लाल के दुख.....	204
आओ जानें	206
लो आ गई गर्मी.....	207
गेंदा का फूल.....	209
भारत के प्रतीक चिन्ह	210
प्रेम.....	212
मेहनत का फल	213
पापा की मूँछे.....	215
छुट्टी की मौज.....	216
माता-पिता तुल्य जग में कोई अनमोल हीरा नहीं.....	218
मेरा संसार	219
माँ की ममता.....	221



कविता	223
विचार एक अद्भुत शक्ति.....	225
छोटा बच्चा	227
काशामेरे पंख होते.....	229
खो गई, वो कल्पना	230
माँ तो आखिर में माँ होती है.....	231
अच्छा लगता है	233
गर्मी के दिन	234
आजा कान्हा मोर घर.....	235
घोंसला	237
मटका गोलमटोल	238
प्यारी गिलहरी.....	239
नटखट बुलबुल	240
हाथी आया.....	242
स्कूल खुलने वाली है	244
मैं भी स्कूल जाऊंगा	246
समर कैम्प	247
राजू की शिक्षा यात्रा.....	248
शहरिया पेड़	249
छोटू भालू का घर	254
तेरे चरणों में माँ तीरथ द्वार है	256
कुल्फी	258
सूरज	259
जल बचाओ जीवन बचाओ	261
पर्यावरण बचाना है	263
भारतीय किसान	264
गर्मी में सावधानी.....	266



नानी का घर

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



खेल- खिलौने कितने सारे
लगते सुन्दर प्यारे- प्यारे.
नानी का घर सबसे सुन्दर
बाग- बगीचे न्यारे- न्यारे.

हंसते फूल फुदकती चिड़िया
साग- सब्जियाँ क्यारी- क्यारी.
अमरूद, केले, लीची, आम
उड़ती तितली प्यारी- प्यारी.

मजा छुट्टियों में हम लेते
हंसते - गाते, दौड़ लगाते.
दिनभर करते केवल मस्ती
हुई रात तब, हम सो जाते.

बूंदें नाचीं छम- छम- छम

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



आसमान में बिजली चमकी
बूंदें नाचीं छम- छम- छम.

पानी लेकर आये बादल
बरखा बरसे झम- झम- झम.

कागज की हम नाव चलायें
चलो नहायें थम- थम- थम.

दूर भगायें गरमी मिलकर
खेलें- कूदें छप- छप- छप.

नन्हीं चिड़िया

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



भटक रहे हैं हम बेचारे, कहाँ-कहाँ अब जाएँगे.
जरा बताओ हमको मानव, कैसे प्यास बुझाएँगे.
सूरज दादा नहीं समझते, नीर सभी पी जाते हैं.
ग्रीष्मकाल की इस बेला में, हर दिन वे तरसाते हैं.

नीर भरे नयनों से कोयल, कू-कू गीत सुनाती है.
मैना और गौरैया रानी, आकर गले लगाती हैं.
चिंता में पक्षी हैं डूबे, कोई नीर पिलाओ ना.
तड़प-तड़प कर मर जाएँगे, मेघ धरा में आओ ना.

वृक्ष लताएँ टूँठ पड़े हैं, गर्म हवाएँ बहती हैं.
पीर हमारी देख धरा भी, सहमी-सहमी रहती है.
कोयल कहती गौरैया से, शांत रहो छोटी बहना.
हम मानव के घर जाएँगे, व्यथा हमारी तुम कहना.

साहस भर कर जाते पक्षी, पीड़ा उन्हें सुनाते हैं.
कानन-वन की सारी बातें, चूँ-चूँ वे बतलाते हैं.
हाथ जोड़ते विनती करते, थोड़ा सा रख दो पानी.
प्यास बुझा कर उड़ जायेंगे, हम नन्हीं चिड़िया रानी.

पंचतंत्र की कहानी

चुन्नू और मुन्नू



एक समय की बात है, चुन्नू और मुन्नू नाम के दो चूहे थे दोनों में बहुत अच्छी दोस्ती थी. चुन्नू शहर में रहता था और मुन्नू गांव में, लेकिन दोनों एक-दूसरे की खबर वहां आने-जाने वाले चूहों से लेते रहते थे. एक दिन चुन्नू को अपने दोस्त मुन्नू से मिलने का मन किया, तो उसने अपने गांव आने की बात अपने दोस्त के जरिए मुन्नू तक पहुंचा दी. मुन्नू अपने दोस्त के आने की खबर सुनकर काफी खुश हुआ. वह अपने दोस्त का स्वागत करने की तैयारियां करने लगा. फिर वह दिन आया जब चुन्नू गांव अपने दोस्त से मिलने पहुंचा. मुन्नू ने अपने दोस्त का स्वागत बहुत खुशी से किया. दोनों ने खूब सारी बातें की. बातों-बातों में मुन्नू ने कहा 'शहर में तो बहुत प्रदूषण होता होगा न, लेकिन यहां गांव का वातावरण काफी शुद्ध है.' इन्हीं सब बातों पर चर्चा करने के बाद चुन्नू और मुन्नू को भूख लगी. मुन्नू ने अपने दोस्त को बड़े प्यार से खाने में कुछ फल, रोटी और दाल-चावल परोसे. दोनों ने साथ बैठकर खूब मजे से खाने का आनंद लिया. खाने के बाद दोनों गांव की सैर पर निकल पड़े. उन दोनों ने गांव के खूबसूरत नजारे का आनंद लिया. गांव की हरियाली दिखाते वक्त मुन्नू ने शहर के चुन्नू से पूछा, 'क्या शहर में भी ऐसे ही हरे-भरे नजारे हैं?' चुन्नू ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन अपने दोस्त को शहर आने का निमंत्रण जरूर दिया. पूरे दिन की सैर के बाद दोनों रात को खाना खाने बैठे. मुन्नू ने फिर से अपने दोस्त को फल और अनाज खाने को दिए. दोनों ने खाना खाया और सोने चले गए.

अगली सुबह मुन्नू ने अपने दोस्त को नाश्ते में फिर से वही फल और अनाज परोसे. ये देखकर चुन्नू नाराज हो गया. उसने कहा, 'तुम्हारे यहां क्या हर रोज हर वक्त एक ही खाना खाया जाता है? क्या इन सबके अलावा कुछ और खाना नहीं है?'

चुन्नू ने अपने दोस्त को कहा 'चलो इसी वक्त शहर चलते हैं. वहां देखना कितनी आराम की जिंदगी है और कितने प्रकार की चीजें खाने के लिए हैं.' मुन्नू अपने दोस्त के साथ चलने को तैयार हो गया. दोनों शहर की तरफ निकल पड़े. शहर पहुंचते-पहुंचते रात हो गई. चुन्नू एक बड़े से घर के बिल में रहता था. उतना बड़ा घर देख मुन्नू आश्चर्यचकित रह गया. फिर उसने देखा टेबल पर कई तरह के खाद्य पदार्थ रखे थे. दोनों खाने के लिए बैठ गए. मुन्नू ने पनीर का टुकड़ा चखा. उसे पनीर काफी पसंद आया और उसने तुरंत उसे चट कर दिया. अभी दोनों खाना खा ही रहे थे कि उन दोनों को बिल्ली की आवाज सुनाई दी. चुन्नू ने मुन्नू को तुरंत बिल में छुपने को कहा. उसने बोला, 'दोस्त जल्दी से बिल में छुपो, नहीं तो बिल्ली हमारा शिकार कर लेगी.' वो दोनों दौड़कर बिल में छुप गए. मुन्नू काफी डर गया था. थोड़े ही देर में बिल्ली वहां से चली गई और दोनों बाहर आ गए.

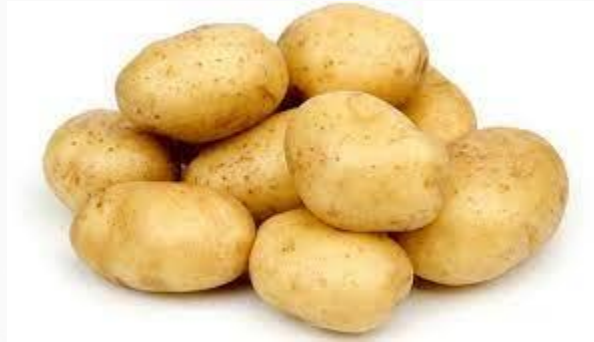
चुन्नू ने मुन्नू को हिम्मत देते हुए कहा 'अब कोई डर नहीं मित्र, बिल्ली जा चुकी है. ये सब तो जीवन का हिस्सा है, सामान्य बात है.' इसके बाद दोनों ने फिर से भोजन करना शुरू किया. अभी मुन्नू ने ब्रेड खाना ही शुरू किया था कि दरवाजे पर आवाज हुई और एक लड़का एक बड़े से कुत्ते के साथ अंदर आने लगा. मुन्नू का डर और बढ़ गया और उसने इसके बारे में चुन्नू से पूछा. चुन्नू ने मुन्नू को पहले बिल में छुपने को कहा. फिर बिल में छुपे रहते हुए मुन्नू को बताया कि वो कुत्ता घर के मालिक का है, जो हमेशा यहां रहता है.

कुत्ते के जाने के बाद दोनों बिल से बाहर आए. इस बार मुन्नू पहले से भी ज्यादा डरा हुआ था. चुन्नू, मुन्नू से कुछ कहता, उससे पहले ही मुन्नू ने जाने के लिए इजाजत मांगी. मुन्नू ने अपने दोस्त को कहा 'तुम्हारे इस स्वादिष्ट खाने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया, लेकिन मैं यहां हर दिन अपनी जान को जोखिम में डालकर नहीं रह सकता दोस्त. स्वादिष्ट भोजन अपनी जगह और कीमती जान अपनी जगह.' यह कहते हुए मुन्नू शहर छोड़कर गांव की तरफ निकल गया. फिर जब वो गांव पहुंचा, तो उसने चैन की सांस ली.

कहानी से सीख- इस कहानी से यही सीख मिलती है कि खतरों से भरी आराम की जिंदगी में कभी सुख-चैन नहीं मिलता है. साधारण, लेकिन सुरक्षित जीवन ही सुखी जीवन है.

आलू

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



आलू सब सब्जी का राजा,
सदा रहे वो ताजा ताजा.

आलू से बनाते हैं चिप्स,
उसको खाते मुन्ने राजा.

जब आलू के बने पकौड़े,
सब खाते हैं ताजा ताजा.

सब सब्जी में घुल मिल जाती,
नहीं बजाती नफरत बाजा.

पाव बड़ा बनता आलू से,
जिसको खाते रानी राजा.

सूरज दादा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



सीधे सादे सूरज दादा,
करते उजियारे का वादा.
अपने काम नियम से करते,
उनका रहता ठोस इरादा.
दुपहर जब लू लपटें चलतीं,
कहते घर में रहना ज्यादा.
सुबह शाम सूरज जी करते,
सबसे शीतलता का वादा.
अपना काम लगन से करते,
कभी न छुट्टी जाते दादा.

कारिगर पक्षी "बया"

रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह, Jagdalpur



नन्हा सा बया,
पीले-काले रंगों वाला,
चहचहाकर खेतों में फिरता,
सैर नदी, नालो पर करता,
कभी न थकता, कभी न रुकता,
यह छोटा मस्तमौला परिंदा.

बारिश के आने से पहले,
कटीले पेड़ों की खोज में,
इधर-उधर वह फिरता,
नदी, झील और खेत किनारे,
लगे झाड़ियों को चुनता,
यह छोटा परिश्रमी परिंदा.

घासों और तिनकों को बुनकर,
घोसला अपना मजबूत बनता,
तेज हवा से भी नहीं गिरते,

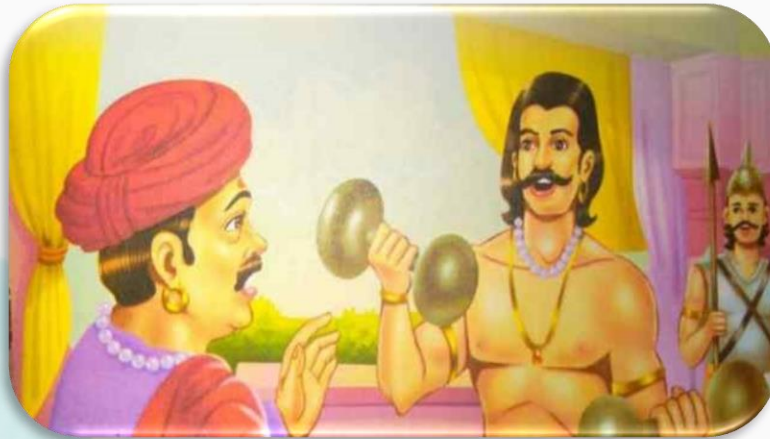
लालटेन की तरह लटकता,
एक अनोखा घोंसला बनाता,
यह छोटा कारीगर परिंदा.

बया के निड़ में दो ही कमरें,
एक में बच्चे एक में अण्डे,
उल्टे लटकते अनोखे घोंसले में,
रोशनी की पूरी व्यवस्था,
मानो ये जूगनुओं को बुनता,
यह छोटा अनोखा परिंदा.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी-

राजा की बीमारी



एक आलसी राजा था. वह कोई भी शारीरिक क्रिया नहीं करता था. परिणामस्वरूप वह बीमार पड़ गया. उसने राजवैद्य को बुलाया और कहा, "मुझे शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के लिए कुछ औषधियाँ दे दीजिए."

वैद्य जानता था कि राजा की बीमारी का कारण उसका आलसीपन है. इसलिए वैद्य ने उसे दो वजनी डम्बल देते हुए कहा, "महाराज, यदि आप इन जादुई डम्बलों को प्रतिदिन एक-एक घंटा सुबह-शाम इस प्रकार घुमाएँ तो जल्दी ही आपको स्वास्थ्य लाभ होगा."

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

आस्था तंबोली, कक्षा 4, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

राजा को वैद्य के बारे में सुनकर उसे दो वजनी डम्बल दिए गए। वैद्य ने कहा, "महाराज, अगर आप इन जादुई डम्बलों को प्रतिदिन एक-एक घंटा सुबह-शाम इस प्रकार घुमाएँगे, तो आपको जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ होगा।" राजा वैद्य की बात मानने वाला था। लेकिन वह बहुत आलसी था और अपने हाथों से काम करने की आदत नहीं थी। वह पूरे दिन आराम करता और सोता रहता था, इसलिए उसने वैद्य की सलाह को अनदेखा करके डम्बलों की प्रक्रिया को नहीं किया। लेकिन राजा की तबीयत दिनों-दिन बिगड़ती गई। उसे चलने-फिरने के काबिल नहीं रहा और उसका जीवन दवाइयों के सहारे चलने लगा। राजा बहुत परेशान हो चुका था। उसे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। तब राजा ने वैद्य की सलाह मानते हुए रोज सुबह-शाम डम्बल उठाकर योग करने की कोशिश की। पहले दिन उसे लगा कि यह

काम बहुत कठिन है, लेकिन प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके करने पर उसे आदत हो गई। योग करने के द्वारा शरीर स्वस्थ रहता है और राजा अनजाने में ही डंबलों को उठाने और योग करने के माध्यम से अपनी शारीरिक आलसपन दूर कर ली। जब राजा स्वस्थ हो गया, तो उसने वैद्यराज को बुलाकर उसे धन्यवाद दिया और कहा, "वैद्यराज, तुमने मेरी आंखें खोल दीं। मैं किसी भी प्रकार से शारीरिक कार्य नहीं करता था, इसीलिए मेरी तबीयत खराब हुई थी। लेकिन तुमने बहुत ही चालाकी से योग के माध्यम से शारीरिक कार्य कराकर मुझे स्वस्थ कर दिया। हम सभी को सुबह-शाम योग करना चाहिए। योग से शरीर स्वस्थ रहता है। करो योग, रहो निरोग!"

सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

वैद्य की बात को रानी ने भी सुना, वह भी राजा के आलसी स्वभाव से परेशान थी, वह चाहती थी कि राजा अपना आलस छोड़ दे, और जल्दी से ठीक हो जाये, उसने सोच लिया कि उसे क्या करना है, रात को जैसे ही राजा सोने चला गया उसने भारी भरकम डंबल को उठाकर महल के सामने बाग में रखवा दिया, सुबह राजा की नींद खुली उसने देखा उसका डंबल गायब है उसने रानी से, मंत्री से, सभी से पूछा कि उसका डंबल कहाँ है, तो रानी ने कहा सामने बाग में है, राजा ने उसे लाने को कहाँ तो सभी ने मना कर दिया, तब राजा खुद गया, चलकर जाने में राजा को थोड़ा ठीक लगा, फिर बाग में जाकर डंबल उठाकर इधर उधर घुमाने लगा, उसे अच्छा लगा, उसकी सुस्ती दूर हुई, वह वापस महल में आ गया, रात को फिर रानी ने उसका भारी डंबल फिर बाग में रखवा दिया, सुबह राजा ने देखा डंबल गायब है वह समझ गया, और बाग में जाकर डंबल से अभ्यास किया, उसकी सुस्ती और आलसीपन दूर हुआ, राजा ने तय किया कि वह अब रोज सुबह जल्दी उठेगा, अपने सब काम करके जल्दी ठीक हो जायेगा, और अपनी अच्छी आदतों से राजा जल्दी ही ठीक हो गया।

दिनेश विजयवर्गीय, राजस्थान द्वारा पूरी की गई कहानी

राज वैद्य ने उस आलसी राजा की कमजोरी और अलसायापन दूर करने के लिए उसे दो भारी डंबल कसरत करने के लिए यह कर दे दिए कि 'ये जादुई डंबल हैं, दो माह में ही इनके जादू का असर आपकी सेहत पर होने लगेगा. आप जल्द ही स्वस्थ व चुस्त हो जाएंगे'.

राजा सोचने लगे वैद्य ने दवा तो दी नहीं और उल्टे इन डंबल को घुमाने की सलाह देदी. राजा एक-दो दिन यही सोचता रहा कि इस आरामी शरीर से यह डंबल घुमाने की मुसीबत क्यों ली जाए. सुबह की प्यारी नींद से जल्दी जागो और खुले हवा वाले स्थान पर इन्हें देर तक घुमाते रहो.

वैद्य ने राजा को सलाह देकर जाते समय मंत्री को भी यह साफ कह दिया कि 'राजा आलसी है परिश्रम नहीं करते इसीलिए कमजोर व अस्वस्थ बने हुए हैं. इन्हें दवा कि नहीं इन्हीं डंबल को घुमाने और बगीचे में आधा घंटा घूमने की जरूरत है.'

मंत्री वैद्य की बात समझ गया उसने भी राजा को इन जादुई डंबल की करामात के बारे में बताते हुए कहा -

महाराज-सचमुच! यह जादुई डंबल है. मेरी मौसी के लड़के को भी वैद्य ने इन्हीं डंबल को नित घुमाते रहने की सलाह दी थी. वह चार माह में ही पूरी तरह स्वस्थ हो गया. आप भी

डंबल नित घुमाने में देरी न करें. हर दिन सुबह बगीचे में इन्हें घूमायें और आधा घंटा पैदल घूमे. देखना आप अच्छे से स्वस्थ व सुखी रहने लगेंगे. पूरे शरीर में स्फूर्ति आ जाएगी.'

राजा रोजाना बगीचे में डंबल घुमाने और पैदल घूमने लगा.

राजा से दो माह बाद वैद्य जी मिलने आए तो राजा को देखकर वह खुशी जाहिर करते हुए बोले - 'अब आपके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा है. यदि आप हर दिन आधा घंटा टहलेंगे तो चुस्त बने रहेंगे. शरीर में आलस नहीं रहेगा और आप राज्य कार्य अच्छे से कर सकेंगे.' राजा अब अपने अच्छे स्वास्थ्य को लेकर खुश था.

कुमारी वर्षा साहू, कक्षा-आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग द्वारा पूरी की गई कहानी

पहले पहले राजा को वैद्य की बातों पर भरोसा नहीं हुआ. क्योंकि वैद्य ने कोई ताकतवर दवाई नहीं दी थी, बल्कि एक खिलौने जैसी सामग्री दी थी. लेकिन धीरे-धीरे राजा को लगा कि "नहीं, एक बार प्रयास करके देखने में क्या बुरा है?" इसलिए उसने रोजाना उन खिलौने जैसी सामग्रियों को उठाने की शुरुआत की. उसके दरबारी उसकी सहायता करते थे. वे राजा के उत्साह को बढ़ाते जा रहे थे और कहते थे, "महाराज, और एक बार, और 10 बार, और उसे ऊपर-नीचे करें. आपकी भुजाओं की ताकत बढ़ती जा रही है." इस प्रशंसा भरी बात को सुनकर राजा का उत्साह रोज-रोज बढ़ने लगा. फिर चार लोग उसकी प्रशंसा करने लगे और उसका आत्मविश्वास और बढ़ गया. ऐसा होते होते एक महीना, दो महीना, चार महीना, छह महीना और एक साल बीत गया. राजा की भुजाएं मजबूत हो गईं. अब वह मन से प्रसन्न रहने लगा. अपने राजकाज के अलावा उसने आसपास की जगहों की सैर करनी शुरू की. इसके साथ ही वैद्य द्वारा दिए गए कसरत की सामग्री भी बहुत छोटी पड़ने लगी. जब उसने अपने शरीर को पूरी तरह से उपयोगी बनाने की कसरत करनी शुरू की, तब उसकी आलस्य पूरी तरह से दूर हो गई. इस छोटे से उपाय से राजा की आलस्य दूर हुई और वह अपने कर्तव्य का सही ढंग से पालन करने लगा. अंत में, वह सच्चा प्रजापालक राजा बन गया.

करिश्मा साहू सोमनापुर नया कक्षा दसवीं द्वारा पूरी की गई कहानी

राजा ने अपनी इस आलसी प्रवृत्ति के कारण वैद्य द्वारा दिए गए जादुई डम्बल को नहीं उठाता था. वह एकदम से आलसपन में डुब चुका था. उसे किसी भी प्रकार की कार्य करने की कोई इच्छा नहीं होती थी. थोड़े दिन बाद राजा की तबियत और गंभीर होती चली गई. राजा की इस स्थिति को देखकर उनके मंत्रियों ने वैद्य को पुनः आमंत्रित किया. वैद्य ने राजा की स्वास्थ्य का जाँच कर बताया कि यह महाराज के द्वारा जादुई डम्बल को कुछ भी नहीं किया है. जिसके कारण इसके शारीरिक क्रिया में कोई प्रभाव नहीं पड़ा है. वैद्य ने राजा को पूर्व में ही उपचार बता दिया था परन्तु राजा को वह उपचार पसंद न आया था और उसने नहीं किया था. वैद्य द्वारा राजा को डम्बल उठाने का जोर दिया गया. तब राजा धीरे- धीरे प्रतिदिन डम्बल उठाता था. राजा के स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन सुधार आ रही थी. राजा को यह उपचार पसंद आया और वह प्रतिदिन डम्बल उठाता था. कुछ दिनों बाद राजा का स्वास्थ्य बिलकुल पूर्व की भाँति हो गया. राजा बहुत स्वस्थ और प्रसन्न थे. बाद में राजा ने राजवैद्य को बुलाया तथा उन्हें पुरस्कार के रूप में स्वर्ण मुद्राएँ भेंट की

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

साथ ही आपको यह भी ध्यान रखना है कि डम्बल को घुमाते समय आपके शरीर में पसीना आ जाए. यह कहकर वैद्य जी ने जड़ी-बूटी देते हुए राजा से कहा-"इसे सोने वक्त आधा गिलास दूध के साथ रोजाना सेवन करें." राजा ने रोज ऐसा ही किया जैसा वैद्यजी ने कहा था. राजा साहब की स्वास्थ्य में पहले दिन से ही सुधार होना प्रारंभ हो गया. एक सप्ताह में वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया.

स्वस्थ हो जाने के कारण राजा बहुत खुश था. सुबह उसने सोचा वैद्य जी को धन्यवाद कहना चाहिए. जिसके कारण मैं ठीक हूँ. उन्होंने मंत्री से कहकर वैद्य को राज दरबार में बुलवाया. उसे धन्यवाद देते हुए पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण मुद्राएं दिया और उसने पूछा कि-"वैद्य जी मैं जानना चाहता हूँ, आप मुझे बताइए यह कौन सी जड़ी-बूटी है जिससे मैं ठीक हुआ हूँ."

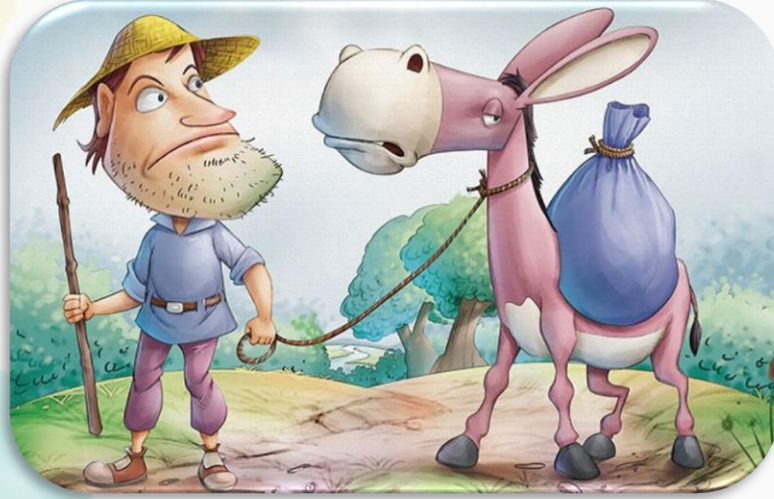
राजा जी की बातों को सुनकर वैद्य हंसते हुए कहा -" राजा साहब! यह तो एक साधारण जड़ी-बूटी है. हम सब सब्जी के रूप में इसे बहुत बार खाया करते हैं. यह कोई दवाई नहीं है. राजा साहब, आपकी समस्या इसलिए थी क्योंकि आप शारीरिक श्रम नहीं करते थे और न ही, आप व्यायाम करते थे. जिसकी वजह से शरीर में थकावट नहीं लगता था और सही ढंग से नींद नहीं आने के कारण आप बीमार पड़ गए थे. इस जड़ी-बूटी बहाना था वास्तव में आपसे डम्बल के जरिए पसीना आने तक व्यायाम करवाते थे. जिसके कारण आपके शरीर में थकावट आती थी. जिसकी वजह से अच्छी नींद आती थी और आपका शरीर स्वस्थ हो गया.

राजा को बात समझ में आ गई, वैद्य उसे समझाना चाहते थे कि अच्छा होना दुनिया के लिए सही हो सकता है.लेकिन अपनी सेहत का ध्यान रखने के लिए ऐसा भी करना पड़ता है,जो शायद हमें लगे कि हम सिर्फ हमारे लिए कर रहे हैं, पर वह भी जरूरी होता है.

बच्चों इस कहानी से जानकारी प्राप्त होता है कि हमें स्वस्थ रहने के लिए अपने जीवन में शारीरिक श्रम, व्यायाम, योग आदि जरूरी है.जितना हम अपने शरीर से काम लेंगे.उतना ही हमारे शरीर के लिए अच्छा और बेहतर होता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

आलसी गधे की कहानी



किसी गांव में एक गरीब व्यापारी अपने गधे के साथ रहा करता था. व्यापारी का घर बाजार से कुछ दूरी पर ही था. वह रोज गधे की पीठ पर सामान की बोरियां रखकर बाजार जाया करता था. व्यापारी बहुत अच्छा और दयालु इंसान था और अपने गधे का अच्छी तरह ध्यान रखता था. गधा भी अपने मालिक से बहुत प्यार करता था, लेकिन गधे की एक समस्या थी कि वह बहुत आलसी था. उसे काम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था. उसे सिर्फ खाना और आराम करना पसंद था.

एक दिन व्यापारी को पता चला कि बाजार में नमक की बहुत मांग है. उस दिन उसने सोचा कि अब वो बाजार में नमक बेचा करेंगे. जैसे ही हाट लगने का दिन आया, व्यापारी ने नमक की चार बोरियां गधे की पीठ पर लादी और उसे बाजार चलने के लिए तैयार किया.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

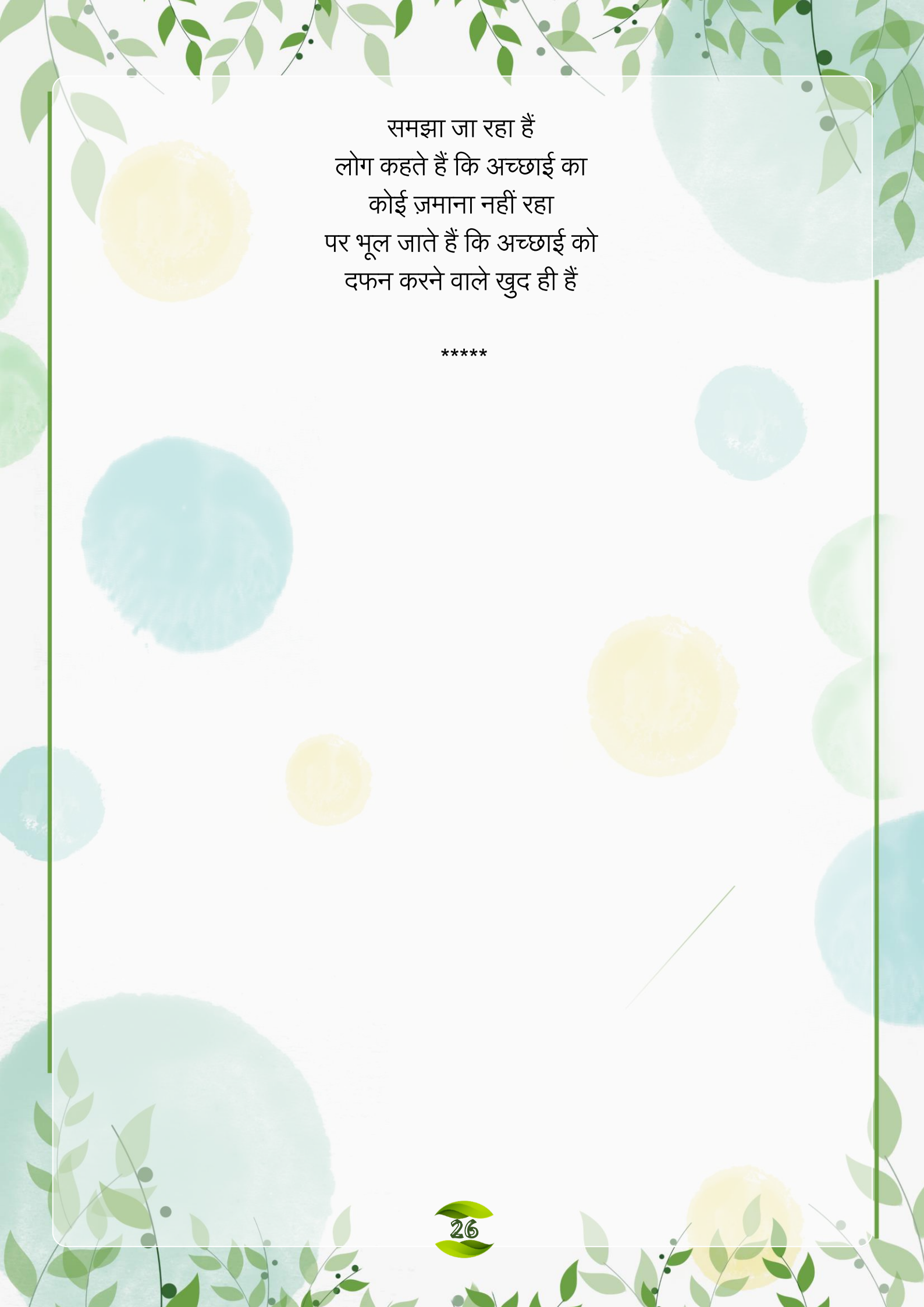
चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

नई कविता

रचनाकार- डोमेश्वरी यादव कक्षा 12 वीं, मगरलोड जिला धमतरी



एक ओर जिंदगी में
डर का अंधकार है
दूसरी ओर आत्मविश्वास
का उजाला है
एक ओर डर हमारे
कदम पीछे खींचे जा रहे हैं
एक और आत्मविश्वास
कदम बढ़ाए जा रहे हैं
अच्छाई को जुर्म के कटघरे में
खड़ा किया जा रहा है
और बुराई को संसार में
प्रसाद की तरह
परोसा जा रहा है
दुनिया कितनी अजीब है
अच्छे लोगों को मूर्ख और
बेईमानों को समझदार



समझा जा रहा हैं
लोग कहते हैं कि अच्छाई का
कोई ज़माना नहीं रहा
पर भूल जाते हैं कि अच्छाई को
दफन करने वाले खुद ही हैं

ये प्यारे मजदूर

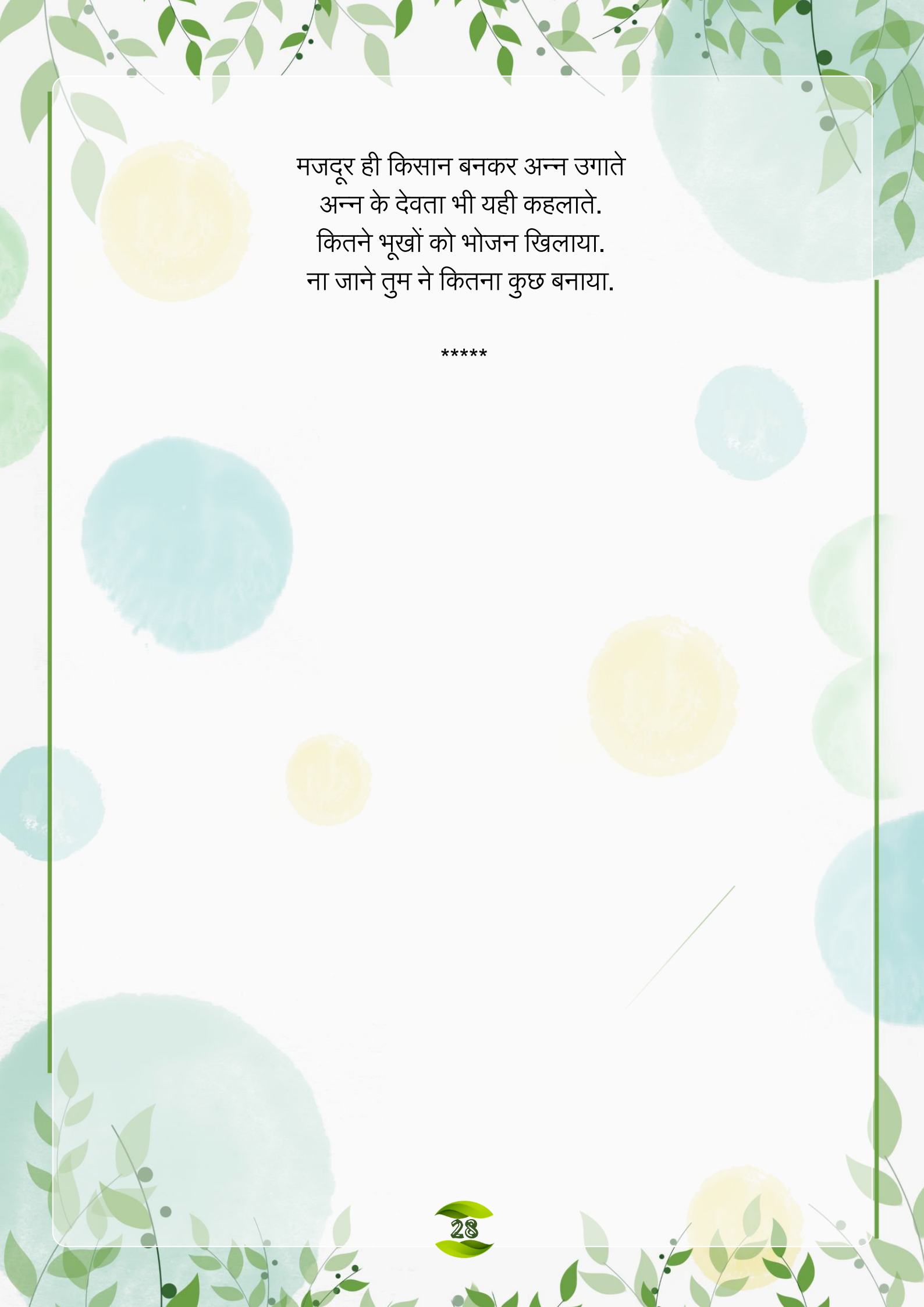
रचनाकार- वंदना सेन कक्षा 11 वीं, शास उच्च माध्य विद्या.करेली बड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



ये प्यारे मजदूर
बेरोजगारी पर होते हैं मजबूर
हर खूबसूरत चीज बनाया
ना जाने तुम ने कितना कुछ बनाया

दुनिया का छोटे से छोटे चीज बनाते.
अविष्कार का सबसे बड़ा योद्धा कहलाते.
हर बिल्डिंग को तुमने ही बनाया.
ना जाने तुम ने कितना कुछ सजाया.

नदियों को रोककर पुल बनाया.
डूबने से सभी को बचाया.
अंधेरी राहों को रोशनी से सजाया.
न जाने तुम ने इतना कुछ बनाया.



मजदूर ही किसान बनकर अन्न उगाते
अन्न के देवता भी यही कहलाते.
कितने भूखों को भोजन खिलाया.
ना जाने तुम ने कितना कुछ बनाया.

परीक्षा का समय

रचनाकार-कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



समय परीक्षा का जब आये,
तनिक नहीं घबराओ बच्चों.
धैर्य रखो मन में नित अपने,
पाठ पठित दुहराओ बच्चों.

व्यर्थ नहीं तुम समय गँवाओ,
आलस से झट नाता तोड़ो.
कठिन परिश्रम का फल मीठा,
विपदाओं का तुम मुख मोड़ो.

ध्यान लगाकर करो पढ़ाई,
साथ सफलता ही आयेगी.
अपने पथ पर आगे बढ़ना,
दुनिया फिर तुमको भायेगी.

कठिन परीक्षा, परख हमारी,
जीवन पथ पर सबकी बारी.

बच्चों में ईश्वर अल्लाह बस्ते हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



घर की चौखट चहकती है बच्चे जब हँसते हैं,
महकता है घर जिसमें बच्चे बसते हैं.
संस्कारवान बच्चे सम्मान सेवा के रास्ते हैं,
बच्चों में ईश्वर-अल्लाह बसते हैं.

हर छल कपट दाँवपेंच से दूर रहते,
अबोध बच्चे खिलखिलाकर हँसते हैं.
किसी के ऊपर ताने तंज़ नहीं कसते हैं,
क्योंकि बच्चों में ईश्वर-अल्लाह बसते हैं.

बच्चे न कोई शिकायत गिले-शिकवे करते हैं
वह बेटी या बेटा हूँ अनजान रहते हैं.
ना किसी की बुराई ना गुणगान करते हैं,
क्योंकि बच्चों में ईश्वर-अल्लाह बसते हैं.

नारी को माँ बनने का सम्मान देते हैं,
पिता के गौरव और अभिमान होते हैं.
मत मारो कोख में वह एक नन्ही-सी जान है,
बच्चे में समाए होते ईश्वर-अल्लाह हैं.

ग़म खुशी नहीं समझते हमेशा हँसते हैं,
दिल जुबां में कुछ नहीं बस हँसते हैं.
स्कूल जाते पीठ पर भारी बस्ते हैं,
तकलीफ नहीं बताते बस हँसते हैं.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी-



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

अनन्या तंबोली कक्षा आठवीं द्वारा भेजी गई कहानी

गर्मी का एक दिन था और सभी जगह तपती धूप थी. इस गर्मी के मौसम में सभी बंदर नदी में स्नान करने के लिए बहुत उत्सुक थे. सबने मिलकर एक प्लान बनाया और एक झुंड बंदर नदी की ओर चल पड़ा. बंदरों की खिलखिलाहट लोगों को हमेशा प्रसन्न कर देती है. कभी वे पेड़ की इस डाल पर घूमते हैं और कभी उस डाल पर. वे कभी फल खाते हैं और कभी छत पर दिखाई देते हैं. इस बार सभी बंदरों का मन नदी में स्नान करने का था. वे नदी के किनारे बैठे पेड़ पर झूलने लगे और वहां से नदी में कूदने की सोच रहे थे कि एक बंदर ने अचानक नदी में कूद दिया. लेकिन वह बंदर पानी में एक पत्थर पर बैठ गया था और अभी भी नदी में कूदने की सोच रहा था. अन्य बंदर पेड़ पर बैठे हुए उस बंदर को देख रहे थे. मछलियाँ बंदर को देखकर नदी में इधर-उधर उछलने लगीं. बंदर भी उन्हें देखकर पत्थर पर अपनी चंचलता दिखाने लगा. उन्हें बहुत मजा आ रहा था. कुछ बंदर पेड़ पर झूल रहे थे और कुछ नदी किनारे बैठकर मजा ले रहे थे. क्योंकि यह गर्मी का समय था, नदी का पानी भी बहुत गरम हो चुका था. मछलियों को तैरते देख बंदर को भी तैरने का मन हो रहा था, लेकिन वे मछलियों की तरह तैर नहीं पा रहे थे. वे पेड़ों पर झूलते हुए ही मछलियों को देख रहे थे. पत्थर पर बैठे बंदर ने भी मछलियों को देखकर आनंदित हो रहा था. पूरे झुंड के बंदर नदी किनारे मछलियों को देखकर मछलियों की तरह तैरने की कोशिश कर रहे थे और पेड़ों पर झूल रहे थे. मछलियों से बात कर रहे थे कि तुम इतनी अच्छी तरह से कैसे तैर लेती हो. कोई राज है क्या बताओ हमें भी कि हम भी तुम्हारे तरह पानी में तैर सकें. मछलियाँ मुस्कुराईं और कहा, "तुम हमारी तरह तैर नहीं सकते. जैसे कि हम

पेड़ों पर झूल नहीं सकते." बंदरों ने इस बात को सुनकर आखिरकार सभी पेड़ों के डालों पर झूलते हुए जंगल की ओर निकल गए.

सुधारानी शर्मा, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

एक सुंदरबन था, सुंदरवन अपने नाम के जैसा ही सुंदर था वहा जंगल में सभी जानवर अच्छे से रहते थे. सुंदरबन में एक नही बहती थी, उसके किनारे हरे भरे आम, जामुन के पेड़ थे पेड़ पर बंदर रहते थे, और नदी में रहने वाले सभी जीव-जन्तु मछली, केकड़ा, बत्तख, कछुआ, मगर के साथ-उनकी दोस्ती भी, सभी बंदर शांत थे अपने काम से काम रखते थे, परन्तु छोटा मंकु शरारती और नटखट था, सबका मजाक उड़ाता था वह नदी में रहने वाली मछलियों को चिढ़ाया करता था, तुम लोग पानी में रहते हो, तुम्हारे पास घर नहीं है मछली लोग मंकु को कुछ नहीं कहते थे, एक दिन अचानक पेड़ में झूलते-झूलते मंकु बहती हुई नदी में गिर गया, उसे तैरना नही आता था, वह डूबने लगा, बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा, उसे देखकर नदी के सभी जीव-जन्तु हँसने लगे, मंकु बोला मुझे बचाओ, तब कछुआ उसे खींचकर बड़े से पत्थर पर पहुँचा दिया, और कहा कि आज के बाद किसी के ऊपर हँसना मत, किसी का मजाक मत उड़ाना , सब अपने तरीके से रहते है मंकु ने वादा किया कि आज के बाद वह कभी किसी का मजाक नहीं उड़ायेगा.

टोमन लाल मालेकर, बालोद द्वारा भेजी गई कहानी

जंगल में बंदर एक जगह से दूसरी जगह उछल कूद कर रहे थे तभी उन्होंने सोचा कि जंगल में पेड़ों की संख्या दिनों दिन कम हो रही है मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पेड़ों की अंधाधुन कटाई कर रहे हैं जिसके कारण हमें आवास भोजन पानी हेतु संघर्ष करना पड़ रहा है इसका निदान हम कैसे करें तभी उनमें से एक युवा बंदर ने कहा हम बिना आवास भोजन के मर जाएंगे इसके लिए केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है क्यों ना हम इनको सिखाएं तभी सभी बंदरों ने एक योजना बनाई और जंगलों से गांव और शहरों की ओर बढ़ने लगे मनुष्य ने अपने रहने के लिए बनाए घरों, बगीचों, फसलो को तहस-नहस करना प्रारंभ किया .बंदरों से मानव जाति अब परेशान होने लगा उन्हें गांव से भगाने के लिए तरह-तरह की योजनाएं बनाने लगे लेकिन उनकी सभी योजनाएं विफल हुई तभी एक बंदर ने मानव से कहा कि तुमने हमारे रहने के स्थानों को उजाड़ दिया हमें भोजन पानी आवास की तलाश में गांव व शहरों की ओर आने के लिए मजबूर होना पड़ा अगर तुम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलो का विनाश नहीं करते तो हम बड़ी हंसी खुशी के साथ जंगलों में निवास करते रहते किंतु आप लोगों के कारण है हमें अपने निवास स्थानों से गांवों और शहरों की ओर आना पड़ा इसलिए हे मानव समय रहते आप सभी सुधर जाएं और जंगलों की अंधाधुंध कटाई को बंद कर पेड़ लगाएं जब तक आप लोगों के द्वारा हमारे उजड़े जंगलों को हरा भरा नहीं कर दिया जाता तब तक हम गांव और शहरों को छोड़कर नहीं जाएंगे तभी से बंदरों का निवास गांव और शहरों में होने लगा . अब स्थिति ऐसी हो गई है कि बाकी जंगली जानवर भी अब गांव और शहरों की ओर आने लगे है. अब भी हम इस

चिर निद्रा से समय रहते नहीं जागे तो इसका दुष्परिणाम भयंकर होने वाला है मानव जाति को बंदरों द्वारा दी गई इस सीख पर अमल करते हुए पुनः उजड़े जंगलों को पेड़ लगाकर संवारने का कार्य करते हुए इन वन्य प्राणियों के निवास स्थानों को सुरक्षित रखने का कार्य करना होगा.

जागो मानव जागो मानव
आओ पेड़ लगाएं
जंगलों को बचाएं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

बहुत पुरानी बात है. एक जंगल के किनारे एक तालाब था. जिसमें बहुत सारी मछलियां एवं मेंढकों का समूह रहते थे. उनमें से रानी मछली बहुत बुद्धिमान थी. उन्हें अपनी बुद्धि पर बहुत ही ज्यादा घमंड था. उनके साथ मेंढकों का राजा अपने समूह के साथ रहता था. वह बहुत ज्यादा बुद्धिमान तो नहीं था. मगर थोड़ा समझदार था. यह सब होने के बाद भी वे सब एक परिवार की भांति एक साथ रहते थे. वह हमेशा एक दूसरे का साथ देते थे. एक दूसरे का ख्याल रखते थे और संकट के समय में सभी मिलकर उसका सामना करते थे.

एक दिन जब मछुआरों का एक झुंड उस तालाब के किनारे से गुजर रहा था. तो मेंढकों ने सुना कि वह कह रहे थे कि इस तालाब में बहुत सारी मछलियां हैं. कल एक बड़ा सा जाल डालकर सारी मछलियों का को पकड़ लिया जाएगा.

यह सुनकर मेंढक ने सभी मछलियों एवं मेंढकों का एक बैठक आयोजित किया गया. जिसमें उन सबको मछुआरों द्वारा कही सारी बातों की जानकारी दिया. मेंढक ने अपना विचार रखा. कब मछुआरा आ जाए और हम उसके जाल में फंस जाए? इससे अच्छा है. इस तालाब को छोड़कर बगल वाले तालाब में चले जाए. मगर मछलियों के मुखिया रानी मछली मेंढक से बोली- "हमारे पास इतनी बुद्धि है कि हम उन मछुआरों से बच सकते हैं. हम सब उनके जाल में फंसने वाले नहीं हैं. रह गई बात उस तालाब में जाने की तो हम अपने पूर्वजों की जगह को छोड़कर नहीं जाएंगे."

मेंढक ने बार-बार समझाया लेकिन रानी मछली ने उसे डरपोक कहकर प्रताड़ित करने लग गई. मेंढक हार थककर अंत में अपने पूरे समूह के साथ उस तालाब को छोड़कर बगल वाले तालाब में चले गए.

मेंढक के समूह को जाते देखकर साथी मछली ने रानी मछली से कहा- "बहन! मेंढक ठीक ही कह रहा है. मछुआरा के आने के पहले हमें भी बचने का उपाय सोच लेना चाहिए." तभी रानी मछली ने साथियों से कहा- "जिसे भी बगल वाले तालाब में जाना है. चले जाओ, लेकिन मैं जाने वाली नहीं हूँ. मैं तुम सबको मछुआरे के जाल से बचा लूंगी. मुझे अपने बुद्धि पर भरोसा है."

अगले दिन मछुआरा आए और एक बड़ा सा जाल डालकर सारी मछलियों को पकड़ लिए. जिसमें रानी मछली भी शामिल थी. जो अपने आप को बहुत बुद्धिमान समझती थी. पानी ना मिलने की वजह से थोड़ी देर बाद सभी मछलियां की मृत्यु हो गई.

जब मछुआरे सारी मछलियों को अपने कंधे पर लाद कर ले जा रहे थे. तब राजा मेंढक उन्हें देखकर काफी दुखी हुआ और आपस में बातचीत करने लगा. यह सब हमारी बात मान लिए होते तो आज यह अपनी जान को नहीं गंवाए होते.

बच्चों इस कहानी से हमने सीखा की कभी भी हमें अपनी बुद्धि पर बहुत ज्यादा घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह घमंड ही हमारे विनाश का कारण बन जाती है.

डिजेन्द्र कुरें, महासमुंद द्वारा भेजी गई कहानी

गर्मी का दिन था. बंदरो की जमावड़ा एक गाँव मुडीडीह के पास तालाब के किनारे पेड़ पर खूब मस्ती कर रहे थे. जो भी रास्ते में राहगीर पार करते सभी को डरवाने में उनको मजा आता था. बंदर का प्रजाति ही ऐसी है जिनको नटखट करने की आदत होती है. पेड़ में फले फल को खाता फिर कुछ को तालाब में फेंकने में मजा आता था. तालाब में बहुत सारी मछलियाँ रहती थी. प्रतिदिन बंदर वहाँ आया करता. रोज फल खाता था. कुछ फल को पानी में फेकता उसे मछलियाँ खाती. ऐसे करते करते बंदर और मछली में दोस्ती हो गई. जब भी बंदर पेड़ में आते मछलियाँ नाचने लगती थी. क्योंकि उनको स्वादिष्ट भोजन जो मिलता. बंदर भी उछल कूद करते और अपना खुशी जाहिर करते.

बंदर के झुंड एक जगह एकत्रित होते तो खूब मस्ती करना उनका फितरत था. एक दिन मछली ने विचार किया क्यों न फल इतना स्वादिष्ट है तो फल देने वाला कितना स्वादिष्ट होगा. उसने उनको खाने की तरकीब सोची. फिर एक दिन फल खाने के लिए पुनः बंदर की झुंड पहुँचा तो मछलियाँ बोलने लगी. बंदर मित्र बंदर मित्र इतना बढ़िया स्वादिष्ट फल खिलाते हो इसके लिए दिल से धन्यवाद देते हैं. परन्तु एक शर्त है कि आप मना नहीं करेंगे. हमारा दिली इच्छा है कि आपको हाथ मिलाना चाह रहे हैं. हाथ मिलाने का सौभाग्य हमको कब मिलेगा. जरूर मछली मित्र मैं अभी आ जाता हूँ. दो तीन बंदर उछल कूद कर पानी के पास गए. कुछ पत्थर में खड़े हो गए. कुछ किनारे में गए. एक बंदर जैसे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े उसे दबोच कर पानी के अंदर ले गया और शार्क मछली एवं नीली व्हेल मछली उसको कच्चा चबा गया. बंदर के बाकी मित्र देख रहे हैं कि बंदर कब बाहर आएगा. काफी समय के बाद भी वापस नहीं आया तो समझ गया की मछली के शिकार में फस गया है. उस दिन से मछली और बंदर की दोस्ती हट गई. बाद में मछली को स्वादिष्ट भोजन में फल नहीं मिला.

इस कहानी से हमें सीख लेनी चाहिए कि मित्र से दगाबाज करने से खुद की हानि होती है. अतः मित्र से हमेशा दोस्ती रखे ताकि प्रेम स्नेह सदा दिन तक बरकरार रह सके.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

अच्छाई का मुखौटा

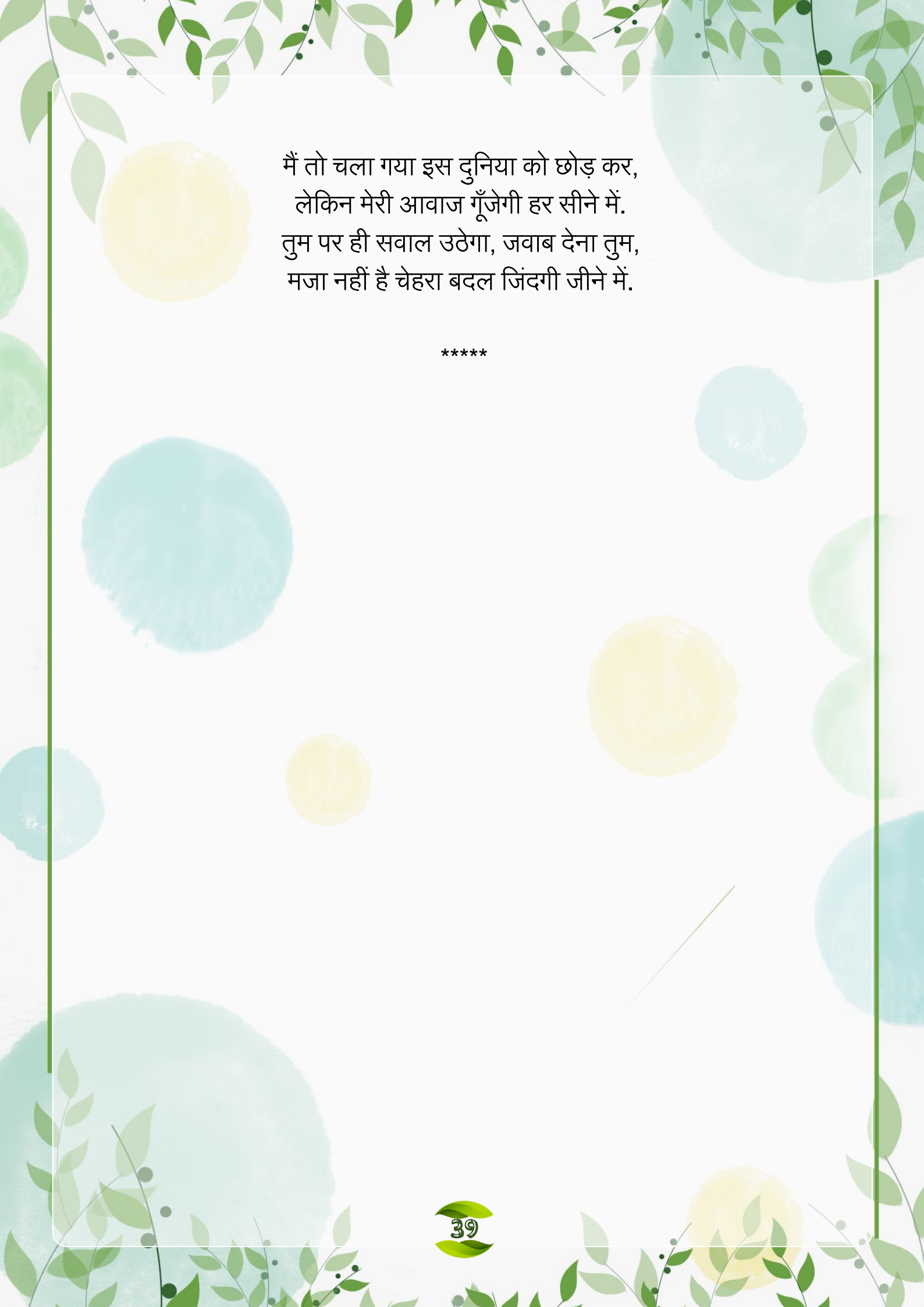
रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



अच्छाई का मुखौटा पहने बुराई छिपी है,
दूसरे के कंधे में बंदूक रख चला रही गोली.
खून से लथपथ अच्छाई का अधमरा शरीर,
पीड़ा से चीख कर मुँह से निकली बोली.

मैंने क्या बिगाड़ा था किसी का जो मारा?
समाज को जगाने हेतु सत्य बात कही थी.
उन्नति होती, जन कर्म करके ऊपर उठते,
समुदाय को भड़काने की बात नहीं थी.

रात की तीव्र सिसकियाँ दिन में दब जाती हैं,
हाथों में कलम लेकर लिखते सभी तकदीर.
परिस्थिति में परिवर्तन की महा क्रांति होती,
गरीबी की बेड़ियाँ तोड़कर बन जाते अमीर.



मैं तो चला गया इस दुनिया को छोड़ कर,
लेकिन मेरी आवाज गूँजेगी हर सीने में.
तुम पर ही सवाल उठेगा, जवाब देना तुम,
मजा नहीं है चेहरा बदल जिंदगी जीने में.

दोस्त हों तो ऐसे

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा



धानपुर में प्राइमरी स्कूल तो था, पर हायर सेकेंडरी स्कूल नहीं था. इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए धानपुर के बच्चों को बगल वाले गाँव जाना पड़ता था. राजू भी अपने दोस्तों के साथ साइकिल से स्कूल जाता था.

परीक्षा समीप आ रही थी, राजू और उसके दोस्त मिल कर परीक्षा की तैयारी कर रहे थे. एक दिन स्कूल की छुट्टी होने वाली थी, तभी पहले आंधी आई, फिर तेज पानी बरसने लगा. अभी तो तेज गरमी की शुरुआत ही हुई थी कि इस तरह तेज बरसात होने से रास्ते में चारों ओर पानी भर गया. राजू अपने दोस्तों के साथ बरसात बंद होने की प्रतीक्षा करता रहा. पर बरसात बंद होने का नाम ही नहीं ले रही थी.

गरमी की शुरुआत ही हुई थी, इसलिए इस तरह बरसात होने की उम्मीद नहीं थी, कोई रेनकोट लेकर नहीं आया था. जब लगा कि बरसात बंद नहीं होगी तो राजू अपने दोस्तों के साथ साइकिल पर घर के लिए चल पड़ा. रास्ते भर पानी भरा था, जिससे रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था. सभी को साइकिल चलाने में परेशानी हो रही थी. स्कूलबैग न भीगे इसलिए उसे पाँलोथीन से कवर कर लिया था. किसी तरह भीगते हुए सभी घर पहुँचे.

घर पहुँच कर पहले तो राजू फ्रेश हुआ. उसके बाद स्कूलबैग पलट कर देखा कि कापी-किताबें भीग तो नहीं गईं? उसकी कापी-किताबें तो बच गई थीं, पर जनरल इस तरह भीग गया था की उसमें कुछ

पढ़ने में ही नहीं आ रहा था. राजू परेशान हो गया कि अब वह क्या करे. बरसात बंद हुई तो सभी मित्र पढ़ने के लिए इकट्ठा हुए.

पता चला कि राजू का जनरल इस तरह भीग गया था कि उसमें पेन से लिखे अक्षर पढ़ने में ही नहीं आ रहे थे. यह देख कर राजू रुआंसा हो गया. वह साइंस का विद्यार्थी था. इसलिए प्रैक्टिकल परीक्षा में जनरल बहुत जरूरी था. उसने हेयर ड्रायर की मदद से जनरल को सुखाने की कोशिश की थी, पर उसकी लिखावट बहुत खराब हो गई थी, इसलिए अब उसमें कुछ नहीं हो सकता था.

दूसरी ओर बरसात में भीगने की वजह से राजू बीमार पड़ गया. तब उसके दोस्तों ने कहा कि वह अपनी तबीयत का खयाल रखे, रही बात जनरल की तो वे उसे लिखवा देंगे.

अगले दिन राजू के दोस्त नया जनरल खरीद लाए. मिहिर की लिखने की स्पीड अच्छी थी. देर रात तक जाग कर उसने राजू का जनरल लिख दिया. श्याम ने सारी ड्राइंग बना दी. इस तरह मित्रों की मदद से राजू का जनरल तैयार हो गया, जिससे उसके नंबर कटने से बच गए.

शहीदों की कुर्बानी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



देश की रक्षा करते तुम,
गहरी नींद में सो गए.
पूरा भारत तुमको याद करे,
तुम शहीद हो गए.

शहीदों की कुर्बानी से
आँखें सबकी भर आईं.
वो कल भी थे आज भी हैं
अस्तित्व में चमक छाई.

नमन उनकी शहादत को,
शरीर देख आँखें भर आईं.
जज्बा माँ का जब बोली,
भारत की रक्षा में सौ बेटे लुटाई.

भारत माँ के लाल तूने,
फ़र्ज अपना अदा किया.
जान हथेली पर लेकर,
एक झटके से दुश्मन को ढेर किया.

देश की रक्षा में तुम्हारा बलिदान,
देश कभी ना भूल पाएगा.
हर देशवासी याद रखेगा तुमको,
वंदे मातरम गाएगा.

अब हर परिवार से,
एक बच्चा सेना में जाएगा.
देश की रक्षा में,
जी-जान से लड़ जाएगा.

देश सुरक्षित है तुमसे,
अब सबको समझ आएगा.
साथियों में उर्जा भर गए,
दुश्मन भारत से थर्राएगा.

तुम जैसे बहादुरों का नाम सुन,
दुश्मन सीमा से भाग जाएगा.
हर सीमा पर हमेशा,
भारत का झंडा लहराएगा.

पृथ्वी दिवस विशेष, 22 अप्रैल

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



पृथ्वी की देखभाल करना अब कोई विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता है। पृथ्वी के अलावा कोई अन्य ग्रह नहीं है जहाँ जीवन संभव हो। हमने विकास के ढाँचे के निर्माण के लिए असंख्य पेड़ काटकर और अपने भोजन के लिए जानवरों को मार कर प्रकृति का शोषण किया है। हमने पृथ्वी के गर्भ से खनिज, क्रिस्टल और रत्न निकाले हैं। पृथ्वी की जो भी प्राकृतिक सम्पदा है, हमने ले ली और उसका उपयोग कर लिया। अब प्रकृति के साथ किए गए खिलवाड़ के गंभीर परिणाम भुगत रहे हैं। हमें यह महसूस करना चाहिए कि पृथ्वी के संसाधन असीमित नहीं हैं। वे तेजी से घट रहे हैं, और यह उस ग्रह पर हमारे अस्तित्व के लिए खतरा है जिसे हम घर कहते हैं। इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण है कि हमें धरती माता की देखभाल करनी चाहिए और उसे बचाना चाहिए।

पृथ्वी खतरनाक स्थिति में पहुँच गई है। यह हमारे लिए कार्रवाई करने का समय है। मानव गतिविधियों ने पृथ्वी के वातावरण और जलवायु परिस्थितियों को प्रभावित किया है। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा है कि ऋतुएँ बदल गई हैं। अब मानसून में देरी हो रही है। गर्मियाँ बहुत तेज हो रही हैं और ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और जलीय जीवन विलुप्त होने के कगार पर है। प्रदूषण बढ़ रहा है, हवा की गुणवत्ता खराब होती जा रही है। पानी प्रदूषित हो रहा है और शोर का स्तर बढ़ रहा है जिससे अधिकांश लोग बीमार हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीनहाउस प्रभाव, ये सब मानवीय गतिविधियों के

परिणाम हैं, जो अब मानव जीवन के लिए ही खतरा पैदा कर रहे हैं। इसलिए, अगर हम अभी कार्रवाई नहीं करने जा रहे हैं, तो बहुत देर हो चुकी होगी और पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

पृथ्वी को बचाने के लिए हम सभी को मिलकर बदलाव लाना होगा। एक व्यक्ति ज्यादा नहीं कर सकता, लेकिन हम सब मिलकर चमत्कार कर सकते हैं। हमें अपनी दिनचर्या में छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना है, जैसे जरूरत न होने पर लाइट बंद करना, नल बंद करना और पानी का सही इस्तेमाल करना। घर में प्लास्टिक और गैर-बायोडिग्रेडेबल सामग्री के इस्तेमाल से बचना। हमें सोलर हीटर, सौर पैनल जैसे ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों पर ध्यान देना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर ही निजी वाहन या कार निकालें और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना शुरू करें।

हमें पृथ्वी पर खतरनाक स्थिति के बारे में अन्य लोगों को शिक्षित करने का प्रयास करना चाहिए और उनका मार्गदर्शन करना चाहिए कि वे पृथ्वी को बचाने में कैसे योगदान दे सकते हैं। जागरूकता बढ़ाने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर विभिन्न अभियान या सामूहिक गतिविधियाँ की जा सकती हैं। साथ ही हमें अपने आस-पड़ोस में अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। हमें पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को अपनाना और बढ़ावा देना चाहिए। हमें अपने बच्चों को अपने ग्रह का मूल्य सिखाना चाहिए, ताकि वे भी स्थायी जीवन के अनुकूल हों और हमारे ग्रह का शोषण न करें। याद रखें, हर छोटे कदम से फर्क पड़ता है!

ऐसे विभिन्न कारण हैं जो पर्यावरणीय गिरावट का कारण बनते हैं। जनसंख्या और गरीबी अधिक समस्याएँ पैदा करने के शीर्ष पर हैं। अधिक लोगों का अर्थ है अत्यधिक खपत और यदि जरूरतें पूरी नहीं होती हैं तो इसका परिणाम गरीबी और कुपोषण होता है। एक अन्य कारक जो पर्यावरण पर बड़े पैमाने पर नकारात्मक प्रभाव पैदा करता है, वह सभी प्रकार का प्रदूषण है। कारखानों की चिमनियों या वाहनों से निकलने वाला धुआँ, सी.एफ.सी. का दैनिक उपयोग, जीवाश्म ईंधन का जलना, जंगल की आग आदि वायु प्रदूषण का कारण बनते हैं।

इसके अलावा, जल निकायों में प्रदूषकों का निर्वहन, जानवरों को पानी में नहलाना, जल निकायों के पास शौच करना और सीवेज को छोड़ना जल प्रदूषण का कारण बन रहा है। फिर, अत्यधिक खेती, भूमि की जुताई, कीटनाशकों और रसायनों के प्रयोग से मृदा प्रदूषण होता है। अंत में, जुलूसों के दौरान तेज संगीत बजाना, कार के हॉर्न और कारखानों में मशीनों का शोर ध्वनि प्रदूषण पैदा करता है। समस्याओं के बारे में जागरूकता मौजूद है, लेकिन उन्हें खत्म करने के प्रयास नगण्य हैं।

जीविका सुनिश्चित करने के लिए पृथ्वी की स्थिरता को बनाए रखने के लिए यह एक जरूरी आह्वान है। हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए स्थायी दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। सिर्फ इंसान ही नहीं बल्कि जानवर भी पीड़ित हैं और काफी नुकसान में हैं। पूरी खाद्य श्रृंखला बाधित हो जाती है, जिससे असंतुलन पैदा हो जाता है। पृथ्वी को बचाने के लिए सरकार को राष्ट्रीय पर्यावरण

नीति बनानी चाहिए. प्रत्येक व्यक्ति को स्वयंसेवा करनी चाहिए और पर्यावरणीय गिरावट को कम करने का प्रयास करना चाहिए. पृथ्वी की रक्षा एक दिवास्वप्न नहीं बल्कि एक वास्तविकता होनी चाहिए.

मनुष्य के रूप में, यह हमारा मूल कर्तव्य है कि हम उस ग्रह की देखभाल करें जिसे हम अपना घर कहते हैं. पृथ्वी हमें वे सभी बुनियादी चीजें उपलब्ध कराती है जो हमारे जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं. हम लालची इंसानों ने इसके संसाधनों का इस हद तक दोहन किया है कि कुछ लोगों के लिए सबसे जरूरी चीजें भी उपलब्ध नहीं हो पाती हैं. इस ग्रह के जिम्मेदार निवासी होने के नाते, हमें अपने ग्रह को हुए नुकसान को दूर करने के लिए कुछ उपाय करने चाहिए. इसने बहुत शोषण देखा है. हम अपने उपयोग के लिए पेड़ों को अंधाधुंध काट रहे हैं. हर पेड़ के खो जाने से पृथ्वी अपना एक हिस्सा खो देती है. हमें अपने सीमित जीवनकाल में अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, ताकि पुराने हरे-भरे जंगलों को फिर से जीवित किया जा सके. अगर हम सभी हर साल एक पौधा लगा सकें तो एक साल में पृथ्वी लगभग 7 अरब पेड़ों से भर जाएगी.

मैं मजदूर हूँ

रचनाकार- कामिनी जोशी, कबीरधाम



सपनों के आसमान में जीता हूँ,
उम्मीदों के आँगन को सींचता हूँ.
दो वक्त की रोटी खाने के लिये,
अपने स्वभिमान को नहीं बेचता हूँ.

तन को ढँकने के लिये,
फटा-पुराना लिबास है.
कंधों पर जिम्मेदारी है,
जिसका मुझे अहसास है.

खुला आकाश है छत मेरी,
बिछौना मेरा धरती है.
घास-फूस की झोपड़ी में
सिमटी अपनी हस्ती है.

गुजर रहा जीवन अभावों में,
जो दिख रहा प्रत्यक्ष है.
आत्मसंतोष ही मेरे,
जीवन का लक्ष्य है.

गरीबी और लाचारी से जूझ,
हँसना भूल चुका हूँ.
अनगिनत तनावों से लदा हुआ,
आँसू पीकर मजबूत बना हूँ.

तुम मेरा मजबूती में साथ दो
और कुछ न सही, अपना विश्वास दो.

युवाओं में एक मंत्र की अति ज़रूरत है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



साझा करना और देखभाल करना
भारतीय दर्शन के मूल तत्व हैं.
भारतीय संस्कृति में इनका महत्व है,
युवाओं में इस मंत्र की अति ज़रूरत है.

साझा करने से समस्या का हल निकलता है,
मन का बोझ हल्का होता है.
साझा करने की प्रवृत्ति में सरलता है,
खुदकुशी के बचाव में मिलती सफलता है.

खुद परिवार और बुज़ुर्गों की,
देखभाल करना भी अत्यंत ज़रूरी है.
डिजिटल उपकरणों में दिन-भर खोए रहना,
रिश्तों में होती असहनीय दूरी है.

साझा करना देखभाल करना,
दोनों बहुत जीवन में ज़रूरी है.
दोनों से रचनात्मकता और मौलिक सोच,
भारतीय संस्कृति कूट-कूट कर भरी है.

नया भारत

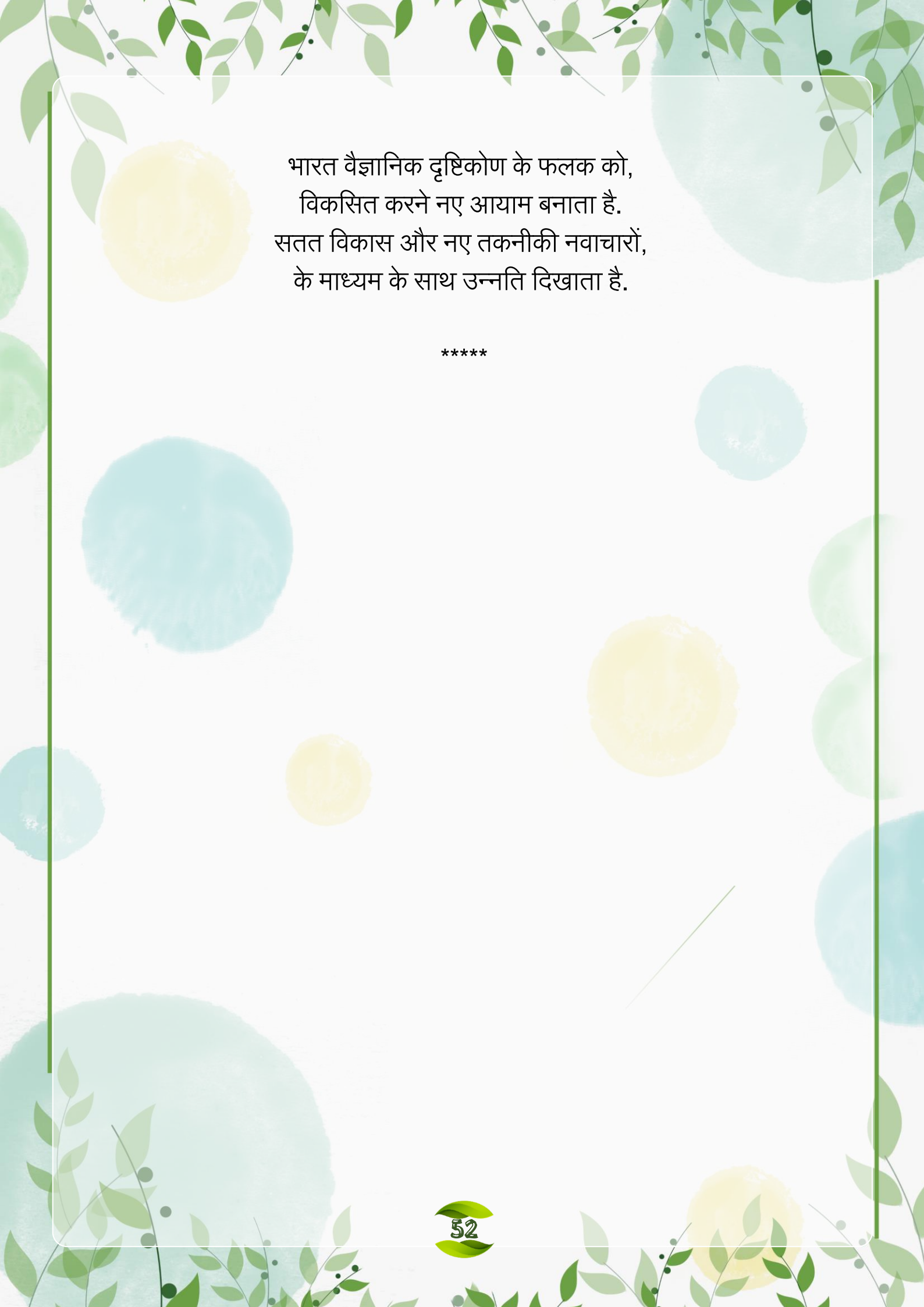
रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत नवाचारों का उपयोग करके,
ऐसी तकनीकी विकसित करता है.
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए,
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है.

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है,
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर.
नमामि-गंगे का अभियान चलाता है,
नवाचार हर आदमी के जीवन में सहजता लाता है.

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान,
आम आदमी के जीवन में सहजता लाता है.
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया,
जैसी थीम जनहित में लाता है.



भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को,
विकसित करने नए आयाम बनाता है.
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों,
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है.

चनाबूट के मजा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



खेत-खार मा हरियर-हरियर, सुघर चना लहराथे.
रद्धा रेंगत मनखे मन के, लार घलो चुचवाथे.

पोठ-पोठ अउ गुरतुर-गुरतुर, चना बूट के दाना.
नान-नान अउ कौंवर-कौंवर, होथे ओखर पाना.

अबड़ विटामिन रहिथे येमा, आलस दुरिहा जाथे.
चना-बूट सँग भाजी-पाला, काम दुनों हर आथे.

जूरी बाँध के बेचे ओला, पइसा खूब कमाथे.
लइका लोगन जम्मो संगी, कूद-कूद के खाथे.

कोनो खाथे कच्चा दाना, कोनो भूँजे होरा.
सुखो-सुखो के घर मा लाथे, भरथे बोरा बोरा.

रहे गोरसी आगी-अँगरा, दिखे कोयला लाली.
भूँज-भूँज के राखे रहित्थे, इहाँ सबो घरवाली.

हमर राज मा मिलथे सुग्घर, चना बूट के होरा.
आन राज के मनखे आके, लेगय बोरा -बोरा.

मौसम-मौसम फसल उगाथे, इही हरे चिन्हारी.
हँसी-खुशी ले करे किसानी, मिल के सब नर-नारी.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम
विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर



1. छोटी सी मैं बच्ची हूँ,
राजा को भी रुला देती,
जैसे ही कोई खाए मुझे,
आँख से आँसू बहा देती.
2. लाल रंग का हूँ मकान,
बाहर से दिखता हूँ हरा,
लाल लाल मेरी दीवारें,
और अंदर काला शैतान.
3. रंग भी मैं कहलाता हूँ,
फल भी मैं कहलाता,

गेंद जैसा मेरा आकार,
खट्टा मीठा मैं लगता.

4. फलों का हूँ मैं राजा,
पीला है मेरा रंग,
गर्मियों में आता हूँ मैं,
बच्चे करते मुझे पसंद.

5. लाल दिखूँ मैं बाहर से,
अंदर लाल छोटे दाने,
इन रसदार दानों के बीच,
होते हैं सफेद जाले.

उत्तर: 1. मिर्ची, 2. तरबूज, 3. संतरा, 4. आम, 5. अनार

मेरे प्यारे दिनकर

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार, उत्तरप्रदेश



रोज सवेरे खिड़की से,
धूप सुनहरी आती है.
आकर मेरे हर कमरे में,
उजियारा कर जाती है.

रवि प्रकाश तुम ऐसे ही,
हरदम आते रहना.
मन मंदिर में फैले तम को,
हरदम हरते रहना.

मेरे पथ को दिशा दिखाना,
मेरे प्यारे दिनकर.
रात दिन मैं याद करूँगा,
तुमको माना गुरुवर.

हम, हमारी सोच का परिणाम हैं

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, हरियाणा



हर कोई एक विचार या विचारों के साथ आगे बढ़ रहा है. विचारों के परिणाम के बारे में सोचे बिना कोई भी उस पर आगे बढ़ना नहीं चाहता. लोग दो तरह के विचारों के साथ जीते हैं एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक. यह लोगों पर निर्भर करता है कि वे अपने लिए क्या चुनते हैं क्योंकि विचार ही वह स्रोत है जो मनुष्य का निर्माण करता है. क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि, हम जो सोचते हैं हम वैसे ही बन जाते हैं? क्यों हर कोई एक सफल व्यक्ति बनने में इतना व्यस्त है? क्योंकि वे जानते हैं कि शांति से आरामदायक जीवन जीने के लिए सफल व्यक्ति बनना होगा और वह अपनी सोच का परिणाम होगा. हर कोई अपने जीवन में जो चाहे हासिल कर सकता है लेकिन कुछ ही लोग अपने सपनों का पीछा कर पाते हैं, क्योंकि हर कोई अपने विचारों के कारण एक अलग रास्ता चुनता है. परिवेश आपके अनुसार चलता है न कि आप परिवेश के अनुसार चलते हैं यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है कि आप कैसा परिवेश चाहते हैं या तो वह बुरा है या अच्छा, सही है या गलत और उसका विकास आपके विचारों पर निर्भर करता है कि आप जो भी बनेंगे उसका परिणाम होगा आपके अपने विचारों से.

औपनिवेशिक शासन के समय जब हर कोई बिना किसी नए विचार के अपने जीवन और नींद में व्यस्त था, उस समय हमारे स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश सरकार से आजादी पाने के लिए अपनी रणनीति बनाने में व्यस्त थे. सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आज़ाद, सरदार भगतसिंह जैसे सेनानी नई सोच के साथ आते हैं क्योंकि वे एक स्वतंत्र, निडर या मजबूत भारत बनाना चाहते हैं. वे अंतिम साँस तक संघर्ष करते रहे कभी सफलता मिली तो कभी असफलता लेकिन वे अपने विचारों पर अडिग रहे. यह बात ब्रिटिश सरकार को पसंद नहीं थी क्योंकि वह इस बात से अवगत थी कि एक बार जब भारत को

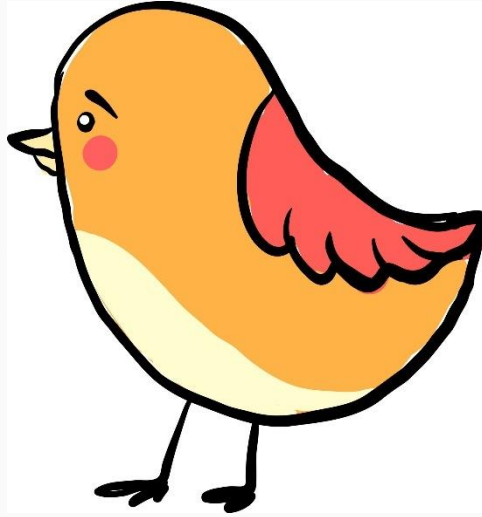
आजादी मिल जाएगी तो ब्रिटिश सरकार शासन करने की शक्ति खो देगी. जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है स्वतंत्रता का विचार पूरे भारत में फैल जाता है और परिवेश स्वतंत्रता या स्वतंत्रता की आवाज से भर जाता है. उन तीन लड़ाकों के बाद कितने लोग महात्मा गांधी और अन्य नेताओं की तरह ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लड़ने आते हैं. और उसका परिणाम यह हुआ कि हमें ब्रिटिश शासन से आजादी मिल जाती है, यह सब इसलिए हो जाता है क्योंकि लड़ाके जो सोचते हैं वही बन जाते हैं.

हम दूसरा उदाहरण ले सकते हैं जिसके माध्यम से हम कह सकते हैं कि "हम जो कुछ भी हैं वह हमारे विचारों का परिणाम है". अभी हम सभी एक लोकतांत्रिक देश में रहते हैं जहां हमारे पास संविधान है और कुछ मौलिक अधिकार हैं लेकिन इसके बावजूद कुछ क्षेत्रों में लोग अपनी मानसिकता के कारण संविधान के नियमों का पालन नहीं करते हैं, ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में लोग सोचते हैं कि महिलाएँ केवल घर या बच्चों की देखभाल करने के लिए होती हैं, घर के बाहर उनकी कोई भूमिका नहीं होती. उन्हें समाज में बोलने का कोई अधिकार नहीं है, ये सभी संकीर्ण दिमाग वाली चीजें विकसित होती हैं. क्योंकि लोग जो सोचते हैं वे उसे लागू करते हैं और जो नहीं करना चाहिए वह बन जाते हैं. एक विचार आपके जीवन को बदल सकता है, हर किसी को अपने जीवन में एक निर्णय लेना होता है जो उनके पूरे जीवन को बदल सकता है इसलिए विचार को अपने जीवन में लागू करने से पहले परिस्थितियों या उस विशेष विचार के परिणाम का विश्लेषण करें क्योंकि वह निर्णय आपको बनाता है कि क्या आपको लगता है. हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है. यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है.

यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती. जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी हल कर सकने का विश्वास ही हमारी सकारात्मक सोच है. मुश्किल से मुश्किल दौर में भी हिम्मत बनाए रखना हमारे सकारात्मक सोच की शक्ति है. किसी भी मुश्किल कार्य को करने की हिम्मत भी हमें हमारे सकारात्मक सोच से ही मिलती है. हम किसी काम को जितने ज्यादा सकारात्मकता से करेंगे काम उतना ही सटीक और सफल होगा. जीवन की विषम परिस्थितियों में सकारात्मक सोच न होने के कारण बहुत से व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं और अपना बहुत बड़ा नुकसान कर बैठते हैं. आज तक के सभी सफल व्यक्तियों के सफलता का राज कहीं न कहीं उनकी सकारात्मक सोच है. सकारात्मकता केवल हमारी सफलता की ही नहीं बल्कि हमारे अच्छे स्वास्थ्य की कुँजी भी है.

गलती का एहसास

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



"ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो चुका है. मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि हम यहाँ से दूसरे वन को चले जाते हैं, लेकिन तुम मेरी एक नहीं सुनती; अपनी ही मनमानी करती हो." थोड़ा चिंतित और उदास टीटू चिड़िया अपनी धर्मपत्नी विनी को समझा रहा था.

गर्भवती विनी टीटू की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी. चूँकि वे दोनों जानते थे कि यहाँ गर्मी में पानी की बहुत परेशानी होती है और घोंसला भी टूट रहा है. वैसे भी विनी को अकेला रहना पसंद था. किसी से ज्यादा मेल-मिलाप नहीं रखती थी वह. स्वभाव से थोड़ी घमंडी भी थी. टीटू उसको बहुत समझाता था; फिर भी विनी उसकी बातों को यूँ ही उड़ा देती और अपने में ही खुश रहती.

कुछ दिन और बीते. जंगल में पानी की कमी होने लगी. सभी चिड़ियाँ दाना-पानी की तलाश में जंगल से बाहर निकल गए. लेकिन टीटू को विनी ने मना कर दिया. यहीं रहने की जिद पर उतर आयी. उसे अकेलापन पसंद था. विनी की जिद पर टीटू ने कुछ कहना चाहा तो विनी टीटू को शांत कराते हुए बोली- " चुप... ! मैं बोल रही हूँ... मैं बोल रही हूँ... ना ! " तभी पास बैठी मिन्नी चिड़िया ने विनी से कहा कि तुम ऐसा क्यों सोचती हो विनी. तुम गर्भवती हो और तुम्हारा घोंसला भी टूटने वाला है. ऐसे में तुम अंडे कहाँ दोगी. तुम्हारी देखभाल कौन करेगा. टीटू भोजन की व्यवस्था करेगा या तुम्हारा ध्यान रखेगा. तुम्हें यह सब समझना चाहिए. अरे भाई....! हम सब के बीच रहकर तो तुम खुश रहोगी.

मिन्नी की बातें सुन विनी तमतमा गयी. बोली- "मुझे किसी की जरूरत नहीं है. तुम जा सकती हो मिन्नी दीदी." मिन्नी वहाँ से चली गयी. धीरे-धीरे सभी चिड़ियाँ वन छोड़कर चली गयीं. वन सूना हो गया. फिर विनी के मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे. तभी विनी टीटू से बोली- " टीटू ! चलो ना

हम आम वाले बगीचे में चलते हैं. मुझे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा है. टीटू को गुस्सा आया और चिढ़ाते हुए बोला- " नहीं.... नहीं... विनी. अब हम कहीं नहीं जायेंगे. तुम्हें तो अकेला रहना पसंद है ना ? तुम यहाँ से जाना भी नहीं चाहती. किसी से बात करना भी नहीं चाहती हो. रहो न अब, क्या हुआ ?" फिर विनी रोने लगी.

कुछ समय पश्चात दोनों आम के बगीचे की ओर चल पड़े. टीटू बहुत परेशान था बेचारा. सोच रहा था कि अब कहाँ घोंसला बनाया जाय. सभी चिड़ियों ने घोंसले बना लिये होंगे. टीटू को अच्छी तरह पता था कि विनी के अंडे देने का समय भी लगभग आ ही चुका है.

बगीचे में पहुँचते ही विनी थकान महसूस करने लगी. गिड़गिड़ाने लगी- "अब और मैं नहीं उड़ सकती टीटू. मुझे बचा लो." बोलते-हाँफते हुए विनी बेहोश हो गयी. टीटू घबरा गया. सभी चिड़िया अपने-अपने घोंसले से झाँक-झाँक कर देखने लगीं. विनी के रूखे व्यवहार के कारण किसी की हिम्मत नहीं हुई उससे बात करने की. एक डाल पर वृद्ध चिड़िया दम्पति रहते थे. विनी की हालत देख कर उन्हें टीटू-विनी पर दया आ गयी. उन दोनों को उन्होंने अपने घर में रहने के लिए जगह दे दी.

थोड़ी देर बाद विनी को होश आया.देखा कि वह एक बूढ़े दंपति के घर में है. साथ में सभी चिड़ियाँ भी आस-पास थी. विनी को पहली बार अपनापन का एहसास होने लगा. वृद्ध दंपति विनी को समझाते हुए बोले कि देखो विनी ! हमें सब के साथ मिलजुल कर रहना चाहिए. एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए. तुमने कभी किसी से अच्छा व्यवहार नहीं किया, फिर भी आज सभी तुम्हें मदद करने आ गए. आज इन चिड़ियों ने तुम्हें नया जीवनदान दिया है. कभी भी इसका एहसान नहीं भूलना.

विनी की आँखों से आँसूओं की झड़ी लग गयी. विनी ने सबसे माफी माँगी. सबने उसे माफ कर दिया. तभी विनी अपने पास बैठी मिन्नी से कहने लगी- " मुझे माफ करना मिन्नी दीदी. मुझसे गलती हो गयी. मैंने तुम्हें गुस्से में बहुत कुछ बोल दिया. "

मिन्नी सुबकती विनी को सहलाते हुए मुस्कुरा रही थी.

संगति का असर

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम
विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर



मानव पर पड़ता है संगति का असर,
मनुष्य पर होता है इसका बड़ा असर.

सज्जनों की संगति कर कहलाते सज्जन,
हित की बातें करते वो और रहते प्रसन्न.
असहाय-जरूरतमंदों की करते वो मदद,
जिनका आशीष ही दे उन्हें बरकत.
परोपकारी व्यक्ति बढ़ता है जब आगे,
रोक सके न तब उसे मुश्किलों के धागे.

दुर्जन कभी ना चढ़ पाते उन्नति की सीढ़ी,
उसके दुर्यवहार को कोसे उसकी पीढ़ी.
कटता जीवन उसका दर-दर ठोकर खाते,
कोई न उसे आश्रय दे सब उसे दुत्कारते.

इंसान को बिगाड़ने में न छोड़ा कोई कसर,
मानव पर सदा पड़ता है संगति का असर।

पर उन पर होता नहीं संगति का असर,
होते लक्ष्य पर केंद्रित न करे कोई अग्रसर.
चंदन की डाल पर लिपटे रहते हैं भुजंग,
फिर भी चंदन पर न आये विष का प्रसंग.
कर्दम पर खिले हुए होते हैं वो नलिन,
दुष्टों के बीच भी न हो उनका मन मलिन.

संगति का जिस पर पड़े ना कोई प्रभाव,
ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति का है दुनिया में अभाव.
इस प्रकार के व्यक्ति करते बड़ी उन्नति,
दुनिया करे नमन देखकर उनकी प्रगति.

कृषि रोबोट: किसानों का किफायती दोस्त

रचनाकार-प्रियंका सौरभ, हरियाणा



भारत में कृषि उद्योग में पिछले कुछ दशकों में भारी बदलाव आया है। पारंपरिक खेती के तरीकों से लेकर स्मार्ट खेती तक, हमने एक लंबा सफर तय किया है। प्रौद्योगिकी ने अंततः ग्रामीण कृषि की चुनौतियों पर काबू पा लिया है और उत्पादकता बढ़ाने के लिए लगातार उन्नत समाधान लेकर आ रही है। अंतिम उद्देश्य किसानों को बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए उच्च उपज वाली फसलों का उत्पादन करने में मदद करना है। इस सतत विकास को प्राप्त करने के लिए, कृत्रिम बुद्धि के साथ संयुक्त तकनीकी विकास ने ड्रोन, नमी सेंसर इत्यादि के आकार में नए-नए गैजेट पेश करने में मदद की है। ऐसा ही एक उदाहरण कृषि रोबोट है। रोबोटिक्स प्रौद्योगिकी की वह शाखा है जो रोबोट के डिजाइन, निर्माण, संचालन, संरचनात्मक निक्षेपण, निर्माण और अनुप्रयोग से संबंधित है। आज रोबोटिक्स तेजी से बढ़ता क्षेत्र है और यह विभिन्न व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले नए रोबोटों के अनुसंधान, डिजाइन और निर्माण में जारी है।

भारत में कृषि उत्पादकता और स्थिरता बढ़ाने में रोबोटिक्स फसल और मिट्टी के स्वास्थ्य की निगरानी के लिए कंपनियाँ सेंसर और विभिन्न तकनीकों का लाभ उठा रही हैं। विभिन्न एआई और मशीन लर्निंग टूल्स का उपयोग बीज बोने के समय की भविष्यवाणी करने, कीट हमलों से जोखिमों पर अलर्ट प्राप्त करने आदि के लिए किया जा रहा है। कंपनियाँ एक कुशल और स्मार्ट आपूर्ति श्रृंखला बनाने के लिए कई स्रोतों से आने वाले डेटा-स्ट्रीम पर रीयल-टाइम डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रही हैं। कृषि रोबोट कंपनियाँ आवश्यक कृषि कार्यों को सँभालने के लिए स्वायत्त रोबोट विकसित और प्रोग्रामिंग कर रही हैं, जैसे मानव मजदूरों की तुलना में अधिक मात्रा में और तेज गति से फसल

की कटाई. कृषि रोबोट के कुछ उदाहरण हैं जैसे ग्रीन सीकर सेंसर स्मार्ट मशीन एक पौधे की ज़रूरतों को पढ़ती है और फिर आवश्यक शाकनाशियों के उर्वरक की मात्रा को सटीक रूप से लागू करती है. ग्रीन सीकर एक ऐसी मशीन है जो सेंसर का उपयोग करके पौधे को बताती है कि उसे क्या चाहिए.

रोबोट ड्रोन ट्रैक्टर रोबोट ड्रोन की एक नई पीढ़ी हमारे खेती करने के तरीके में क्रांति ला रही है, विभिन्न रोबोट के निर्माण के साथ, पहली बार रोबोट ड्रोन ट्रैक्टर की घोषणा कृषि मुख्यधारा का हिस्सा बन गई है. रोबोट यह तय करेगा कि कहाँ बोना है, कब फसल काटनी है और खेत को पार करने के लिए सबसे अच्छा मार्ग कैसे चुनना है. उर्वरक फैलाने के लिए उड़ने वाले रोबोट इली खेतों के ऊपर फसलों की बढ़ती स्थिति की निगरानी करता है, एक स्वचालित उर्वरक प्रणाली के साथ, रोबोट स्वायत्त रूप से उड़ सकता है. फल चुनने वाले रोबोट अनुसंधान अभी भी पूरी तरह से प्रगति पर है, विशेष रूप से रोबोट को सावधानीपूर्वक डिजाइन करने की आवश्यकता है ताकि वे फलों को तोड़ते समय चोट न करें. एक समाधान सक्शन ग्रीपर्स का उपयोग है, जिसका उपयोग स्वचालित फल चुनने वाली मशीनों पर किया जाता है, मानव श्रम के बिना डेयरी पशुओं, विशेष रूप से डेयरी मवेशियों का दूध दुहना है. स्वचालित दुग्ध प्रणाली, जिसे स्वैच्छिक दुग्ध प्रणाली भी कहा जाता है, 20वीं शताब्दी के अंत में विकसित की गई थी.

भारत में कृषि उपकरण कंपनियों और शोधकर्ताओं ने पारंपरिक खेती की ज़रूरतों के लिए बहुत सारे छोटे और भारी कृषि उपकरण विकसित किए हैं. यदि खरपतवार नियंत्रण के लिए रोबोट का उपयोग किया जा रहा है, तो इससे शाकनाशियों के उपयोग को कम करने में मदद मिलेगी और उपज जैविक में बदल जाएगी, उसी तरह रोबोटों का उपयोग सघनता से बचने के लिए रोपाई के लिए किया जा सकता है. ग्रामीण आविष्कारकों द्वारा कुछ प्रभावशाली नवीन तकनीकों को सेल फोन द्वारा दूर से संचालित किया जा सकता है, यह गर्मियों के समय में किसानों के लिए बहुत मददगार है क्योंकि बिजली की आपूर्ति अनियमित है. विभिन्न लाभों के बावजूद, कृषि रोबोटों की कुछ कमियाँ उनके उपयोग में काफी बाधा डालती हैं. एग्रीबॉट्स ऐसी मशीनें हैं जिनमें काफी निवेश की आवश्यकता होती है, जो उन्हें छोटे और सीमांत किसानों के लिए एक महंगा मामला बनाती हैं. एगबॉट्स नवीनतम तकनीकी प्रगति से सुसज्जित हैं, जिससे उनका उपयोग करना जटिल हो जाता है. कृषि रोबोटों को किसानों को आधुनिक तकनीक से निपटने में कुशल और कुशल बनने की आवश्यकता है, जो उनके खेत की ठीक से देखभाल करने की उनकी क्षमता को बाधित करता है.

भारत एक ऐसा देश है जो नियमित रूप से बिजली कटौती का सामना करता है, खासकर ग्रामीण इलाकों में. यह कृषि रोबोटों को बेकार बना देता है क्योंकि वे बिजली के बिना काम नहीं कर सकते हैं, जिससे समय की अनावश्यक बर्बादी होती है. खेती में उन्नत बुद्धिमान मशीनें, सेंसर या रीडर और हैंड हेल्ड पीडीए गणना और सटीकता में बहुत मददगार साबित होने वाले हैं सभी देशों में कृषि क्षेत्र में बहुत सारी बाधाएँ हैं, विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में भारत में किसान घट रहे हैं. बार-बार कुछ सामान्य वाक्यों को दोहराकर खेती के पेशे को छोड़ रहे हैं कि यह अब लाभदायक नहीं है और यह दिन-ब-

दिन जोखिम भरा होता जा रहा है. इसके नुकसान युवाओं को भी इसमें रुचि नहीं लेने देते हैं. रोबोटिक्स निश्चित रूप से कृषि क्रांति लाएगा. हालाँकि आगे की राह बहुत आसान नहीं है. हमें दुनिया की खाद्य जरूरतों को पूरा करने की व्यवहार्यता, स्थिरता और दक्षता की गणना करनी होगी. हालांकि, यह देखना दिलचस्प होगा कि किसान, कृषि-व्यवसायी और उपभोक्ता इस उद्योग के भविष्य को आकार देने के लिए रोबोटिक्स और डिजिटल-मशीनीकरण की शक्ति का उपयोग कैसे करेंगे.

शिक्षा के अलख

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



अलख जगाबो जब शिक्षा के,
घट-घट ज्ञान बोहाही जी.
सुमता के तब ही संगी,
सोनहा बिहान उजराही जी.

बिरथा जन होवय ये जग म,
मनखे के जिनगानी हर.
प्रेम भाव अउ ज्ञान ही बाँटे,
सबके गुरतुर बानी हर.

सब बर दाना पानी छत हो,
अउ सब तन बर ओनहा हो.
सुख सुमता के जुड़ छाँव म,
घर के कोनहा कोनहा हो.

कोहेनूर संगवारी मन ल,
आज यही गोहराही जी.
सुमता के तब ही संगी,
सोनहा बिहान उजराही जी.

अपने अपन लड़त रहिबो त,
कब हम आघू बढ़बो जी.
सरग निसेनी म बिकास के,
तब हम कइसे चढ़बो जी.

परदेशिया मन हमर घर म,
आके डेरा डारत हे.
हमर हक ल लूटे बर,
निसदिन होशियारी बघारत हे.

कब ले आँखी हमर उघरही,
अउ कब कान सुनाही जी.
सुमता के तब ही संगी,
सोनहा बिहान उजराही जी.

भारत की पहचान

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



भारत का मान रहे,
नित सम्मान रहे.
प्रतिभा में ओज बढ़े,
ज्ञान भी बढ़ाएँगे.

मति नहीं रहे मंद,
बनके विवेकानंद.
धर्म ध्वजा लहराके,
नित पूजे जाएँगे.

लेकर तोप भाला तीर,
सीमा में खड़े हो वीर.
बैरियों को पल में ही,
धूल चटवाएँगे.

धर शुभता का वेश,
जितने हैं मित्र देश.
सबका हितैषी बन,
हृदय लगाएँगे.

पूज्य गुरुवर

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



मैं जिनकी पा कृपा दृष्टि,
जन्म सुखधाम करता हूँ.
पुण्य जिस नाम का गुणगान,
आठोयाम करता हूँ.

नहीं उनसे बड़ा कोई,
मेरे खुशहाल जीवन में.
उन्हीं गुरुदेव के पग में,
पुण्य प्रणाम करता हूँ.

सीख पाया गुरु से ही,
सभी ने जन्म महकाना.
चमकता है गुरु से ही,
जगत में ज्ञान का बाना.

विधाता भी नहीं होता,
परम गुरुदेव से बढ़कर.
नहीं संभव बिना गुरुवर,
कभी भगवान को पाना.

पुण्य पग धाम में जिनके,
सुखों का भान होता है.
उन्हीं की पा कृपा मन में,
जगत संज्ञान होता है.

मिला भगवान से बढ़कर,
जिन्हें सम्मान वसुधा में.
लगाता पार जो गुरुवर,
वही भगवान होता है.

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



बनाकर स्वर्ग भारत को,
सुखों की धाम जिसने दिया.
गिरे पिछड़े जो कुचले थे,
उन्हें भी मान जिसने दिया.

भारती माँ के रत्नों में,
अमर है भीम जी बाबा.
परम अम्बेडकर जग में,
मनुजता मर्म पंथों के.

मिला है पुण्य हम सबको,
उन्हीं के श्रेष्ठ कर्मों का.
बिना अम्बेडकर के आज,
हम ऐसे नहीं होते.

विजय पथ पर ही चलना है,
नहीं अब हार करना है.
रहे सुरभित सदा बगिया,
सुखी संसार करना है.

हमें अम्बेडकर के कर्म,
सारे याद रखना है.
लगा जय भीम का नारा,
प्रखर गुंजार करना.

नन्हीं परी की खुशी

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे"कोहिनूर"



जैसे स्कूल खुला स्कूल में दाखिल करने के लिए उनके पापा नन्ही परी को लेकर स्कूल गया स्कूल जाते खुश हो गई.प्रिंसिपल सर ने उनको हाय हेलो किया.उन्होंने एक पोयम भी सुनाई स्कूल के प्राचार्य बहुत खुश हुए बहुत होनहार बच्ची है.नन्ही परी की खूब तारीफ हुआ.परन्तु जैसे ही स्कूल जाने के लिए दूसरा दिन तैयार हुई.स्कूल जाने के लिए मना की मैं नही जाऊँगी.परन्तु पिताजी के समझाने एवं खाने की चीज देकर बहलाकर फुसलाकर स्कूल लिया.अपने पापा के साथ गई.जैसे स्कूल में गया छोड़कर वापस आना चाहा खूब रोने लगी.छोड़ने के बावजूद भी रोने लगी दो-तीन दिन तक उस स्कूल में मन नहीं लगा.आखिर उनकी आदत बनी फिर स्कूल जाना चालू की रोज दिन प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखकर आती थी.पोयम्स जितना स्कूल में सीखती फिर आकर अपने पापा मम्मी को सुनाती थी. पढ़ाई जारी रखी शुरू से पढ़ाई में रुचि दिखाना चालू कर दी.होमवर्क करने लगी पढ़ाई लिखाई एवं पेंटिंग में उनकी काफी रुचि थी.नृत्य करना एवं गाना गाना उनका बेहद शौक था.परन्तु भोजन खाने के लिए बहुत ही कतराती थी.हमेशा दुकान की खाने की वस्तु उनको पसंद मिठाई फल इत्यादि ज्यादा खाती.भोजन का सेवन नहीं करना यह उनके पिताजी के लिए बहुत बड़ी समस्या.फिर अभी धीरे धीरे खाने के लिए तैयार हो रही है.कभी कभी होमवर्क नहीं करती तो उनके पिताजी प्यार से समझाकर होमवर्क कराता. परीक्षा की घड़ी आई बहुत अच्छा सा पेपर बना. जब नन्ही परी का परीक्षा परिणाम आया तो प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर क्लास में अव्वल स्थान मिला.खुशी का ठिकाना नही रहा. नन्ही परी खुश हो गई और अपने शिक्षक और पिताजी को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी जाहिर की.

बेटी

रचनाकार- श्रीमती मंजू साहू, बेमेतरा



बेटी सबको जान से प्यारी,
बेटी सबकी इज्जत होती है,
बेटी से ही है घर और परिवार,
बेटी ही है बहु और माँ,
बेटी सबकी दुलारी,
दिल और घर में वे करती हैं राज,
बेटी ना हो तो घर जैसे सुनसान,
जहाँ बेटी का अटूट नाता है,
वही बेटी देती सबको सम्मान,
नहीं करती अब कहीं भेदभाव,
आगे बढ़ना सिखाती हैं बेटी आज,
आज की बेटी नहीं है किसी की मोहताज,
अपने और अपनों के लिए,
खड़ी रहती है हर पल आज,
बेटी है अब सबके सर का ताज,

बेटी से ही है घर की रौनक आज,
बेटी को अब ना ठुकराओ,
बेटी ही होती है,
बुढ़ापे में अपने माँ बाप का सहारा,
बेटे भूल गये कर्म और कर्तव्य आज,
जो निभा रही हैं बेटियाँ आज.



सूरज

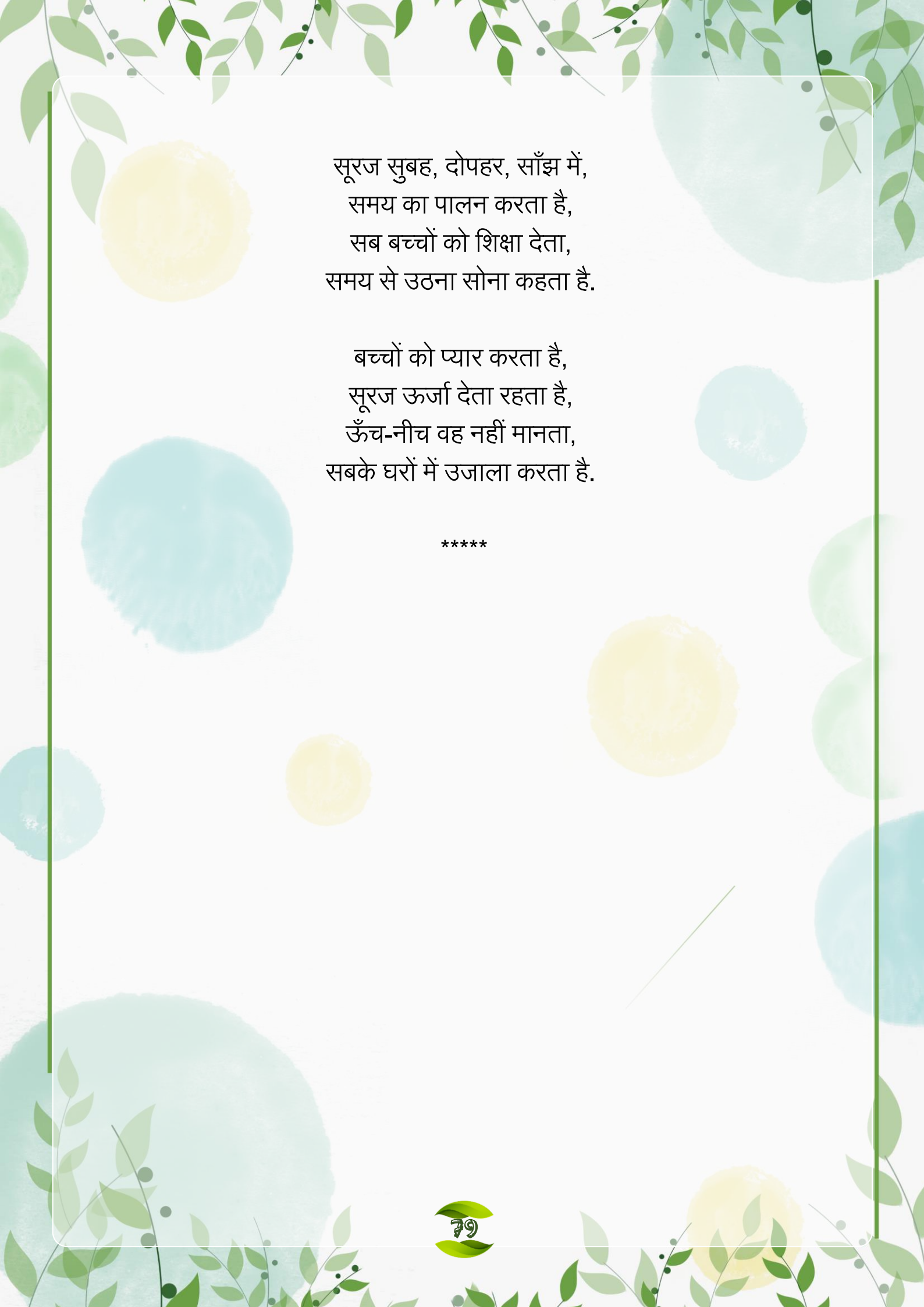
रचनाकार- सतीश "बब्बा"



रोज सबेरे उगता सूरज,
दोपहर में गरमाता है ,
शाम डूबता, ठंडाता है,
फिर भी वह मुस्काता है.

कभी - बादल उसको,
घेरता और छुपाता है,
जैसे मानव को दुख का बादल,
गहन अंधेरा दे जाता है.

बादल से फिर बाहर आकर,
सदा ही वह मुस्काता है,
सूरज दादा हर मनुष्य को,
सुंदर संदेश दे जाता है.



सूरज सुबह, दोपहर, साँझ में,
समय का पालन करता है,
सब बच्चों को शिक्षा देता,
समय से उठना सोना कहता है.

बच्चों को प्यार करता है,
सूरज ऊर्जा देता रहता है,
ऊँच-नीच वह नहीं मानता,
सबके घरों में उजाला करता है.

अपने अंतर्ज्ञान का पालन करें

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान



अंतर्ज्ञान यह समझाने में सक्षम हुए बिना कुछ "जानना" है कि आप तर्कसंगत रूप से उस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचें. यह वह रहस्यमय "आंत भावना" या "वृत्ति" है जो अक्सर पूर्वव्यापी में सही हो जाती है.

जब आप अपने विकल्पों को कम कर देते हैं और एक चौराहे पर फँस जाते हैं, तो अपने अंतर्ज्ञान के संपर्क में रहने से मदद मिल सकती है. आप अपने अंतर्ज्ञान को विकसित करने के लिए व्यायाम करके अपने सहज ज्ञान युक्त उपहारों को सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं, यह जानकर कि किस प्रकार की परिस्थितियाँ सहज निर्णयों को बुलाती हैं, और यह जानने के लिए कि आपका अंतर्ज्ञान कैसा महसूस करता है और कार्य करता है.

अपनी भावनाओं के बारे में लिखें. अपनी भावनाओं के संपर्क में रहने और अपने सहज पक्ष को अनलॉक करने के लिए डायरी रखना एक अच्छा तरीका हो सकता है. आप जो कुछ भी महसूस कर रहे हैं या जिसके बारे में सोच रहे हैं उसे लिखें, तर्कसंगतता या अपनी आंतरिक आवाज के बारे में चिंता किए बिना.

चेतना लेखन की धारा, या आपके दिमाग में आने वाले पहले शब्द या विचार को केवल लिख देना, आपके अवचेतन मन में क्या चल रहा है, इसके बारे में अधिक जागरूक होने में आपकी मदद कर सकता है.

ध्यान आपके शरीर द्वारा आपको भेजे जा रहे सहज ज्ञान युक्त संकेतों के साथ अधिक तालमेल बिठाने में आपकी मदद कर सकता है. अपनी शारीरिक स्थिति के बारे में अधिक जागरूक बनने में मदद करने के लिए कुछ बुनियादी ध्यान तकनीकों का प्रयास करें.

ध्यान करने के लिए एक शांत और आरामदायक जगह खोजें जहाँ आप परेशान या विचलित न हों.

एक आरामदायक स्थिति में बैठें, अपनी आँखें बंद करें और अपनी श्वास की संवेदनाओं पर ध्यान केंद्रित करें. यदि आपका मन भटकता है, तो धीरे से अपना ध्यान अपनी श्वास पर केंद्रित करें.

"बॉडी स्कैन" करने का प्रयास करें. लेट जाओ, अपनी आँखें बंद करो, और मानसिक रूप से अपने शरीर के प्रत्येक भाग पर बारी-बारी से ध्यान केंद्रित करो, पैर की उंगलियों से शुरू होकर अपने सिर के ऊपर तक जाओ. अपने शरीर के प्रत्येक भाग में होने वाली किसी भी संवेदना से अवगत रहें और तनावग्रस्त मांसपेशियों को आराम देने के लिए सचेत प्रयास करें. जब आप यह कर लें, तो कुछ मिनट के लिए अपने पूरे शरीर पर ध्यान दें. अपनी श्वास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कुछ मिनट निकालें.

खुद को विचलित करें. हालांकि यह अतार्किक लग सकता है, व्याकुलता वास्तव में आपको निर्णय लेने में मदद कर सकती है. आपका मस्तिष्क अवचेतन स्तर पर जानकारी को संसाधित करता है, भले ही आप उस पर सक्रिय रूप से ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हों या उसके बारे में सोच रहे हों. यदि आपको निर्णय लेने में कठिनाई हो रही है, तो कुछ समय के लिए कुछ और करें. फिर समस्या पर लौटें, और उस निर्णय के साथ चलें जो "सही" लगता है.

नींद हमारे शरीर और दिमाग को आराम देने और मरम्मत करने के लिए महत्वपूर्ण है, और यह उन सूचनाओं को संसाधित करने में भी मदद करती है जो हम दिन के दौरान लेते हैं. अगर आपको निर्णय लेने में परेशानी हो रही है, तो इसे एक तरफ रखकर कुछ नींद लेने की कोशिश करें. जब आप जागते हैं, तो आप पा सकते हैं कि आपके अंतर्ज्ञान ने आपको निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया है.

अपने ज्ञान और सामान्य ज्ञान का प्रयोग करें. यदि आप एक अपरिचित स्थिति में हैं, एक जटिल समस्या को हल करने की कोशिश कर रहे हैं, या एक महत्वपूर्ण निर्णय लेने की आवश्यकता है, तो कुछ शोध करें या अपनी आंत को संभालने से पहले सलाह लें. यदि आप व्यावहारिक ज्ञान, उचित अपेक्षाओं और अपने विकल्पों की समझ के साथ इसका उपयोग करते हैं तो आपका अंतर्ज्ञान आपके लिए बेहतर काम करेगा.

परिचित स्थितियों में अपने अंतर्ज्ञान को सुनें. पैटर्न पहचानने में हमारा दिमाग बहुत अच्छा है. यह हमें जल्दी और बिना ज्यादा सोचे-समझे निर्णय लेने की अनुमति देता है. साइकिल चलाते समय आपने शायद इस प्रकार के अंतर्ज्ञान का उपयोग किया होगा. एक बार जब आप किसी चीज़ का कुछ बार अभ्यास कर लेते हैं (जैसे भाषण देना, संगीत का प्रदर्शन करना, या कोई खेल खेलना), तो जाने

देने की कोशिश करें और अपने नोट्स का हवाला देने, घड़ी को देखने, या सोचने के बजाय अपने अंतर्ज्ञान को हावी होने दें. हर कदम.

अपने स्वास्थ्य के बारे में अपनी प्रवृत्ति को सुनें. आप अपने शरीर को किसी और से बेहतर जानते हैं. अगर आपको लगता है कि कुछ गलत है, भले ही वह सूक्ष्म हो या आप उसे स्पष्ट रूप से समझा नहीं सकते, तो चिकित्सीय सलाह या ध्यान दें. यदि आपको अभी भी लगता है कि चिकित्सा पेशेवर को देखने के बाद भी आपकी चिंताओं का समाधान नहीं किया गया है, तो दूसरी राय लें. हो सकता है कि आपको कुछ ऐसा समझ आ रहा हो जो आपके डॉक्टर को नहीं है.

आप अपने करीबी लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के बारे में एक मजबूत अंतर्ज्ञान भी विकसित कर सकते हैं. यदि आप किसी बच्चे के माता-पिता या अभिभावक हैं, या यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहते हैं जिसे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ हैं, तो उनकी स्थिति के बारे में अपने सहज ज्ञान युक्त संकेतों पर ध्यान दें. आपको यह आभास हो सकता है कि कुछ गलत है, भले ही वे इसे आपके ध्यान में न लाएँ या स्वयं इस पर ध्यान न दें.

यदि आपके सामने कोई बड़ी खरीदारी करने, किस कॉलेज में जाने का निर्णय लेने या शादी करने जैसे बड़े विकल्प हैं, तो तर्क और व्यावहारिक विचार महत्वपूर्ण हैं. लेकिन एक बार जब आप सभी पेशेवर और संबंध के वजन को स्वीकार कर लेते हैं और अपने विकल्पों को कम कर देते हैं, तो आप अपनी पसंद से सबसे अधिक संतुष्टि प्राप्त करने की संभावना रखते हैं यदि आप निर्णय को अंतिम निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं.

अपनी आंत सुनो. यह सिर्फ एक रूपक नहीं है - हम वास्तव में अपनी कुछ "सोच" अपनी हिम्मत से करते हैं. पेट में दर्द, आपके पेट में तितलियों की अनुभूति, या बुरी खबर सुनने पर आपको मिलने वाली विशिष्ट डूबती हुई भावना से आपका "आंत मस्तिष्क" आपको यह बता सकता है कि आप तनावग्रस्त हैं या आपके दिमाग से पहले उत्साहित हैं.

यदि आपका पेट दर्द करता है या असहज महसूस करता है जब आप किसी विशेष स्थिति या लोगों के साथ काम कर रहे होते हैं या उसके बारे में सोचते हैं, तो यह आपका शरीर आपको बता सकता है कि वे आपके लिए तनाव का स्रोत हैं. इन संकेतों से अवगत रहें, और यदि संभव हो तो ब्रेक लें या ट्रिगर करने वाली स्थिति या व्यक्ति से बचें.

अपनी नाक का पालन करें. आप हमेशा इसके बारे में जागरूक नहीं हो सकते हैं, लेकिन आपकी सूंघने की क्षमता एक शक्तिशाली उत्तरजीविता उपकरण हो सकती है. आपकी नाक आपको बता सकती है कि क्या कुछ खाने के लिए असुरक्षित है, और किसी अन्य व्यक्ति की भावनात्मक या शारीरिक स्थिति का मूल्यांकन करने में भी आपकी मदद कर सकती है. नियमित रूप से व्यायाम

करके और सिगरेट के धुएं की तरह गंध की भावना को नुकसान पहुंचाने वाले प्रदूषकों से बचकर अपनी गंध की भावना को बढ़ावा दें.

अपनी आँखों का प्रयोग करें. जब आप किसी अपरिचित स्थिति में प्रवेश करते हैं, तो चारों ओर एक त्वरित नज़र डालें. यहां तक कि अगर आप जो कुछ भी देख रहे हैं उसके बारे में जागरूक नहीं हैं, तो भी आपकी आँखें महत्वपूर्ण दृश्य संकेतों पर उठा सकती हैं जो सहज प्रतिक्रियाओं में योगदान दे सकती हैं. उदाहरण के लिए, आप अवचेतन रूप से किसी अन्य व्यक्ति के चेहरे के भाव या शरीर की भाषा में तत्काल स्पष्ट होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों को उठा सकते हैं. यदि किसी व्यक्ति या स्थिति के बारे में कुछ गलत या खतरनाक लगता है, तो ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि आपकी आँखों ने कुछ ऐसा देखा है जो आपके दिमाग में नहीं था.

हमारे शरीर में पाँच इंद्रियाँ हैं: स्पर्श, गंध, स्वाद, दृष्टि, श्रवण. लेकिन अनदेखी नहीं की जानी चाहिए हमारी आत्मा की इंद्रियाँ: अंतर्ज्ञान, शांति, दूरदर्शिता, विश्वास, सहानुभूति. लोगों के बीच अंतर इन इंद्रियों के उनके उपयोग में निहित है; अधिकांश लोग आंतरिक इंद्रियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं जबकि कुछ लोग उन पर भरोसा करते हैं जैसे वे अपनी भौतिक इंद्रियों पर भरोसा करते हैं, और वास्तव में शायद इससे भी ज्यादा.

स्कूल का पहला दिन

रचनाकार- कु.संज्ञा साहू, महासमुंद



पहली का मेरा पहला दिन,
सोच के मैं तो डर रही हूँ.

कौन मिलेगा, कैसा होगा स्कूल,
सोच-सोच के मैं तो मर रही हूँ.

बस्ते में कुछ रखती, फिर निकालती,
और भी मैं क्या-क्या कर रही हूँ.

कुछ उम्मीदों, कुछ आशंकाओं को,
मैं अपने बस्ते में भर रही हूँ.

सूरज बड़ा गुस्सैल

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला, बालोद



सूरज बड़ा गुस्सैल,
लगता है रे बाबा.

सुबह सुहाना नील गगन.
धरती रानी धीर मगन.
लालिमा छाती चहुँ ओर.
चिड़िया करती ची-चीं शोर.
तभी अचानक पवन,
तपता है रे बाबा.
सूरज बड़ा गुस्सैल,
लगता है रे बाबा.

फिर प्रचण्ड रूप दुपहरी.
आती तीव्र धूप गहरी.
छाँव भी गर्म तरुवर की.
तप्त तरंगें सरोवर की.
कभी-कभी पत्थर तक,
चटकता है रे बाबा.
सूरज बड़ा गुस्सैल,
लगता है रे बाबा.

साँझ बेचारी झुलसती है.
फिर भी चुप रहती है.
ऊपर उमस भरा बादल.
लगती है बला हर पल.
धूलिकण गर्म राख सा,
उड़ता है रे बाबा.
सूरज बड़ा गुस्सैल,
लगता है रे बाबा.

खिलौना घर

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



बच्चों के बौद्धिक विकास, उनमें रचनात्मकता बढ़ाने और समस्या समाधान के कौशल को निखारने में खिलौनों का विशेष महत्व है. सीखने सिखाने के संसाधन के रूप में खिलौनों का उपयोग बेहतर परिणाम दे सकता है.

खिलौने का उपयोग माता-पिता घरों में अपने बच्चों को सिखाने के लिए आसानी से कर सकते हैं. खिलौनों के माध्यम से विषय आधारित अवधारणाओं को समझाने में बहुत मदद मिल रही है.

इसी बात को ध्यान में रखकर हमने अपने विद्यालय के एक कक्ष में खिलौना घर बनाया है, जिसमें तरह-तरह के खिलौने रखे जा रहे हैं. ये खिलौने हमें बालकों से प्राप्त हो रहे हैं. अभिभावक अपने घर में बच्चों से खिलौने बनाकर विद्यालय में बच्चों के खेलने के लिए भेज रहे हैं . जैसे एक अभिभावक दर्जी का कार्य करते हैं तो उन्होंने कपड़ों की कतरन से छोटे बड़े थैले, कपड़े की गुड़िया, बना कर दिए हैं. एक अभिभावक बढ़ई हैं, उन्होंने लकड़ी की गाड़ी, जाता आदि दिए हैं. मिट्टी का किचन सेट, सब्जी, फल आदि भी बनाए गए हैं.

अक्ति तिहार पर खिलौना घर में आम, जामुन की डालियों से मंडप बनाकर गुड्डा गुड़ियों का खेल बच्चों के साथ खेला गया. बच्चे गुड्डा गुड़िया के विवाह का खेल, खेलकर बहुत खुश हुए.

कीमत

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



एक लोहार, अपनी दुकान पर काम कर रहा था तभी वहाँ उसका बेटा आकर पूछने लगा कि, पिताजी एक मनुष्य की कीमत क्या होगी?

लोहार ने कुछ देर सोच कर अपने बेटे से कहा कि इंसान तो अनमोल है.

बेटा कहने लगा कि फिर कोई अमीर तो कोई गरीब क्यों है? जब सभी इंसान अनमोल है तो सब बराबर होना चाहिए यह अमीर गरीब का फासला क्यों है?

लोहार कुछ देर सोचता रहा और फिर अपने बेटे से कहा कि कमरे से एक लोहे का टुकड़ा उठाकर लाए.

बेटा जब लोहा उठा कर लाया तब लोहार ने उससे पूछा कि यदि मैं इस टुकड़े को बाजार में बेचूँ तो इसकी कीमत क्या मिलेगी?

बेटा कुछ देर सोचकर बोला कि, लगभग 200 रुपए.

लोहार ने कहा कि अगर मैं इस लोहे से छोटी-छोटी कीलें बना दूँ तब यह कितने में बिकेगी?

बेटे ने उत्तर दिया लगभग एक हजार रुपए.

तब लोहार ने कहा, इसी तरह इंसान भी है जो जितने अच्छे कर्म करेगा उसकी कीमत उतनी ही बढ़ती जाएगी. बेटा अपने पिताजी की बात समझ गया.

घड़े की अच्छाई

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



गाँव में एक मेहनती और ईमानदार किसान रहता था. उसके पास दो घड़े थे. किसान रोज तालाब जाता और दोनों घड़ों में पानी भर कर लाता और अपने खेतों में डालता था. दोनों में से एक घड़ा फूटा हुआ था.

एक दिन फूटा घड़ा बहुत दुखी हुआ कि किसान रोज इतनी मेहनत कर तालाब से पानी लाता है पर मेरे फूटे होने के कारण आधा पानी रास्ते में ही बह जाता है.

दूसरा घड़ा भी अक्सर कहता है कि फूटा होने से तुम कुरूप दिखते हो और काम भी तुम सही नहीं करते. तुम्हारे कारण किसान को हानि हो रही है.

किसान भी चुपचाप बैठे हुए घड़ों की बातचीत सुन रहा था. किसान दोनों घड़ों से कहने लगा कि यह फूटा घड़ा तो मेरे लिए अच्छा ही साबित हुआ है. मैं खेती करने के साथ-साथ बाजार में फूल भी बेच लेता हूँ. उससे जो पैसे मिलते हैं उसी से मेरा खर्च चलता है.

जब मैं तालाब से दोनों घड़ों में पानी भर कर लाता हूँ तब फूटे घड़े का पानी रास्ते में गिरता है जहाँ फूलों के पौधे हैं. उनसे मुझे खूब फूल मिल जाते हैं. फूलों को

बाजार में बेचकर मुझे कुछ आमदनी हो जाती है.

तुममें कुछ कमी है, ऐसा तुम सोचते हो पर मैं तुम्हारी उस कमी में भी अच्छाई देखता हूँ. तुम्हारे कारण ही रास्ते में फूल खिले हुए हैं यह बात सुनकर दोनों घड़े खुश हो गए.

नानी के घर जाबो

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो.

पोठ करे हन पढ़ई-लिखई, हालत होंगे खस्ता.
निपट परीक्षा गेहे जम्मों, थीरथार हे बस्ता.
बेर चढ़त ले नींद भाँजबो, सपना सुघर सजाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

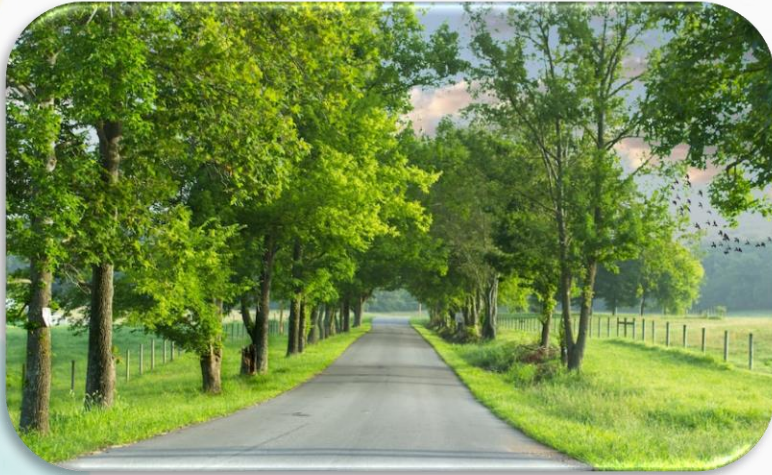
खीर तसमई संग करौनी, मिलही दूध, महेरी.
गाय, भँइस के पाछू फिरबो, पाबो बछिया, छेरी.
मलर-मलर मनमाने करबो, मटमटहा हमूँ कहाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

बारी-बरछा बइठ बिलमबो, थाँघा झूलना डारे.
आनी-बानी फर हम खाबो, भले पेट ला झारे.
नरवा-नदियाँ, तरिया-डबरी, मनभर डुबक नहाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

ममा पुरोही खँगती-बढ़ती, मामी मया जताही.
गोठ सुजानिक नाना करके, बढ़िया बात बताही.
संग समो के सब ला संगी, सिरतों समझ बढ़ाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो.

रह्वा के रुख राई

रचनाकार-प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



बुधराम हर गांव के सरकारी इस्कूल म बड़े गुरुजी रहिस. इस्कूल म बुधराम हर सिक्छा के संगे संग संसकार घलो देवय.जेकर ले लइका मन साक्छर होय के संगे संग संसकारी घलो बनय.

सरकारी इस्कूल हर गांव ले दु कोस के दूरिहा भाठा म रहय जिहा पिये बर बने न पानी के बेवसथा राहय न रुख राई के छइहा राहय. लइकामन जब इस्कूल जातिस त संग म पानी के डब्बा धर के जातिस. पानी सिराय ले दु कोस दूरिहा पानी बर आतिस.

बुधराम हर रुख राई लगाय के अब्बड़ उदिम करय फेर रुख राई मन पानी बिना कहा ले जागतिस चार दिन जितिस तहन पानी बिना मर जातिस.

फेर बुधराम हर हार नई मानिस अउ ए बेरा बने दिमाक लगाइस बरसात के पहिली स्कूल के पाछु म नानकून तरिया बना दिस जेन म बरसात आय ले पानी हर भरे लागिस त बुधराम हर इस्कूल के जम्मो खाली जगह म नान्हे नान्हे फुल पेड़ अउ इस्कूल ले गांव आय जाय के रह्वा म तिरे तिर कतकोन अकन रुख राई लागिस.

इस्कूल के लइका मन खाली समय म तरिया के पानी ल रुख राई अउ फुल पेड़ म डारय जेकर ले रुख राई अउ फुल पेड़ मन बने संसनावत बाढ़े लागिस.

अब इस्कूल पढ़हइया लइका मन ल इस्कूल आय जाय म घाम नई लागय अउ आमा,अमली,जाम खावत बने हासत गावत इस्कूल आवत जात रहिस.

फेर धीरे धीरे गांव म बिकास होय लगीस. जगह जगह पिये के पानी के बेवस्था करे लगिस. गांव गली के सड़क मन पक्की होय लगिस. त गांव ले स्कूल के रददा ल बनाय के उदिम करिस.

रद्दा ल पक्की करे बर रद्दा के तिरे तिर जागे जम्मो रुख राई ल काट डारिन अउ पक्की रद्दा बना डारिन. रद्दा हर बनिस त बने बात आय फेर बुधराम अउ लइकामन के महीनता माटी म मिलगे. बिकास के नाव म रद्दा के जम्मो रुख राई कटागे.

अँगना मा शिक्षा

रचनाकार-सुधारानी शर्मा, मुंगेली



अँगना मा शिक्षा कार्यक्रम क्या है इसके बारे में कुछ कहने से पहले मैं यह बताना चाहती हूँ कि माँ की गोद बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है बच्चा सब कुछ माँ से सीखता है. 5 वर्ष तक बच्चे के दिमाग का 90% विकास हो चुका होता है इस उम्र तक बच्चे में एक दिन में लगभग 500 प्रश्न को पूछने की क्षमता होती है, भाग्यशाली हैं आप कि आप को मातृत्व का वरदान मिला है आपको इस वरदान रूपी आशीर्वाद को और भी सजाना है, सँभालना है, आपको अवसर मिला है अपने बच्चे की शिक्षा बनने का, आप घर में बच्चे को अच्छे संस्कार देती है प्यार अपनत्व के द्वारा अपने ही खिलाये फूल को और भी सुंदर, परिष्कृत, पल्लवित, कर सकती हैं एक शिक्षिका से ऊर्जावान नारी की भूमिका आपको निभानी है, आपको सबला बनना है, आत्मनिर्भर बनना है, उस दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाना है इस कार्य की शुरुआत आप अपने आसपास के माहौल से कर सकती हैं.

आपका आँगन आपके लिए पाठशाला का कार्य करता है आपके घर में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जिसे, आप बच्चे को बता सकती हैं घर के सामान, बर्तन, फल, सब्जियाँ, आकार, रंग, वस्त्र, अनाज, पशु पक्षी, रिश्ते नाते, पौधे, पेड़, प्राकृतिक चीजें सभी को बता सकती हैं, पढ़ा सकती है, समझा सकती है, चूड़ियाँ रंग बिरंगी हैं, थाली गोल है, टमाटर लाल है, पानी गर्म है, दरवाजा लकड़ी का है, गाय के चार पैर हैं, दूध का रंग सफेद है, पेड़ पौधे हरे हैं.

छोटे-छोटे हिसाब रखना आप भी सीखिए, आपके अंदर और कोई भी कला, हुनर है, उसे निखारें, उसे उड़ान दीजिए, कोई भी काम मेहनत से किया जाए तो वह रंग लाता है काम कोई सा भी हो, बड़ा या छोटा नहीं होता, उत्साह उमंग से किया गया कार्य हमेशा ही संतोष प्रदान करता है.

घर में बैठे हुए आप आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकते हैं, अपना समूह बनाकर कोई भी काम कर सकती हैं, अपनी इच्छाएँ पूरी कर सकती हैं।

माँ से शिक्षिका बनिए स्वयं भी एक पहचान बनाइए सिर्फ आपका रास्ता सही, सच्चा, साफ सुथरा हो, आजकल डिजिटल दुनिया चल रही है सब कुछ आपकी एक उँगली पर है बच्चों को गिनती, वर्णमाला, कविता, कहानी, गीत, अक्षर, शब्द, लोक गीत, लोकनृत्य, या आपको अगर ढोलक बजाना आता है, हारमोनियम बजाना आता है, गाना गाना आता है, सिलाई, बुनाई, चित्रकारी वह भी सिखाइए मतलब अपनी कला बच्चों को सिखाइए।

बच्चा तैयार होकर स्कूल जाएगा आपको संतुष्टि रहेगी कि आपने उसके व्यक्तित्व के विकास में, उसकी पढ़ाई में, अपना योगदान दिया है और स्वयं की संतुष्टि सबसे बड़ा अमूल्य खजाना है और यह जिसके भी पास है वह दुनिया का सबसे अमीर इंसान है अँगना मा शिक्षा की यात्रा में आप भी सहभागी बनिए और बच्चों के भविष्य को निखारने संवारने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।

माँ-बाप बच्चों के मालिक बनने की कोशिश न करें

रचनाकार-स्नेहा सिंह, नोएडा



बच्चे के पालन-पोषण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि माँ-बाप को एक बात समझ लेनी चाहिए कि उन्हें बच्चे के उचित पालन-पोषण के लिए एक अच्छा माँ-बाप बनना है, पर बच्चे के साथ व्यवहार एक अच्छे मित्र की तरह करना है. बच्चे का पालक बनना है, पर मालिक नहीं बनना है. बच्चे को भरपूर स्नेह देना है.

खास कर नई पीढ़ी के माँ-बाप बच्चे के उचित पालन-पोषण के लिए चिंतित रहते हैं. लेकिन बच्चे को सारी विधाओं में पारंगत करने के चक्कर में, सब सिखाने की उमंग में बच्चे का बचपन छीन लेते हैं. बच्चे को बच्चा रहने देना ही सब से सच्ची पैरेंटिंग है और इसके लिए माँ-बाप को भी थोड़ा बच्चा बनना पड़ता है, थोड़ा-बहुत त्याग करना पड़ता है, बच्चा बनकर सोचना-विचारना पड़ता है कि बच्चे के लिए कैसा व्यवहार अच्छा और उचित है.

पहले की पीढ़ी मेहमान या दोस्त घर आते थे तो बच्चे को उनके सामने, 'बेटा, गाना तो गाओ...', या फिर 'डांस कर के दिखाओ...', या फिर वह एक्टिंग कर के दिखाओ...', कहकर बच्चे को प्रदर्शन की वस्तु बनाते थे. आजकल तो बच्चों को एक्स्ट्रा एक्टिविटी के नाम पर उल्टी-सीधी क्लासों में भेजने वाले माँ-बाप बच्चे को बचपन से ही महान बना देना चाहते हैं. उनकी इच्छा होती है कि बच्चा उनका नाम रोशन करे. सारे बच्चे बचपन से ही भीड़ में कम्फर्टेबल नहीं होते. शर्मीले बच्चे भी सामान्य होते हैं. उन्हें हमेशा टोकते रहने और उन्हें लोगों के बीच कैसे बोलना चाहिए, इस तरह का मार्गदर्शन करते रहने से अचानक उनका स्वभाव बदल जाएगा और वे सभी को खुश कर देंगे, इस तरह की अपेक्षा करना भी ठीक नहीं है.

इसी तरह अधिक बोलने वाले बच्चे को चुप रहने के लिए कहने पर वह एकदम से चुप नहीं हो जाएगा. कुछ बच्चों की जिज्ञासा अधिक होती है, जिससे वे माँ-बाप से बारबार सवाल करते रहते हैं. बच्चे के सवाल का उचित जवाब ही माँ-बाप को देना चाहिए.

कभी-कभी बच्चे माँ-बाप से ऐसा सवाल पूछ लेते हैं, जिसका जवाब माँ-बाप के पास नहीं होता. ऐसी स्थिति में माँ-बाप 'मेरा सिर मत खाओ' या 'अब चुप हो जाओ...' यह कह कर बच्चे को चुप करा देते हैं. माँ-बाप को बच्चे के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए. अगर जवाब न आ रहा हो तो सच बता देना चाहिए, 'मुझे अभी तो नहीं आता, जान कर बताऊँगा.' और उस सवाल का जवाब पता करते समय बच्चे को साथ रखना चाहिए. ऐसा करने से दो फायदे होंगे. एक तो बच्चा यह समझेगा कि सभी को सभी सवालों के जवाब आते हों, यह जरूरी नहीं है और इसमें शर्म की कोई बात भी नहीं है. इसके अलावा बच्चा सवालों के उत्तर पाना, पढ़ना या अन्य प्रवृत्ति सीखेगा. मुख्य बात यह है कि बच्चे का मालिक बन कर अपनी मर्जी के अनुसार उसे जबरन किसी प्रवृत्ति की ओर धकेलने का प्रयत्न करने से उसे उस प्रवृत्ति से अनिच्छा तो होगी ही, साथ ही उसका बचपन भी छिनेगा.

पहले छोटे बच्चों के लिए इतने कपड़े नहीं खरीदे जाते थे. इसलिए वे सामान्य कपड़ों में छूट से खेल सकते थे. विवाहों या पार्टियों में बच्चे ऊबते नहीं थे और अब तो बच्चे किसी भी समारोह में जाने में ऊबते हैं. इसका कारण बच्चे अपनी पसंद का खेल खेल नहीं पाते. अब माँ-बाप महंगा कपड़ा और लड़की हुई तो मेकअप करा कर बच्चों को शोभा का पुतला बना कर ले जाते हैं. अपना बच्चा अच्छा दिखाई दे, इसके लिए बच्चों की कोमल त्वचा पर तरह-तरह के केमिकल और बालों में हानिकारक शैम्पू का उपयोग करने वाले माँ-बाप जाने-अनजाने अपने बच्चों को भविष्य में गंभीर स्किन प्राब्लम देते हैं. सांस्कृतिक कार्यक्रमों से ले कर परिवार की शादियों तक सभी बच्चों को बड़े लोगों की तरह कपड़े, मेकअप और चप्पल, जूते पहनने को मजबूर करते हैं. ऐसे में उन्हें यह साबित करना होता है कि वह खुद किसी से कम नहीं हैं. पैसा खर्च कर सकते हैं और बच्चों को आधुनिक बना सकते हैं. पर बच्चा खिलौना नहीं है या माँ-बाप की प्रतिष्ठा की प्रतिकृति भी नहीं है, यह समझना बहुत जरूरी है. सही बात तो यह है कि यह सब बच्चों का बचपन छीन लेता है. इतना ही नहीं, बच्चों को अचानक बड़ा बना देता है और उन्हें दिक्कत होती है कि उन्हें बड़ों जैसा व्यवहार करना पड़ता है. बच्चे पहले के पाँच सालों में बहुत कुछ सीख जाते हैं और तब फैशन या प्रतियोगिता के बदले स्नेह, संस्कार और स्वभाव का गढ़ना महत्वपूर्ण होता है. फैशन और पढ़ाई तो उम्र होने पर सीख ही जाएगा. अपरिपक्व उम्र में बहुत ज्यादा फैशन और पार्टी कल्चर की शिक्षा देकर माँ-बाप बच्चों का बहुत ज्यादा अहित कर रहे हैं. बच्चा अपने हिसाब से किसी में भी रुचि ले और उसी के अनुसार बर्ताव करे. यही उसके उचित विकास के लिए महत्वपूर्ण है. माँ-बाप का कोई हक नहीं है कि अपनी मर्जी के अनुसार जबरदस्ती बच्चे से बर्ताव कराए और उनका बचपन छीन लें. बच्चे को बच्चा ही रहने दें, यही आप के और बच्चे, दोनों के हित में है.

मजदूर

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



फटे-पुराने मलिन कपड़ों में,
मजदूर की लिपटी है गरीबी.
दानें-दानें के लिए मोहताज हैं,
भूख और प्यास है बदनसीबी.

दो वक्त की रोटी के लिए,
नजरें ढूँढ रही है कोई काम?
मेहनत का पसीना टपक रहा,
सुबह से हो चुकी है शाम.

कलम और पुस्तक लेकर,
घर लौटा आशाओं के साथ.
अपने हाथों लिखो तकदीर,
थमा दिया बच्चों के हाथ.

मैं तो अनपढ़ और गरीब था,
गिट्टी, रेती से कर ली दोस्ती.
बनो ज्ञान अर्जित से अधिकारी,
तन-मन से लगा दो पूरी शक्ति.

साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



साथ मिलकर महत्वपूर्ण
भूमिका निभाना हैं
संकल्प लेकर सुशासन को
आखिरी छोर तक ले जाना हैं

भ्रष्टाचार को रोककर सुशासन को
आखरी छोर तक ले जाना हैं
सरकारों को ऐसी नीतियां बनाना हैं
भारत को सोने की चिड़िया बनाना हैं

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी
अपनी जड़ों से जुड़कर रहना है
प्रौद्योगिकी का उपयोग
कुशलतापूर्वक करना है

प्रौद्योगिकी पर जोर देकर
विकास को बढ़ाना हैं
कल के नए भारत को
साकार रूप देना हैं

भारत को परिवर्तनकारी
पथ पर ले जाना हैं
सबको परिवर्तन का सक्रिय
धारक बनाना हैं

न्यूनतम सरकार अधिकतम
शासन प्रणाली लाना हैं
सुशासन को आखिरी
छोर तक ले जाना हैं

भारतीय लोक प्रशासन को
ऐसी नीतियां बनाना हैं
वितरण प्रणाली में भेदभाव
क्षमता अंतराल को दूर करना हैं

लोगों के जीवन की गुणवत्ता
कौशलता विकास में सुधार करके
सुखी आरामदायक बेहतर
खूबसूरत जीवन बनाना हैं

सुविधाओं समस्याओं समाधानों
की खाई पाटना हैं
आम जनता की सुविधाओं को
अधनुतिक तकनीकी से बढ़ाना हैं

बाल गीत

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो.

पोठ करे हन पढ़ई-लिखई, हालत होंगे खस्ता.
निपट परीक्षा गेहे जम्मों, थीरथार हे बस्ता.
बेर चढ़त ले नींद भाँजबो, सपना सुघर सजाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

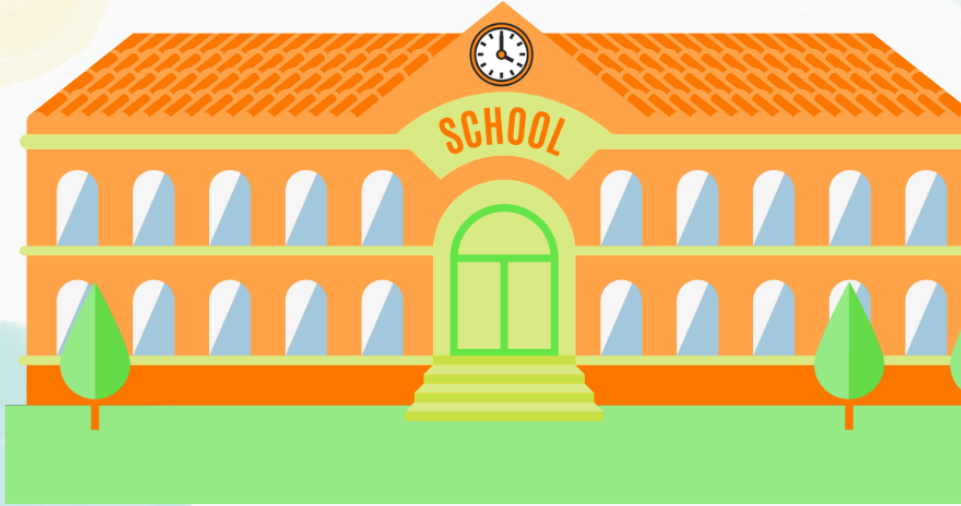
खीर तसमई संग करौनी, मिलही दूध, महेरी.
गाय, भँइस के पाछू फिरबो, पाबो बछिया, छेरी.
मलर-मलर मनमाने करबो, मटमटहा बन ईँतराबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

बारी-बरछा बइठ बिलमबो, थाँघा झूलना डारे.
आनी-बानी फर हम खाबो, भले पेट ला झारे.
नरवा-नदियाँ, तरिया-डबरी, मनभर डुबक नहाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.

ममा पुरोही खँगती-बढ़ती, मामी मया जताही.
गोठ सुजानिक नाना करके, बढ़िया बात बताही.
संग समो के सब ला संगी, सिरतों समझ बढ़ाबो.
छुट्टी होंगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो.
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो.

सरकारी इस्कूल

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर



आवव जी जाबो सरकारी इस्कूल,
जिहां फूले हे शिक्षा के सुग्घर फूल.
साफ सुथरा जनपद इस्कूल हमार,
जिहां पुरा होथे जी सपना हजार.

भिथीया टीएलएम ले सुग्घर सजे हे,
खेल-खेल म अड़बड़ शिक्षा देथे.
चार्ट, कविता, खेल, कहानी ले,
रोज-रोज नवा गियान सिखोथे.

हिंदी अंगरेजी अउ गणित,
नवा-नवा तकनीक म पढ़बो.
निक्लर, दीक्षा, निपुण ऐप,
अउ वर्क बुक ले जिनगी ल गढ़बो.

कलेश्वर जइसन गुरुजी हमार,
शिक्षा म सुग्घर चतुर बनाथे.
खेल-खेल म शिक्षा देके,
गियान के नवा-नवा रद्दा बताथे.

मेरे घर में है गुलदान

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग



मेरे आंगन में छोटा सा है गुलदान.
नित मिलता है, फूलों का मुस्कान.

जहां रंग बिरंगी तितली आती है.
बगिया में चारो ओर मंडराती है.

एक एक फूलों तक वो जाती है.
सब के कान में गीत सुनाती है.

फिर मजे से कर लेती है रसपान.
मेरे आंगन में छोटा सा है गुलदान.

रविन्द्र

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



बच्चा एक रविन्द्र,
मस्ती करता दिनभर,
पढ़ाई में सिकन्दर,
कूदने में बन्दर,
गाने में सुन्दर,
बैठा क्लास के अन्दर,
खाता है चुकंदर.

हाथों की धुलाई

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



हाथों की हम करें धुलाई,
बिमारी को दूर भगाई.
हाथों में पानी लगाई,
साबुन से फिर करें घिसाई.
उंगलियों की झगड़म -झगड़ाई.
मगरमच्छ ने दांत दिखाई,
हाथों की हम करें धुलाई,
बिमारी को दूर भगाई.
अंगूठे की घुमाई,
फिर नाखूनों की करें सफाई,
गड्ढों की फिर बारी आई.
हाथों की हम करें धुलाई,
बिमारी को दूर भगाई.
अब कलाई में रगड़म, रगड़ाई,
पानी से फिर करें धुलाई.
हाथों की हम करें धुलाई,
बिमारी को दूर भगाई.

मुर्गों की लड़ाई

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



दो मुर्गे करते हैं लड़ाई,
आओ देखें क्या होता है भाई.
एक ने मारा पंजा,
दूसरे ने मारी पंख,
दोनों उड़कर मारे चोंच,
होने लगी खेल में बड़ाई.
एक का कट गया पंख,
दूसरे की थाई,
आओ देखें क्या होता है भाई.
एक जीत कर हो गया घायल,
दूसरा हार कर मारा गया आई.
दो मुर्गे करते हैं लड़ाई,
आओ देखें क्या होता है भाई.

सब लोगों ने ताली बजाई,
मुर्गों ने यही किस्मत पाई,
घर में होती है पुजाई
होटलों में होती है कटाई.
आओ देखें क्या होता है भाई.

छलाँग

रचनाकार- शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग

बच्चों के सृजनात्मक गुणों को विकसित करने के लिए शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग में जापानी कला ओरिगमी प्रशिक्षण कार्यशाला छलाँग कार्यक्रम के तहत आरंभ की गयी.



प्रशिक्षक राम कुमार वर्मा व प्रधान पाठक ने बताया कि बौद्ध भिक्षुओं द्वारा धर्म ग्रंथों के सभी पृष्ठों में तरतीबवार रखने से प्रेरित होकर जापानियों में अपने जीवन में सभी तरह की सामग्रियों को संभाल कर रखने की आदत का विकास हुआ. साथ ही इनके द्वारा अपने देवी-देवताओं को रंग बिरंगे कागज के फूल चढ़ाकर अर्पित करने की परंपरा के प्रचलन की जानकारी दी गई. इस कड़ी में एक बीमार बालिका द्वारा 1000 से अधिक सारस पक्षी बनाने की बात कही गई थी, पर इस बीच इस को मृत्यु हो जाने से वह अपने संकल्प को पूरा नहीं कर पाई. पर जब जापान वासियों और नन्हीं बालिकाओं को उस बीमार बालिका के संकल्प की जानकारी हुई, तो उन्होंने एक हजार से अधिक सारस पक्षी कागज के बनाकर अर्पित किए. ताकि उसकी आत्मा को शांति मिले. तब से जापान में अलग-अलग तरह के नमूने ओरीगमी कला के अंतर्गत बनाए जाने का प्रचलन प्रारंभ हो गया. इसमें वर्गाकार आयताकार कागज लेकर अलग-अलग पशु-पक्षियों के नमूने, फूलों के नमूने सहित अन्य सामग्रियाँ बनाई जाती हैं. इस कला को सरलता से सीखा जा सकता है. इसमें ज्यामितीय आकृतियों का भी निर्माण होता है. इसके माध्यम से बच्चों को गणित की अवधारणाओं से प्रत्यक्ष रूप से अवगत कराया जा सकता है. बच्चे रंग-बिरंगे कागज को मोड़कर खुश होते हैं और नई-नई आकृतियाँ बनने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं. इस तरह पाठ्यक्रम शिक्षण के साथ ही बच्चों के सृजनात्मक गुणों को बढ़ाने के लिए जापानी कला ओरिगमी एक सशक्त माध्यम व कला के रूप में स्थापित है. इससे बच्चों में किसी काम को लगन से करने, उसके हाथों की कुशलता को बढ़ाने में मदद मिलती है.

छुट्टी आई

रचनाकार- श्रीमती प्रियंका श्रीवास, बस्तर



छुट्टी आई, छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाई.
खेल होंगे ढेर सारे,
गुड़िया, बस, कार और गुब्बारे.
खेलेंगे हम छुपम-छुपाई,
नहीं देंगे किसी को दिखाई.
छुट्टी आई छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाई.
खेलेंगे लूडो, शतरंज,
करेंगे दिमाक को बुलंद.
खेलेंगे क्रिकेट फुटबाल,
थककर हो जायेंगे बेहाल,
मां हमको लेने आई.
छुट्टी आई, छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाई.
दिन भर करते भागम-भगाई,

रात में हम करें पढ़ाई,
छुट्टी आई, छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाईं.
फिर सुबह से वही घुमाई,
बकरी के संग दौड़ लगाई,
आजादी से घूमे भाई,
छुट्टी आई, छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाईं.
दोपहर में आम तुड़ाई,
शाम को हल्ला मचाई,
रात को हम करें पढ़ाई,
छुट्टी आई, छुट्टी आई,
ढेर सारी खुशियां लाईं.

गर्मियों की छुट्टी

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम
विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर



लग गई छुट्टी गर्मियों की,
चलो करें तैयारी.
नानी के घर जाना है,
बांधो बस्ता बोरी.

परिक्षा हो गई खत्म,
हटा पढ़ाई का बोझ.
फिर भी मम्मी क्यों कहे?
बेटा, पढ़ा कर रोज

अब तो हम हो गए स्वतंत्र,
खाएंगे ठंडी कुल्फी.
आम खाएंगे खट्टे- मीठे,
पिएंगे लस्सी - निंबूपानी.

मुंह सूखता रहे दिन रात,
भले कितना भी पियो पानी.
गर्मी पसीना सबके साथ,
चाहे हो कहीं की रानी.

चलो सहेली! बाहर खेलें,
यह क्या! गर्म हवाएँ.
छोड़ो! घर में बातें करेंगे,
वरना लेनी होंगी कड़वी दवाएँ.

कड़ी धूप और गर्मी से,
निकलना हो जाता है कठिन.
पंखे के नीचे, कुलर के सामने,
बैठे कटे अब सारा दिन.

पहेलिया

रचनाकार- जानवी कश्यप, सातवीं, तारबहार बिलासपुर



(1) सभी मुझे दोष है देते,
पर मैं सबके काम भी आता?

(2) अंग्रेजी में तीन अक्षरों का हूँ,
कोई भी छू नहीं सकता पर देख सकता है?

(3) आसमान में रहता,
बरसात में निकलता,
सात रंगों का हूँ?

(4) तीन पैर का हूँ, सभी को हवा देता?

उत्तर-(1) मोबाइल, (2) सूरज (Sun), आसमान (sky), (3) इंद्रधनुष, (4) पंखा

मेरे पापा

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार, बिलासपुर



मेरे पापा मेरी जान है
उनसे ही मेरी पहचान है
मेरे लिए उनके जैसा कोई नहीं है
न मैं खुद, न भगवान है.

भगवान का दिया हुआ सबसे बड़ा वरदान है
मेरे पापा मेरे चहरे की मुस्कान है
पापा! दुख छुपा-कर हस्ते है
हमें खुश रखने के लिए सारी मेहनत करते है.

बचपन में हाथ पकड-कर चलना सिखाया
बुरे वक्त में संभलना सिखाया

पापा की जगह कोई नहीं ले सकता
खुद भगवान भी आ जाए तो ऐसे प्यार नहीं दे सकता

मेरे पापा का विश्वास हूँ, मैं
उनके सपनों को पूरा करने की आस हूँ, मैं
उनके सपनों को पूरा करने में जान लगा दूंगी
अपने पापा की गर्विता हूँ, मैं.

अपने जन्मदिन पर

रचनाकार- अनिता राव 'मासूम'कक्षा 12 वीं, शास.उच्च.माध्य.विद्या.करेली
बड़ी, जिला धमतरी



मैं घी के दीप जलाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं दो-दो पेड़ लगाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
केक शायद मुझे इतना पसंद नहीं है पर,
गाजर का हलवा खिलाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

मैं कोई किताब लाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं खुद को कहीं ले जाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
मैं वही पुराने कपड़े पहन लूँगी भले ही,
गरीबों को कपड़े दिलाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

मैं अक्षर ज्ञान कराऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं नेकी की दीवार बनाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

पार्टी का तो मुझको पता नहीं है पर,
मैं यज्ञ हवन करवाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

बुजुर्गों को फोन लगाऊँगी मेरे जन्मदिन पर,
मैं आशीर्वाद खूब पाऊँगी मेरे जन्मदिन पर.
रोज मैं बाहर रहती हूँ कामों में,
घर पर समय बिताऊँगी मेरे जन्मदिन पर.

सिपाही

रचनाकार- कामनी साहू कक्षा 12 वीं, शास.उच्च.माध्य.विद्या.करेलीबड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



घर परिवार से दूर रहना होगा,
हर गम हर सितम सहना होगा.
पत्थर सा खुद को मजबूत बनाना है,
मुझे सिपाही बनकर दिखाना है.

बॉर्डर पर हर जंग लड़ना होगा,
अपने देश की रक्षा करना होगा.
हर दुश्मनों को मार गिराना है,
मुझे सिपाही बनकर दिखाना है.

देश के गद्दारों को मारना होगा,
सिपाही का फर्ज निभाना होगा.

मां-बाप का मान बढ़ाना है,
मुझे सिपाही बनकर दिखाना है.

पत्थर को बर्फ सा पिघलाना होगा,
काली रातों को भी दिन बनाना होगा.
हर नासमझ को समझाना है,
मुझे सिपाही बनकर दिखाना है.

हमें समझो तो जरा

रचनाकार- ईशा सेन "आस्मां" कक्षा 12 वी, शास उच्च माध्य विद्या.करेली बड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



दिल में है अनोखा अरमान भरा,
कोई समझे दिल को तो मजाक लगता है बुरा,
हम भी हैं उन लड़कों के जैसे ही लड़कियां,
हम भी कर सकते हैं लड़कों के जैसे काम बड़ा,
हम भी तो हैं इंसान आप हमें समझो तो जरा,

अभी ही तो इस दुनिया में आए हैं,
हमें संभलने दो जरा,
हम भी जीत हासिल कर दिखलाएंगे,
हमें एक मौका तो दो जरा,
हम भी चमकेंगे जैसे चमकते हैं सोना खरा,
हम पर विश्वास कर हमें बाहर निकलने तो जरा,
हम भी तो हैं इंसान आप हमें समझो तो जरा,

इस संसार में रहते हैं लोगों अनेक,
हमें तो बनाना है अपनी दुनिया नेक,
हमें भी तो दो कागज कलम और पुस्तक एक,
हमने भी देखा है सपना सुनहरा,
हम भी तो हैं इंसान आप हमें समझो तो जरा,

बेटी को कचरा और बेटों को मत समझो हीरा,
क्योंकि जो एक राजा भी ना कर सका वह कार्य कर गई दासी मीरा,
हम भी तो हैं इंसान आप हमें समझो तो जरा

एक महिला की पीड़ा

रचनाकार- नियति साहू 'कायनात' 12वी, शास.उच्च माध्य विद्या.करेली
बड़ी, मगरलोड धमतरी



सुबह जल्दी उठती हूँ
करती हूँ सारा काम.
न दिल को चैन है
न शरीर को आराम.

बच्चे रोते रहते हैं
और मैं भी परेशान.
उनको रोते देखकर
बंट जाता है ध्यान.

खुद गीले में भी होकर

बच्चों को सूखे में सुलाती हूँ.
सबकी बात मानने पर भी
डॉट सभी की खाती हूँ.

आग धुएँ को सहकर
मैं भोजन बनाती हूँ.
हर पीड़ा सहकर भी
खाना मैं खिलाती हूँ.

सबकी सारी ज़रूरतों का
रखती हूँ मैं ख्याल.
पर कोई समझता नहीं मुझे
न कोई पूछता हाल.

एक पल में कोई भी मेरे
स्वाभिमान को ठेस पहुंचाता है.
मैं चाहे कितनी भी रोऊँ
मुझे समझ न कोई पाता है.

लोगों का तो काम है कहना

रचनाकार- भारती साहू 'धड़कन'कक्षा 12 वीं, शास.उच्च.माध्य.विद्या.करेली
बड़ी, मगरलोड जिला-धमतरी



लोग यहाँ आते हैं, जाते हैं,
अपनी औकात दिखाते हैं.
किसी के लिए तुम न रोना,
लोगो का काम है कहना.

हो तुम आज जैसे,
रहना हमेशा ही वैसे.
अपने हक में तुम लड़ना,
लोगों का काम है कहना.

गलत का साथ न देना,
सही राह तुम दिखाना.
दर्द पड़ेगा तुमको सहना,
लोगो का काम है कहना.

लोग बुराई करे करने दो,
तुम उसे दिल में न लो.
दर्द न तुम खुद को देना,
लोगों का काम है कहना.

मंजिल तो मिल जायेगी,
कुछ मुसीबतें भले आयेगी.
सीधे राह चलते रहना,
लोगों का काम है कहना.

सैनिक

रचनाकार- लिलम बघेल कक्षा 10 वीं, शास उच्च माध्य विद्या.करेली बड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



सीमा पर जाकर जो
हमारे लिए लड़ता है
हमें अपना समझकर
जो हमारे लिए मरता है

जो चीख चीख लगाएं
जय हिन्द का नारा
जो गर्व से कहें यह
प्यारा देश है हमारा

हमारा हिन्दुस्तान है
पुरे जगत से न्यारा

इस देश में रहते हैं
यह गौरव है हमारा

मातृभूमि की रक्षा
जान देकर करते
जो हमारे लिए हर
दुश्मनों से लड़ते हैं

दस्तूर है हमारा

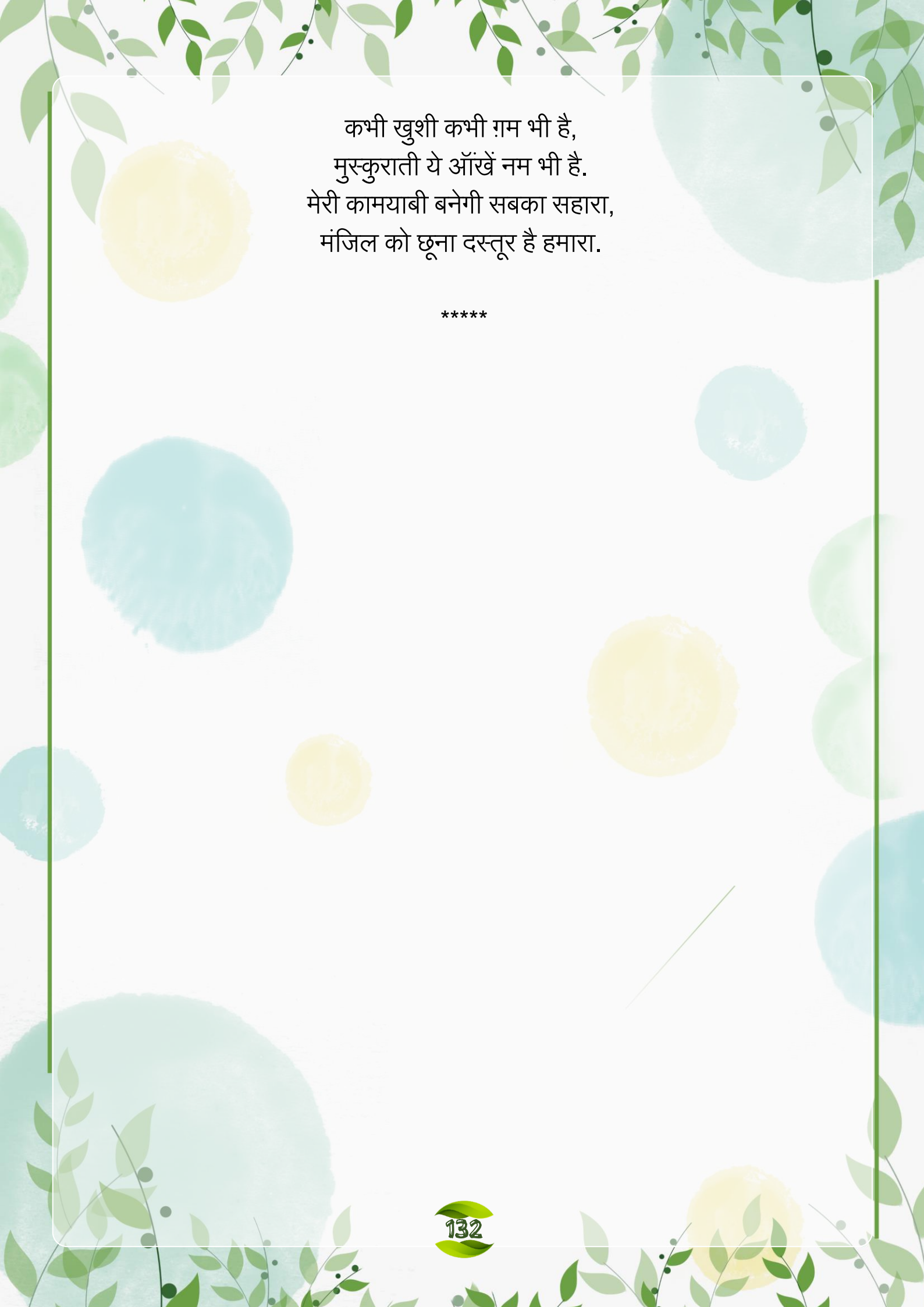
रचनाकार- रेश्मा साहू 'झाँसी' कक्षा 12 वीं, शास उच्च माध्य विद्या.करेली बड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



हार को हमें हराना है,
हर राह को आजमाना है.
मेहनत कर रही मुझे इशारा,
मंजिल को छूना दस्तूर है हमारा.

न हमारा, न तुम्हारा,
दुश्मनों को दूंगी जवाब करारा.
मुकाम है समंदर का किनारा,
मंजिल को छूना दस्तूर है हमारा.

जिंदगी की यही रीत है,
कभी हार तो कभी जीत है.
चमकूंगा बन कर नया सितारा,
मंजिल को छूना दस्तूर है हमारा.



कभी खुशी कभी गम भी है,
मुस्कुराती ये आँखें नम भी है.
मेरी कामयाबी बनेगी सबका सहारा,
मंजिल को छूना दस्तूर है हमारा.

जब गरमी के दिन आथे

रचनाकार- परमेश्वरी साहू कक्षा 12 वीं, शास उच्च माध्य विद्या.करेली बड़ी,
मगरलोड जिला धमतरी



अप्रैल मई के महिना आथे ,
तब गरमी हद ले बढ़ जाथे.
रातकिन लाइट गुल हो जाथे,
जब गरमी के दिन आथे.

चेंच भाजी अउ बरी मिठाथे,
बासी आमा चटनी मा खवाथे.
मोला संगी अब्बड़ मज़ा आथे,
जब गरमी के दिन आथे.

तरिया म सब कूद कूद के नहाथे,
रंग रंग के खजानी ल लेवाथे.
अपन दाई ददा ल अड़बड़ सताथे,
जब गरमी के दिन आथे.

रोज रोज गुल्फी ला सब खाथे,
बाजार म कलंदर लेवाथे.
करसी के ठंडा पानी हर सुहाथे,
जब गरमी के दिन आते.

पाका पाका आमा ल सब खाथे,
ए देख के मोर मन ललचाथे.
सर मन स्कूल के रिजल्ट सुनाथे,
जब गरमी के दिन आथे.

किसान बन गया है भगवान

रचनाकार- ईशा सेन "आस्माँ" कक्षा 12वीं(वणिज्य),
शास.उच्च.माध्य.विद्या.करेली बड़ी, मगरलोड जिला धमतरी



ये खेतों में अन्न उगाकर देते हैं अन्न का दान,
अमीरी-गरीबी छोड़ किसान बन गया भगवान.

न अनाज की कमी यहां पर न भूखा ये जहान,
धरती पर उतरे है ये बन कर नेक इंसान.
अमीरी-गरीबी छोड़ किसान बन गया भगवान,

घमंड को छोड़ कर इंसानियत को लो पहचान,
एक दूजे में भेद कर मत बनो तुम हैवान.
नेता हो या किसान इस जग में है एक समान,
अमीरी-गरीबी छोड़ किसान बन गया भगवान.

ये सब की भूख मिटा कर बन गया है महान,
इस व्यक्ति की तुम मत भूलो करना सम्मान.
न है ये स्वार्थी, न है उनमें अभिमान,

अमीरी गरीबी छोड़ किसान बन गया भगवान.

कठिन परिस्थितियों में सच्चा है इनका ईमान,
मुस्तक़बिल का संजोय वे एक नया अरमान.
मैं भी किसान की बेटी हूँ मुझको है अभिमान,
अमीरी गरीबी छोड़ किसान बन गया भगवान.

मेरा भारत मुस्कुरा रहा है

रचनाकार- मीना साहू कक्षा 12वीं करेली बड़ी, मगरलोड जिला धमतरी



विश्व में ही नहीं अंतरिक्ष
में भी तिरंगा लहरा रहा है
मेरा भारत मुस्कुरा रहा है

मिट्टा के आपसी भेदभाव को
आपस में मेल बढ़ा रहा है
मेरा भारत मुस्कुरा रहा है

दिल से दुश्मनी को मिटाकर
दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है
मेरे भारत मुस्कुरा रहा है

पिछड़े देशों की मदद करके
अपना मानव धर्म निभा रहा है
मेरा भारत मुस्कुरा रहा है

विश्व में अपनी पहचान बनाकर
तारे जैसा जगमग आ रहा है
मेरा भारत मुस्कुरा रहा है

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



1. पढ़ने-लिखने का यह स्थान, मिले यहाँ पर अक्षर ज्ञान.
लगता जैसे पावन धाम, शीघ्र बताओ इसका नाम.
2. नहीं चुराता इसको चोर, दुर्बल भी बनता शहजोर.
बाँट सके न इसे परिवार, पद, पैसा यह पालनहार.
3. सदा झुकाकर अपना शीश, पाता गुरुवर से आशीष.
आज्ञाकारी यह तो शिष्य, लगन परिश्रम गढ़े भविष्य.
4. प्रथम आप हैं, तब भगवान, देते हमको अक्षर ज्ञान.
वंदनीय हैं सबके आप, हरते सारे दुख संताप.

5. नहीं पर होते पात, बिन मुख हमसे करतीं बात.
वर्ण, वाक्य के हैं भंडार, ज्ञान, कला का यह आधार.
6. परत-परत है कोरा देख, कलम चला लिख लो तुम लेख.
स्याही संगत भरते भाव, कोई फाड़ बनाता नाव.
7. काला-काला इसका रंग, खिलता पाकर खड़िया संग.
लगे अधूरा यह बिन चाक, कक्षा अंदर इसका धाक.
8. छोटा होता है आकार,
होता स्याही से जब मेल, निकले अक्षर रेलम-पेल.
9. पुस्तक-कापी रखे सँभाल, पीठ सवारी करे कमाल.
रंग-बिरंगा इसका रंग, पढ़ना-लिखना इसके संग.
10. लिखने का होता अभ्यास, पत्थर चौरस भरे उजास.
लिखो मिटाओ अपने ढंग, साथ निभाए खड़िया संग.

1. विद्यालय, 2. विद्या, 3. विद्यार्थी, 4. अध्यापक, 5. पुस्तक, 6. कापी, 7. श्यामपट्ट, 8. कलम, 9. बस्ता, 10. स्लेट पट्टी

मेरी प्रिय अध्यापिका

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार, बिलासपुर



पहले थी मैं, अकेली गुमसुम सी,
बैठी अकेले कोने में.
न जाने आई कितनी ज्ञान की देवियाँ.
पर न जान पाई क्या है, मेरे दिल के कोने में.

एक समय में आई वो परी,
मुस्कुरा-कर पूछा मेरा नाम.
लगा मेरी जिन्दगी बदलने वाली है.
उनके आने से मेरी जिन्दगी में आई खुशियों की सुबह शाम.

न बोला था मैंने चार के बीच,
खड़ा कर दिया सीधे मंच में.
कहा तू आगे बढ़ ,
मैं खड़ी हूँ पीछे तुझे थामे.

उनकी बाते मेरे दिल को छू जाती हैं.
एक वही है, जो मुझे मेरे ही हुनर से मेरी ही पहचान करवाती है.

हमे हमेशा सही दिशा दिखाती हैं.
वो सिर्फ मेरी ही नहीं
सारे विद्यार्थियों की प्यारी है.

स्पर्श

रचनाकार- वासु कुर्रे



एक स्पर्श ऐसा,
जो तन -मन को आनंदित कर दे.
एक स्पर्श ऐसा,
जो तन -मन को भाव से भर दे.
एक स्पर्श ऐसा मां का,
हर दर्द भुलाकर चैन से सुला दे.
एक स्पर्श ऐसा पिता का,
जो आसमान की ऊँचाई तक पहुंचा दे.
एक स्पर्श ऐसा गुरु का,
जो जीवन महान बना दे.
एक स्पर्श ऐसा बच्चे का,
जो भाव विभोर कर दे.
एक स्पर्श ऐसा मित्र सखा का
जो गम को सुख में बदल दे.
एक स्पर्श ऐसा मानव का
जो सभी जीव- जंतु को अपनत्व से भर दे.

एक स्पर्श ऐसा बड़ों का,
जो कर्त्तव्य पथ पर ले जाएं.
एक स्पर्श ऐसा अपनों का
जो जीवन को जीवंत कर दे.

झुकना - विनम्रता

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम
विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर



झुकने से न होता कोई तुच्छ समान,
झुकने से तो बनता है व्यक्ति महान.

झुकने का अर्थ विनम्र होना है,
न की छोटा और तुच्छ होना है.

ऊँचे पहाड़ पर तो झुककर ही चढ़ा जाता है,
खड़े व्यक्ति को तो हवा का झोका गिरा जाता है.

झुकता तो वही है जिसमें जान है,
अकड़ना तो मुर्दे की पहचान है.

बड़े से बड़े पेड़ को हवा तुफान गिरा जाता है,
पर घास का कुछ न बिगड़ पाता

क्योंकि वो झुक जाता है.

सफलता हेतु विनम्र रहो सामने इस पीढ़ी के,
तभी तो खुलेंगे दरवाजे उन्नति की सीढ़ी के.

अगर गलती हो गई तो उसे छुपाओ मत,
झूठ बोलकर इस तरह से दबाओ मत.

गलती हुई तो स्वीकार करो,
पश्चताप करो और सुधार करो.

भले ही कितना भी सफल हो जाओ,
अहंकार और घमंड में न डूब जाओ.

सम्मान करो सबका विनम्र होकर,
चाहे वो हो मंत्री या उसका नौकर.

बड़ो का आशीर्वाद लो हमेशा पाँव छूकर,
यही आशीर्वाद एकदिन तुम्हे चढ़ाएगा ऊपर.

गर्मी छुट्टी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, दुर्ग



लग गई गर्मी की छुट्टी
मामा के घर जाऊँगा.
रोज सबेरे बाग में जाकर,
पके आम मैं खाऊँगा.
झुलूँगा मैं डाल डाल पर,
कसरत मेरी हो जाएगी.
खुश होकर मैं नाचूँगा,
जब कोयल गाना गाएगी.
नानाजी के संग शाम को
नदी किनारे जाऊँगा.
तरह तरह के सुंदर सुंदर
चकमक पत्थर लाऊँगा.

सुनहली तितली

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



'एक' सुनहली नाम की बहुत ही सुंदर पंखों वाली तितली थी सुनहली तितली को घूमना सैर करना अच्छा लगता था, वह कोई काम नहीं करना चाहती थी यहाँ तक कि उसे स्कूल जाना भी बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था, उसकी मम्मी उसको समझाती पर वह बिल्कुल बात नहीं मानती, एक दिन उसने तय कर लिया था कि वह स्कूल नहीं जायेगी.

और घूमने घर से बाहर निकल गई और एक बाग में पहुँच गई वहाँ उसने देखा तो सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे.

बाग में एक छोटा सा ताल था वहाँ उसे एक बतख मिली सुनहली ने उससे कहा, चलो मेरे साथ घूमने खेलने, बतख ने मना कर दिया कि मुझे अपने बच्चे को तैरना सिखाना है, थोड़ी दूर पर सुनहली को मिली गौरैया, उससे सुनहली ने कहा चलो घूमेंगे, गौरैया ने कहाँ मुझे दाना चुगना है अभी काम करना है, सुनहली फिर आगे बढ़ी उसे मिला बादल, उसने बादल से कहा-चलो खेलते हैं बादल ने कहा अभी मुझे बारिश करनी है.

सुनहली फिर आगे बढ़ी उसे मिला मोर, उसने मोर से कहा-चलो खेलते हैं मोर ने कहा मुझे नृत्य करना है परेशान होकर सुनहली सोचने लगी कि सभी अपने काम में लगे हुए हैं कोई भी सैर करना, घूमना नहीं चाहता, वह सोच ही रही थी कि उसे फूलों के पास भंवरा दिखा, सुनहली उसके पास जाकर बोली, चलो ना घूमते हैं, खेलते हैं, भंवरे ने कहा हाँ मेरा काम हो गया है चलो, इतने में वहाँ बतख आ गई उसके बच्चे पानी में तैर रहे थे, दाना चुगकर गौरैया भी आ गई, मोर नाचने लगा, बादल

ने पानी बरसाया, फूल खिल गये थे तितली भौरा फूलो के ऊपर मंडराने लगे, तितली फूलों के ऊपर बैठकर सोचने लगी कि काम करना पहले जरूरी है फिर घूमना,और सैर करना, मैं भी कल से स्कूल जाऊँगी, और खूब मन लगाकर पढाई करूँगी.

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें पहले अपना काम करना चाहिए ,उसके बाद घूमना फिरना चाहिए.

किलोल

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली



नवअंकुरो की किलकारी
बच्चो की मोहक मुस्कान है.
बच्चे बड़े दादा दादी
किलोल सबकी जान है.
ज्ञान का अतुलित भंडार है
गुणों की अनुपम खान है.
जीवन के हर रंग दिखाती
यथार्थ का देती ज्ञान है.
गीत, कहानी, कविता सुनाती
समरसता की पहचान है.
किलोल का कलेवर सुंदर
संपादक मंडल भी सुजान है.

बाल पत्रिकाएं होती, मनभावन
सबमे किलोल की सर्वाधिक शान है.
हर लेखक का मान बढ़ाती
सबको देती सम्मान है.
किलोल में समाहित हमारी लेखनी
दिलाती हमको भी स्वाभिमान है.

दरोगा और दरोगा साहब

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



गाँव का चौपाल, बरगद पेड़ के नीचे

गहमा-गहमी चारो तरफ कोलाहल!! गाँव के सारे जनमानस एक दूसरे से घटी-घटना के बारे में बिना रुके झुंड के झुंड होकर वार्तालाप कर रहे हैं. लोग किसी अप्रत्याशित परिणाम के बारे में सोच-सोच कर भयभीत हैं. तभी अचानक पुलिस की कमांडर जीप सायरन बजाते चौपाल के पास पहुँचती है. जैसे ही जीप चौपाल के पास पहुँचती है. वहाँ सन्नाटा छा जाता है. मानो पाला मार गया हो. उस जीप से एक अपराधी जिसके हाथों में हथकड़ी लगी हुई है नीचे उतारा जाता है. साथ में दो हवलदार और एक दरोगा भी उतरता है.

गाँव का मुखिया सरपंच चौपाल से लगी खाट से उठकर दरोगा से कहते हैं-

नमस्कार साहब जी.

आइए आइए साहब बैठिए.

और उनको एक अलग खाट में बिठाते हैं, और सरपंच बगल में लगे खाट में बैठ जाते हैं.

तभी दरोगा साहब चिल्लाते हुए कहते हैं-

अरे!! कोतवाल कहा हो?"

कोतवाल थरथराते हुए-

जी हुजूर!जी हुजूर!"

कहते हुए दरोगा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता हैं.और कहता है-

"कहिए हुजूर क्या हुक्म है?. तब दरोगा जी कहते हैं- सरपंच और पंचों का पंचनामा हेतु हाजिर करो."""

कोतवाल सभी को हाजिर करता है.

दरअसल जो कैदी पकड़ा गया है, वह अवैध रूप से अपनी बाड़ी में कच्ची शराब बनाते हुए पकड़ा गया,जिसको मुखबिरी के आधार पर पकड़ के चौपाल में उपस्थित किया गया है.

तभी दरोगा साहब अपराधी को घुड़कते हुए कहते हैं-

"क्या नाम है तुम्हारा ? द..s.द s s s दारोगा.... साsss.. साहब ! क्या बकते हो ?"" पूरा नाम बताओ?"

तब अपराधी कहता है-

दरोगा लाल!

दरोगा तुम हो कि मैं हूँ ?

अपराधी कहता है-

आप हो और मैं भी!!

और मुस्कुराने लगता है.

दरोगा उसकी इस धृष्टता से लाल-पीले हो जाता है.अपराधी के जवाब से चौपाल में ठहाका गूंज जाता है.कोतवाल जोर से चिल्लाता है-

हल्ला खामोश! हल्ला खामोश!"

पुनः दरोगा साहब पूछते हैं-

तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

साहेब! साss..साहब जी!"

दरोगा कहता है-

क्या बक रहे हो? तुम्हें पता है, क्या कह रहे हो? पता है साहब जी."

पुनः दरोगा कहता है-

"पूरा नाम बताओ? अपराधी कहता है- साहेब लाल."

चौपाल में फिर वही ठहाका!

खमोश! हल्ला खामोश!

फिर सन्नाटा छा जाता है.

पुनः दरोगा पूछते हैं-

तुम्हारे दादा जी का क्या नाम है?

तब अपराधी कहता है-

मुंशी!

तब तो दरोगा कंझा के सिर पकड़ लेते हैं.

और किटकिटाते हुए कहते हैं. ये क्या मजाक बना रखा है. जब देखो तब"

कहते हुए चुप हो जाते हैं. कुछ समय चुप रहने के बाद-

पूरा नाम बताओ?

मुंशी लाल. अपराधी कहता है.

तब वह दरोगा तिलमिलाते हुए वहाँ उपस्थित पंच-सरपंच से उस अपराधी के बारे में सच्ची जानकारी लेते हैं. और पूछते हैं-

"क्यों भाई यह जो अपराधी बोल रहा है वह क्या सही-सही है? तभी सरपंच खड़ा होकर कहता है- जी दरोगा साहब! बिल्कुल सच्ची बात है. ""

तब दरोगा आवाक हो जाते हैं. और झेंप कर मुस्कुरा देते हैं और कहते हैं-"ठीक है! ठीक है!

अपराधी कच्ची शराब बनाकर कानून अपने हाथों लिया है.जो समाज और देश के लिए घातक है.इसकी सजा तो जरूर मिलेगी.

तब वह अपराधी दरोगा के चरणों में गिर जाता है.और गिड़गिड़ाते हुए कहता है-

मुझे माफ़ करदो हुजूर! मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है. मैं आज कसम खाता हूँ, की आज के बाद यह अपराध मैं कभी न करूँगा,न किसी को करने दूँगा.

उसके अपराध कुबूल करने और सुधरने की बात को सुनकर दरोगा उसको उसकी सजा कम कराने की समझाईस देते हैं.और फिर सिपाहियों के द्वारा अपराधी को जीप में बिठाया जाता है. इस दृश्य को देखकर चौपाल में पुनः सन्नाटा छा जाता है,और सभी लोगों को

मालुम हो गया था की बुरे कर्म का परिणाम हमेशा बुरा होता है.

अभी तो कदम बढ़ाया है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



अभी तो कदम बढ़ाया है
तेरा दूर मंजिल बाकी है
मंजिल दूर तो दिखती है
परन्तु मुमकिन बाकी है.

कभी भी साहस मत खोना
तेरे मन का विश्वास बाकी है
कभी खुद को मत भूलाना
अभी तेरा जज्बात बाकी है.

नामुमकिन कुछ नहीं होता
अभी तो तेरा प्रयास बाकी है
हौसला तुम कभी मत खोना
तेरे उड़ानों की आस बाकी है.

मंजिल दूर नहीं राह निहारे हैं
तेरा कदम बढ़ाना बाकी है
एक बार चलना तो शुरू कर
तेरा मंजिल पाना बाकी है.

निराशा को लगा दे ठिकाना
अभी तो तेरा मुकाम बाकी है
कमर कस ले और यह ठान ले
अभी कोशिश तमाम बाकी है.

धन-धन हे मोर भाग ल ओ दाई

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु"



धन-धन हे मोर भाग ल ओ दाई
मैं हर जनम ले हंव तोर कोरा म
तोर कोरा हे दाई पावन भूँईया
रहीथंव मै आशीष के अगोरा म.

भाग अपन मै ह सहंरावंव दाई
तोर सेवा के सौभाग्य मिले हे
रज-रज म तोर अनमिट गाथा
जेकर कथा-कहानी ह लिखे हे.

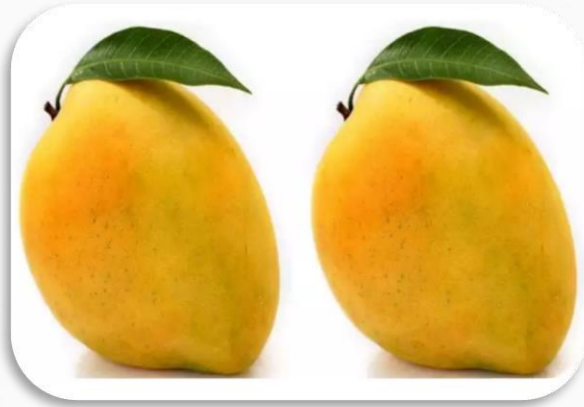
घर-घर चौंरा देव-धामी के डेरा
ओनहा-कोनहा तीर म बिराजे हे
तोर माटी के हे अड़बड़ महातम
जईसे जस के शंख हर बाजे हे.

छत्तीसगढ़ के छत्तीस ठन कीला
जेमा लोक संस्कृति के छाप हे
ए धरती राम-लखन के ममयारो
जिहाँ कौशल राज के प्रताप हे.

इही म हे उपजाऊ कछरी माटी
जेमा बोहाए महानदी के धार हे
एकर लहरा म इतिहास लिखाए
जेकर गाथा झलके अपरम्पार हे.

सुंदर पीले-रसीले आम

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



सुंदर पीले-रसीले आम है
फलों का राजा तेरा नाम है.

गर्मी में तू बहुत आता है
सबके मन को लुभाता है.

तुझसे सजता बाजार है
गर्मी में होता गुलजार है.

बच्चों के मन को भाते हैं
ये मजे से चुसकर खाते हैं.

ये खूब चटकारा लगाते हैं
खूब खाते और खिलाते हैं.

मैं भोला-भाला बच्चा हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"



मैं भोला-भाला बच्चा हूँ
मैं मन से बड़ा सच्चा हूँ.

मैं सुंदर सबसे अच्छा हूँ
मैं फूलों का गुलदस्ता हूँ.

मैं घर-घर की फुलवारी हूँ
मैं ही घर की किलकारी हूँ.

मैं घर-आंगन सजाता हूँ
मैं सबके मन को भाता हूँ.

मैं माँ का लाडला प्यारा हूँ
मैं पिता का राज दुलारा हूँ.

देश भक्त

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ती



एक समय की बात है, देश की सीमा से लगे एक गांव में आतंकवादी ने कब्जा कर लिया और वहां लूटपाट मचा दी. सैनिकों को सूचना मिलने पर सैनिक उनसे युद्ध के लिए तुरंत निकल पड़े. रास्ते में घनघोर बारिश हुई. रास्ते पानी से लबालब हो गए .सैनिकों को आगे बढ़ने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. उन्हें आगे नदी पार करके गांव तक चलना था .लेकिन नदी में बाढ़ आने के कारण आगे जा नहीं पा रहे थे. उन्हें नदी पार करने के लिए कोई साधन नहीं मिल रहा था तथा उन्हें अपने हथियारों की भी सुरक्षा का ध्यान रखना था और पीछे भी नहीं लौट पा रहे थे. अचानक घनघोर बरसात और काली रात में एक आशा की किरण के रूप में सुनसान घर दिखाई दिया जहां सैनिक पहुंचे. वहां जाकर एक बूढ़ी औरत को रसोई घर में खाना बनाते देखा, बूढ़ी औरत ने सैनिकों को बुलाया और आगमन का कारण पूछा सैनिकों ने अपने आने का कारण बताया तब बूढ़ी औरत ने सैनिकों को अपने घर के छत का लकड़ी दी .जिससे सैनिक लकड़ी को नाव जैसा रूप देकर नदी पार कर लिया और आतंकवादी को उस गांव से खदेड़ दिया.

बूढ़ी औरत ने सिद्ध किया कि देश प्रेम और देश भक्ति से बड़ा कोई धर्म नहीं है देश है तो हम हैं, ऐसा मानकर देश की सेवा करना चाहिए. बूढ़ी औरत को ज्ञात था कि घर पुनः बनाया जा सकता है लेकिन उस गांव को उन आतंकवादियों से मुक्ति दिलाना बहुत ही आवश्यक था, इसलिए बूढ़ी औरत ने बिना देर किए अपने देशभक्ति का परिचय दिया.

देखो सपने क्या कहते

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7, स्वामी आत्मानंद शेख गम्फार अंग्रेजी माध्यम
विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर



क्या है सर में दर्द या हो गई तबियत खराब,
अच्छा नहीं लग रहा या करना होगा आराम?
दोस्तों से गप्पे मारने में दिल भर गया,
या मोबाइल देखने का मन कर गया?
कब तक यूँ टालोगे मुझे ऐसे बहाने देकर,
कब तक यूँ मारोगे मुझे ऐसे दूर भागकर?

सपने सिर्फ देखने के लिए नहीं होते,
बहाने देकर टालने के लिए नहीं होते.
मुझे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करना ही होगा,
एकनिष्ठ होकर अपना शत्रु प्रतिशत देना ही होगा.
दुनिया बहुत कोशिश करेगी भटकाने को,
अपने लक्ष्य से ध्यान हटवाने को.

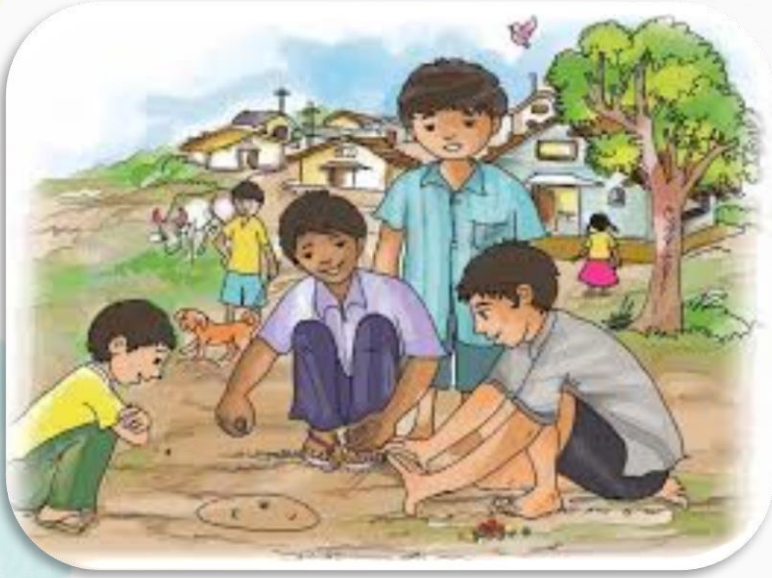
पर तुम्हे न भटककर मुझमें केंद्रित रहना होगा,
किताबों और पढाई में डूबे रहना होगा.
तेरे अपनों ने अपने आज को कुर्बान किया तेरे कल के लिए,
तू इतना भी नहीं कर सकता अपने सपनों और अपनों के लिए?
नहीं करेगी पूरे सपने ये दुनिया या किस्मत,
उन्हें तो पूरा करेगा तेरा समर्पण और मेहनत.

जब तक पत्थर हथौड़े का प्रहार नहीं सहता,
वो मूर्ति नहीं बनता और न इज्जत पाता.
मेहनत के हथौड़े से जब तू प्रहार सहेगा,
तभी तो इज्जत कमाएगा और सफल मूर्ति बनेगा.
इस सर के दर्द से कई गुणा ज्यादा दर्दनाक होगा वो पल,
जब तेरे हाथ असफलता लगेगी और याद आएगा वो खोया कल.

सपने तेरी राह देख रहे हैं तुम मेहनत तो करो,
अरे! वो पूरे कैसे नहीं होंगे खुद पर विश्वास तो रखो.
जो देखते तुझे शक की नज़रों से मुंहतोड़ जवाब उन्हें दे,
तू क्या कर सकता है ये मेहनत से दुनिया को दिखा दे.

बचपन के दिन वापस आएँ

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



बड़ी हुई भारी जिम्मेदारी से
थक गया हूँ वह वापिस छूट जाए
बचपन के वह सुहाने
दिन वापस आ जाएँ

हम थोड़े में संतुष्ट हो
वह अनुभूति वापस आएँ
महल गाड़ी नहीं चाहिए
पुराना घर वापस आएँ

बीते हुए बचपन के दिन
कितने सुहाने हसमुख थे
काश कभी ऐसा
करिश्मा भी हो जाए

बचपन के वह सुहाने
फ़िर से दिन लौट आए
नया ज़माना छोड़
पुराने जमाने में लौट जाएं

समय चक्र विनती है
कुछ पीछे घूम जाएं
मम्मी पापा छोटी बहन
ऊपर से वापस आ जाएं

फ़िर घर में साथ बैठ
हसीं खुशी से देर तक बतियाएं
हे समय का चक्र विनती हैं
कुछ पीछे घूम जाए

मोबाइल कार कंप्यूटर
सभ वापस चले जाएं
मम्मी पापा परियों की मुझे
बस वहीं कहानी सुनाएं

कुएं तालाब पर रोज़ नहाएं
वह दिन वापस आए
मस्ती करें मम्मी पापा से डॉट खाएं
बचपन में ही सारा जीवन बताएं

नीम का पेड़

रचनाकार- सीमा यादव, प्रा. शा. शीतलकुण्डा, मुंगेली



हरी -हरी लताओं से घिरा,
नीम का वह सुन्दर पेड़.
उस पर बैठते पंछी सारे,
मधुर स्वर से करते सुखद गुंजार.

तिनका- तिनका बटोरकर,
वे घोंसले सुन्दर बनाते हैं.
शीतल -सुगंधित -मंद हवाएँ,
चारों- ओर सुन्दर महकती हैं.

मीठे -मीठे सुन्दर फल खाकर,
सारा दिन वे अपना बिताते हैं.

नीम का वह सुन्दर पेड़,
सबका मन जीत लेता है.

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार, उत्तरप्रदेश



1. हरा नीला रंग है मेरा
सबको जीवन देती हूँ,
नीला ग्रह सब कहते मुझको,
क्या तुम से कुछ लेती हूँ?
2. अंत हटे तो "साग" बनूँ मैं,
मध्य हटे तो सार.
नीला नीला रंग है मेरा,
बोलो राजकुमार.
3. तीन अक्षर का नाम मेरा,
काला मेरा रंग.
मध्य हटे तो 'जान' बनूँ मैं,
बोलो राज, तरंग.

4. प्रथम हटे तो "दाम" कहाऊं,
अंत हटे तो "बादा".
मध्य हटे तो "बाम" बनूं मैं,
बुद्धि लगाओ ज्यादा.

उत्तरमाला- 1. पृथ्वी, 2. सागर, 3. जामून, 4. बादाम

प्रकृति

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू (शिक्षिका), बिलाईगढ़



प्रकृति है कितनी प्यारी प्यारी
सुंदर मनमोहक और न्यारी न्यारी.
भोर होते ही चिड़ियों का चहचहाना
और सूरज की लाली छा जाना.
ठंडी हवा से मन में ताजगी आना
और हवा के झोंकों से पेड़ों का लहराना.
प्रकृति से सजी है दुनिया सारी
प्रकृति है कितनी प्यारी प्यारी
सुंदर मनमोहक और न्यारी न्यारी.

कहीं ऊँचे ऊँचे पर्वत
कहीं बहती नदियों का पानी
वन उपवन से सजी प्रकृति
सबके मन को भाती

प्रकृति पल भर में बदल जाती
कभी उजाला तो कभी अंधियारा छा जाती
प्रकृति जब अपना प्रकोप दिखाती
बाढ़ सुनामी ,भूकम्प, महामारी आती.
आओ मिलकर प्रकृति को स्वच्छ बनाये
पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाए
हरियाली से सजी रहे दुनिया सारी.
प्रकृति है कितनी प्यारी प्यारी
सुंदर मनमोहक और न्यारी न्यारी.

मेरे स्कूल के बच्चे हैं मन के सच्चे

रचनाकार- सुश्री मंजूलता प्रधान, कोरबा



मेरे स्कूल के बच्चे, हैं मन के सच्चे
समय से पहले रोज स्कूल आते
हैं विचार भी इनके अच्छे
मेरे स्कूल के बच्चे, हैं मन के सच्चे

जब भी मेरे घर आ जाते
कुछ झिझकते कुछ शर्माते
ले आते बेर, नींबू कच्चे
मेरे स्कूल के बच्चे हैं मन के सच्चे

कैरम, लुडो, खो-खो खेलते
लुकाछिपी फिर दौड़ लगाते
हैं सपने भी ऊँचे-ऊँचे
मेरे स्कूल के बच्चे हैं मन के सच्चे

जब भी मैं बात करती नये स्कूल जाने की
नम हो जाती इनकी आँखें मुझसे दूर होने की
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, हैं ये कितने अच्छे
मेरे स्कूल के बच्चे, हैं मन के सच्चे.

पर्यावरण को बचाना है

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद

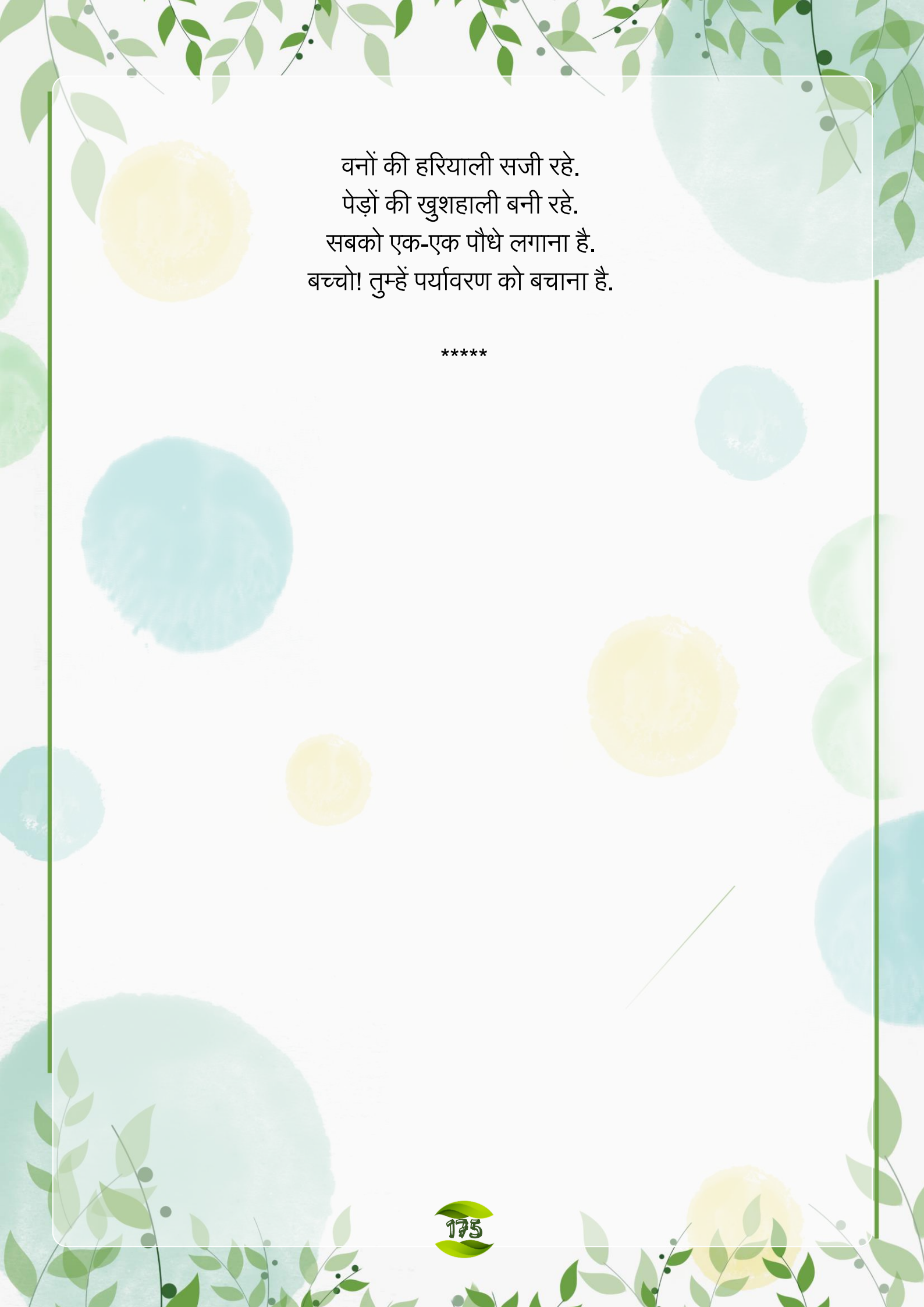


बच्चो! तुम्हें पर्यावरण को बचाना है.

अपने आसपास को रखें साफ.
सब ठीक होगा अपने-आप.
कूड़े-करकट को अब हटाना है.
बच्चो! तुम्हें पर्यावरण को बचाना है.

प्रदूषण के मूल कारण तीन.
फाइबर प्लास्टिक पाँलीथिन.
इन्हें उपयोग में नहीं लाना है.
बच्चो! तुम्हें पर्यावरण को बचाना है.

कभी गंदे न हों नल की नाली.
और ताल-तलैया का पानी.
नदियों को निर्मल बनाना है.
बच्चो! तुम्हें पर्यावरण को बचाना है.



वनों की हरियाली सजी रहे.
पेड़ों की खुशहाली बनी रहे.
सबको एक-एक पौधे लगाना है.
बच्चो! तुम्हें पर्यावरण को बचाना है.

हरियल तोता

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



हरे रंग का हरियल तोता,
हरदम हँसता कभी न रोता.

बरगद में है रेन बसेरा,
सुख की नींद सदा ही सोता.

उसके साथी कोयल बुलबुल,
उनके मन में प्रीत संजोता.

कच्चे पक्के फल खा जाता,
फिर खाता वो सुख का गोता.

देख शिकारी भय के मारे,
हरियल तोता आपा खोता.

नाव हमारी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



कागज़ की है नाव हमारी,
हमको लगती सबसे प्यारी.
बहते जल में दौड़ लगाती,
पर रुकावटों से है हारी.
बहे अकेले जल धारा में,
उसकी कोई नहीं सवारी.
जल धारा से कभी न डरती,
पानी से है उसकी यारी.
बरखा जल से उसे बचाते,
थोड़ी नाजुक नाव हमारी.

हाथी राम

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



भारी भरकम हाथी राम,
सूँड़ उठा के करें सलाम.
बंदर को वन सैर कराते,
फिर वो देता मीठे आम.
जल में करते खूब किलोल,
गर्मी में मिलता आराम.
सबसे मिल के करते बात,
हाथी भैया सुबहोशाम.
केले से उनको है प्यार,
बोलें मोटे हाथी राम.

उषाकाल

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



बालवृंद देखो उठकर,
उषाकाल की ललिताई,
जादू-सा नीला अंबर.
अरुणांचल में अधिकाई.

सूर्यकिरण झिलमिल करती,
अखिल धरा को पुचकारे,
नव उर्जा जग में भरती,
सुखकर स्वर्णिम भिनसारे.

नीड़ छोड़ पंख पसारे,
चींव-चींव चिड़ियाँ चहके,
पवन पवित सुखद सहारे.
सुमन सुवासित सम महके.

उठो नित्य उषा प्रभाती,
उर में यह नेह जगाती.

बढ़ते जाओ

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



लक्ष्य हेतु तुम बढ़ते जाओ,
पथ को अपना गढ़ते जाओ.

रहो हमेशा उच्च शिखर पर,
आत्मशक्ति से चढ़ते जाओ.

बाधाओं से मत घबराना,
धारा सा तुम बहते जाओ.

काली-काली रातें लम्बी,
अंधकार से लड़ते जाओ.

गलती भी देती है शिक्षा,
मंथन थोड़ी करते जाओ.

धूप छाँव की चिंता छोड़ो,
भूख-प्यास भी सहते जाओ.

सँभलो और सँभालो सबको,
अमित सहारा बनते जाओ.

आमा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



नाँव सुनत मा मुँह पनछाये,
भीतर बहुते गुदा भराये.

कच्चा पक्का जइसन खावौ,
सेहत सुग्घर सिरतों पावौ.

भरे विटामिन रस मा येखर,
गुण मा एंटी कैंसर जेखर.

घात किरण ले आँख बचाये,
ये हा पाचन शक्ति बढ़ाये.

हाई ब्लड प्रेशर' कम करथे,
एंटी बायोटिक बल भरथे.

चाम चुस्त अउ चमचम चमकै,
आमा खावौ, तन-मन दमकै.

गरमी मौसम मिलथे ताजा,
गुणकारी हे, फल के राजा.

महतारी के सीखोना

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा



समझावत हे महतारी मोला,
झन 'फिर' बाहिर, रे बेटा भोला.
मुँड़ी पिराही अउ चक्कर खाबे,
पेट अँइठही, धर 'लोटा' जाबे.

बोखार घलो बड़ तोला आही,
गरमी तन के नित बढ़ते जाही.
छँइहाँ मा रहि तैं खरे मँझनिया,
बासी खा, पी बड़ पानी पसिया.

एक गोंदली खीसा मा धर ले,
तात झाँझ-झोला ले तैं डर ले.
बाँध चेहरा साँफी मा 'बाबू',
गरमी ले तब तैं पाबे 'काबू'.

महात्मा गौतम बुद्ध

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली



क्षत्रिय शाक्य कुल में लुंबिनी नगर जन्मा सिद्धार्थ.
ज्ञान और उपदेशों से जन समूहों को करने कृतार्थ.

जन्मोत्सव में साधु दृष्टा आसित बन गया उद्धोषक.
बनेगा विशाल सम्राट या फिर पवित्र पथ-प्रदर्शक.

अति परोपकारी, उदार, करुणा और दया के स्वामी.
मानव, पशु और पक्षियों के रक्षक, सत्य अनुगामी.

धर्म-शास्त्रों में प्रवीण, वेद और उपनिषद के ज्ञाता.
राजकाज और युद्ध-विद्या में निपुण, कर्म विधाता.

वैभवशाली ऋतु महल में सुख-शांति से जीवन यापन.
दास-दासी सेवक, नाच-गान, आनंद और मनोरंजन.

मधुमास में मनोविनोद करने गया सुंदर उद्यान दीप्ति.
बूढ़ा, रोगी, अर्थी, सन्यासी के दृश्य देख हुई विरक्ति.

जवानी, स्वास्थ्य और जीवन को मन ही मन धिक्कारा.
तपस्वी बन, वासना और भावना से मिलेगा छुटकारा.

अन्न और जल त्याग, बोधि वृक्ष के नीचे लगाया ध्यान.
बौद्ध धर्म की स्थापना कर, बन गया गौतम बुद्ध महान.

सतरंगा संसार

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



साहित्यिक कल्पना लोक
का आकाश अनंत है,
सूरज की किरणें
जहाँ नहीं पहुँचती हैं
कवियों की सूक्ष्म चेतना
वहाँ पहुँच जाती है.

सागर तल में जाकर
मोती चुनकर ले आती है.
तितलियों के पंखों
पर होकर सवार
वह मकरंद कण
चुन-चुन कर ले आती है.

कृष्ण की गोपी बन
कल्पना यमुना तट पर
बाँसुरी सुनकर आ जाती है.
जमुना की लहरों पर
होकर सवार
अठखेलियाँ खेलने लग जाती हैं.

माँ शारदे का वरदान है
साहित्यिक कल्पना,
इंद्रधनुष-सा झिलमिलाता
मनभावन सतरंगा संसार है.

ग्रीष्म ऋतु

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा



ग्रीष्म ऋतु आई है, गर्मी ही गर्मी लाई है.
प्रकृति के इस रूप से, जीव-जंतु भी सकुचाई है.
अप्रैल से लेकर जून तक, अपना विकराल रूप दिखलाती है.
जीव जगत की देख दशा, तरस भी नहीं खाती है.

अमीर लोग गर्मी से बचने, हिल स्टेशन में घूमने जाते हैं.
बेचारे गरीब लोग क्या करें?
घर में ही हाय तौबा मचाते हैं.
भीषण गर्मी में पानी का स्तर, इतना नीचे गिर जाता है.

दैनिक दिनचर्या तो दूर रही, पीने को पानी नहीं मिल पाता है.
छोटे जीव जंतु तो, गर्मी से इतने बेहाल हो जाते हैं.
पानी की कमी से, प्राण तक त्याग जाते हैं.
पेड़-पौधे भी गर्मी में ऐसे मुरझाई है.

ठंडी हवा की जगह में गर्म हवा लाई है .
हे सूरज देवता! पृथ्वी पर इतना भी तपिश ना लाओ.
हम सब जीव जंतु पर, थोड़ा-सा तो तरस खाओ.
ग्रीष्म ऋतु एक तरफ से, हमारे लिए वरदान है.
अनाज को खाने योग्य बनाना, इसका ही तो काम है.

हवा


रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा



हवा हूँ, हवा हूँ, अनोखी हवा हूँ.
सुनो बात मेरी, निराली हवा हूँ.
बड़ी मस्त -मौला, बड़ी बावली हूँ.
ना पूछो हाल मेरा, मैं कैसी हवा हूँ?

बेफिक्र होकर, हर जगह घूमती हूँ.
कोई बांध सके ना, मैं ऐसी हवा हूँ.
कोई रंग ना रूप, ना कोई आकार है.
मेरे बिना इस प्रकृति का अस्तित्व ही बेकार है.

हर मौसम में, मैं अपना एहसास दिलाती हूँ.
बच्चे बड़े बूढ़ों को, खूब मैं भाती हूँ.
कोशिश करके देख लो, कभी देख ना पाओगे.
मुझे पाने की कोशिश में, हाथ मलते रह जाओगे.



प्रकृति के कण-कण में, मैं ही समाई हूँ.
सबके जीवन में रंग, भरने के लिए ही आई हूँ.
हवा हूँ, हवा हूँ, अनोखी हवा हूँ.
सुनो बात मेरी निराली हवा हूँ.

दर्द पीना ही पड़ेगा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



चाहें कुछ भी कर लो
दर्द पीना ही पड़ेगा.
कांटों की जिन्दगी है
जीना ही पड़ेगा.

अशक बहने दो
दरिया समंदर बन कर.
घाव भर जाएंगे
गहरे हो कर.

जीने के लिए कुछ तो करना ही पड़ेगा.

चाहें कुछ भी कर लो
दर्द पीना पड़ेगा.
कांटों की जिन्दगी है
जीना ही पड़ेगा.

जख्म खाएं हैं इतने
दिखाएं हम किसे.
कोई अपना नहीं है
बताएं हम किसे.

टुटे हुए दिल को जोड़ना ही पड़ेगा.

चाहें कुछ भी कर लो
दर्द पीना पड़ेगा.
कांटों की जिन्दगी है
जीना ही पड़ेगा.

इस जमाने में मतलब के
सब यार हैं.
प्यार के ही दुश्मन
अपने ही यार हैं.

बात सच है यही मानना ही पड़ेगा.

चाहें कुछ भी कर लो
दर्द पीना ही पड़ेगा.
कांटों की जिन्दगी है
जीना ही पड़ेगा.

जननी

रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह, बस्तर



तेरी खुशियाँ हैं सीमित,
तेरे कार्य हैं,असीमित,
अनवरत कार्य करती हो,
ना जाने कहाँ से ऊर्जा लाती हो.
एक अद्भुत शक्ति निहित है तुझमे,
ज्यों बदले पारस,लोहे को सोने में,
तुम्ही तो जगत जननी हो,
तुम्ही तो पालनहार हो.
तुम त्याग की प्रतिमूर्ति हो,
तुम करुणा की सागर हो,
चाँदनी सी शीतलता तुझमे,
गगन की विशालता तुझमे.
मेरी उत्पत्ति की आधार हो,

हे माँ तुम ही मेरी पहचान हो,
ऐसी कोई लेखनी नहीं,
जिससे कुछ तेरे लिए लिखूँ.
गर लिखना प्रारंभ करूँ,
शब्द कम पड़ जाते हैं,
कलम काँपने लगती है,
माँ मैं तुम्हें कैसे परिभाषित करूँ.

उल्लू की जान बचाई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



आज मैं अपने बाइक से घर आ रहा था. तभी रास्ते में एक खेत में दस पन्द्रह कौए एक उल्लू को पकड़ कर उसे अपनी चोंच से मार-मार कर नोच रहे थे.

यह देख कर मैंने अपनी बाइक सड़क पर एक किनारे रोक कर खेत की ओर दौड़ पड़ा.

कौए उल्लू को खूब चोंच मार रहे थे. उल्लू चिल्ला रहा था. मानो कर रहा था बचाओ बचाओ.

मैं कौवों के बीच पहुंच गया और खेत से मिट्टी का ढेला उठा उठा कर कौओं को मार कर भगाने लगा मगर कौए भाग नहीं रहे थे.

मैंने उल्लू को बचाने के लिए कौवों पर दना दन वार करने लगा कौवे चोट खाते ही उड़ कर दूर चले गए.

मैं सर पर बांधा अपना गमछा उतार कर उल्लू पर फेंक कर उसे पकड़ लिया. वह बहुत डरा हुआ था. उसके मुंह और पंख से खून बह रहा था.

मैं उल्लू को ले कर घर आ गया और उसके घाव को डेटाल पानी से धो कर उस पर मलहम लगा दिया. और एक कटोरे में पानी और एक कटोरे में दूध भात रख दिया. काफी देर के बाद उल्लू ने पानी पीआ और थोड़ा सा दूध भात खा कर आंखें बन्द कर के बैठ गया.

मैं बिल्ली के डर से उल्लू को एक खांची (टोकरी) से ढक दिया और सोचा जब रात हो जाएगी तो इसको छोड़ दूंगा और यह उड़ कर चला जाएगा.

उल्लू को रात में ही दिखाई देता है ऐसा सोचा हमने.

रात को उल्लू को ले कर जैसे ही मैं घर से बाहर आ कर उसे उड़ाया की उल्लू उड़ने का नाम नहीं ले रहा था. मैं बार-बार उल्लू को उड़ाता उल्लू उड़ कर मेरे कंधे पर आ कर बैठ जाता. काफी देर तक मैं उल्लू को उड़ाने का प्रयास करता रहा मगर उल्लू हमें छोड़ कर जाने का नाम नहीं ले रहा था.

मैं हार कर उल्लू को ले कर घर चला आया और उसे टोकरी के नीचे रख दिया.

चार दिन तक उल्लू मेरे पास रहा उसका घाव ठीक हो गया था. और उड़ने लायक हो गया था.

पांचवें दिन मैं रात को उल्लू को ले कर घर से बाहर आया और उसे हवा में उड़ा दिया. उल्लू उड़ कर रात के अंधेरे में गायब हो गया. उल्लू के चले जाने पर मुझे बहुत खुशी हुई.

मगर अगले दिन उल्लू मेरे घर के छत पर आ कर फिर बैठ गया.

सुबह उठ कर मैं छत पर गया तो देखा उल्लू छत के एक कोने में बैठा हुआ है.

मैं उसके पास पहुंचा तो वह उड़ कर मेरे हाथ पर आ कर बैठ गया. जैसे कह रहा हो मैं कहीं नहीं जाऊंगा यहीं रहूंगा.

उल्लू रोज रात में भोजन की तलास में जाता और सुबह होते ही छत पर बने झरोखे में आ कर बैठ जाता.

आज उल्लू हमारे घर के छत पर अपना घोंसला बना कर रहता है.

जैसे उल्लू मेरा दोस्त बन गया हो.

मैं उल्लू को खाने की चीजे उसके घोंसले में रख देता हूं ताकी वह खाना खा कर जिन्दा रह सके.

मैं उल्लू को अपना दोस्त बना कर बहुत खुशी महसूस कर रहा था.

पर्यावरण

रचनाकार- धनीराम डडसेना, छुईखदान



स्वास्थ्य एवं प्रकृति की करें रक्षा,
हमें मिलेंगी जीवन की सुरक्षा.
मानव जीवन है दुर्लभ,
बनावटी को न कभी समझे सुलभ.
पर्यावरण का रूप है प्राकृतिक,
इसे प्रदूषित न करें अत्याधिक.
प्लास्टिक से धरती है भरी,
जल स्तर हुई है गहरी.
शपथ लें, न करें अत्याचार,
पर्यावरण की रक्षा का हो विचार.

मौसमी फल

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय



चंदा सूरज आओ,
खट्टे मीठे फल खाओ,
वनों में ये पाए जाते,
बच्चे बूढ़े सब है खाते.

चार तेंदू और मिलते आम,
नहीं लगते हैं इसके दाम,
विटामिन, फाइबर से भरपूर,
करता रोगों को यह दूर.

मौसमी फल यह है होता,
फिर साल भर बाद है मिलता,
फल बड़ा यह खास है होता
सबको यह आसानी से मिलता.

पौध लगाओ

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय



चुनिया कहती मुनिया से.
वनों को हम नहीं काटेंगे.
पेड़ हमारे हैं जीवन रक्षक.
मानव क्यों बना है भक्षक.

पर्यावरण रखता है विशुद्ध.
हवा मिलती हमको है शुद्ध.
तन मन रहता जब स्वस्थ है.
तब जीवन होता मस्त है.

नाना जी देते हैं संदेश.
करना न इससे परहेज.
एक पौधे सब है लगाओ.
सौ साल की आयु पाओ.

विद्यालयों में मिशन बुनियाद कार्यक्रम 11 मई से चलेगा

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली

आगामी 11 मई, 2023 से दिल्ली नगर निगम के सभी विद्यालयों में कक्षा 3 से 5 तक के सभी विद्यार्थियों के लिए मिशन बुनियाद कार्यक्रम 2023 चलाया जा रहा है जिसका उद्देश्य छात्रों के शिक्षा स्तर को ऊंचा उठाकर उस में सुधार एवं वृद्धि करना है। पिछले वर्षों की ही भांति इस



वर्ष भी ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान कक्षा 3 से 5 तक के सभी विद्यार्थियों को विद्यालय बुलाया जाएगा एवं पठन-पाठन प्रक्रिया जारी रहेगी। गौरतलब है कि मिशन बुनियाद कार्यक्रम में केवल कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों को ही बुलाया जा रहा है। इस दौरान विद्यार्थियों के विद्यालय आने का समय प्रातः काल 7:30 बजे रहेगा और छुट्टी होने का समय प्रातः 10:30 बजे रहेगा ताकि बच्चों को न तो गर्मी में विद्यालय आना पड़े और न ही गर्मी में विद्यालय से वापिस घर जाना पड़े, अर्थात् सभी विद्यालयों में प्रातः काल के सुहाने वातावरण में ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अंजाम दिया जाएगा। माना जाता है कि प्रातः काल में किए गए शैक्षणिक क्रियाकलाप शिक्षा की गुणवत्ता को कई गुना बढ़ा देते हैं।

दिल्ली नगर निगम की यह एक सराहनीय पहल ही समझी जा सकती है कि 11 मई से 31 मई तक कक्षा 3 से 5 तक के सभी छात्रों को मिशन बुनियाद कार्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। मिशन बुनियाद कार्यक्रम में विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक स्तर के हिसाब से पढ़ाया जाएगा जिसके लिए 15 अप्रैल से ही तैयारियां शुरू की जा चुकी हैं और फिलहाल वर्तमान में भी सभी विद्यालयों में मिशन बुनियाद कार्यक्रम के अनुसार ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया जारी है।

मिशन बुनियाद का मुख्य उद्देश्य बच्चों की साक्षरता एवम गणना संबंधी नींव को मजबूत करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यार्थियों को मई के माह में भी विद्यालय बुलाया जा रहा है ताकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में गैप न आए तथा एक निरंतरता बनी रहे और साथ ही विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने के अधिक से अधिक अवसर मिले ताकि उनके शैक्षणिक स्तर में सुधार आ सके।

न केवल विद्यालय अपितु निगम के विद्यार्थियों के माता-पिता भी इस विशेष कार्यक्रम को लेकर काफी उत्साहित हैं क्योंकि विद्यार्थियों के अध्यापकों द्वारा समय-समय पर उनके अभिभावकों को मिशन बुनियाद से संबंधित सभी लाभों व उद्देश्यों से अवगत कराया जाता है एवं कार्यक्रम में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों को भी विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ साझा किया जाता है।

मिशन बुनियाद कार्यक्रम मई 2023 में विद्यार्थियों को विद्यालय बुलाने के लिए विद्यालय द्वारा उनके अभिभावकों से पूर्व सहमति ली जाएगी, तत्पश्चात ही उन्हें विद्यालय में बुलाया जाएगा। इस बार मिशन बुनियाद कार्यक्रम की खासियत यह भी समझी जा रही है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों के माता-पिता एवम अभिभावकों को समय समय पर विद्यालय में आमंत्रित किया जाएगा ताकि वे अपने बच्चों के शैक्षणिक स्तर को बहुत करीब से देख सकें, विद्यालय में करवाई जाने वाली गतिविधियों से रूबरू हो सकें और शिक्षकों से अपने बच्चों की शिक्षा के विषय में आवश्यक चर्चा भी कर सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि मिशन बुनियाद कार्यक्रम का केवल एक ही उद्देश्य है कि अभिभावक और विद्यालय दोनों मिलकर विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए प्रयासरत रहें।

गौर करने वाली बात है कि किसी भी विद्यार्थी को जबरन विद्यालय में नहीं बुलाया जाएगा। विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए निगम ने स्पेशल एजुकेटर अध्यापकों को भी मिशन बुनियाद कार्यक्रम में विशेष रूप से बुलाया है। बच्चे पढ़ने के साथ-साथ पुस्तकालय में जाएं और पढ़ने की आदत को विकसित करें, इसके चलते विद्यालयों में पुस्तकालय इंचार्ज को भी विद्यालय में बुलाया जाएगा ताकि सभी विद्यार्थी पुस्तकालय का पूरा पूरा फायदा उठा सकें। मिशन बुनियाद कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में आए परिवर्तनों को मापने के लिए सभी अध्यापकों को प्रत्येक विद्यार्थी का हर 15 दिन में असेसमेंट (मूल्यांकन) करना होगा और उसी के आधार पर आगे की शिक्षण अधिगम संबंधी रणनीति तैयार करनी होगी। मिशन बुनियाद कार्यक्रम के दौरान सभी विद्यालयों का समय समय पर विभिन्न विभागीय अधिकारियों एवम मेंटोर शिक्षकों द्वारा निरीक्षण भी किया जाएगा। कार्यक्रम में विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों, विडियोज, रोचक एक्टिविटीज के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया जाएगा और हर संभव कोशिश की जाएगी कि सभी बच्चे एफ एल एन FLN अर्थात् फाउंडेशनल लिटरैसी एंड न्यूमेरेसी के हिसाब से शिक्षित हो सकें। एफ एल एन के उद्देश्यों को प्राप्त करना ही मिशन बुनियाद का मुख्य उद्देश्य है, जिसको अवश्य प्राप्त किया जा सकेगा। इसके लिए निगम के सभी प्रतिभाशाली एवम उत्कृष्ट अध्यापक जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं और अपने भरसक प्रयासों से प्रत्येक छात्र के लेवल के हिसाब से उसे शिक्षित करने का शिक्षा विभाग एवम खुद से वादा भी कर रहे हैं, और ईमानदार कोशिशें हमेशा कामयाब होती हैं।

दुखी लाल के दुख

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



"का बतावँव मैं, येखर मारे अब्बड़ हलाकान होगेंव. संग ला कभू छोड़े नहीं. जिहाँ जाथे उहें धर के लेगथे. मोला लेगे बर सुरता भुला जाथे. बिहनिया बेरा ले मालती हा अपन गोसइया दुखी लाल ला बनेच बखानत राहय."

आँखी रमजत दुखी लाल उठिस ता मालती के पारा अउ ऊपर डहर चढ़गे- "ये दे फेर जाही ओखरे तीर मा."

दुखी लाल किहिस- 'जाबो नहीं; तोला काय होवत हे. हमर मन, हम कहूँ तीर जावन, कोनो ला घर मा लावन. तोला काय करना हे."

मालती कहिथे- "हाँ... हाँ... जा... जा. ओखरे संग बिहाव नइ कर लेय रहितेस? सब ले बड़े दुश्मन आय मोर ओहर. मोर तीर मा झन लाय कर ओला. बाजार, दुकान या फेर घर मा संगी-साथी मन आहीं, तभो ले ओला सबले मिलवाही. जानो-मानो उही तोर बाई हरय. जब ले लवई चालू करे हस, घर मा खर्चा बाढ़त हे. सरकार घलो अइसन मनखे ला कुछू नइ बोलय."

वो दिन तो दुखी लाल मालती के बात ला एक कान ले सुनिस, अउ दूसर कान ले निकाल दिस. जब ले दुखी लाल ओखर संग ला धरे रिहिसे, घर मा रोज झगरा मातय. दुखी लाल अपन दुख ला भुलाए बर संग मा ओला राखे ता, मालती अउ बिफर जाय. एँड़ी के रीस तरुवा मा चढ़ जाय.

मालती हा मन मा ठान ले रिहिस की आज ये घर मा या तो ये रही या मेहा. संझा बेर दुखी लाल काम-बूता ले घर आइस. आते साठ मालती दुवारी मा खड़े हो के कहिथे- "आज मैं फैसला कर के रहूँ." दुखी लाल मालती के गोठ ल सुनते रिहिस की ओकर खिसा ले गुड़ाखू-डब्बा ला निकाल के तुरते घुरवा मा फेंक दिस. बिचारा दुखी लाल गुड़ाखू बिना अधूरा रहिगे. आज ओला टंगिया गँवाये अस लागिंस. दुवारी मा मुँड़ धर के बइठे दुखी लाल ल अपन नाम ऊपर बड़ दुख लागत राहय.

आओ जानें

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा, रायपुर



1. एक किलोग्राम में कितने ग्राम होता है?
2. चंद्रमा पर कदम रखने वाला पहला व्यक्ति कौन था?
3. दुनिया का सबसे तेज पक्षी कौन सा है?
4. सौरमंडल का चमकीला ग्रह कौन सा है?
5. जानवरों को मारने वाले मनुष्य को क्या कहते हैं?
6. किसके कान बड़े होते हैं?
7. औषधीय पौधा कौन सा है?
8. वीडियो गेम का आविष्कार किसने किया था?
9. पृथ्वी पर कुल कितने महासागर हैं?
10. कौन सा प्राणी सबसे बड़ा अंडा देता है?

1 1000 ग्राम, 2 नील आर्म स्ट्रांग, 3 घुमंतू बाज, 4 शुक्र ग्रह, 5 शिकारी, 6 हाथी, 7 तुलसी, 8 विलियम हिगिन बोहम, 9 पाँच, 10 शतुरमुर्ग,

लो आ गई गर्मी

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



लो आ गई गर्मी
मस्ती करने दो मम्मी
पढ़ाई लिखाई बहुत हुआ
डाट फटकार बहुत हुआ
यश सर यश सर न करना है
मर्जी का मालिक बनना है
किसी का नहीं सुनना है
दिनभर मस्ती करना है
तालाब में डुबकी लगाना है
नहर में तैराकी करना है
पत्थर से निशाना लगाएंगे
आम तोड़कर खाएंगे
बेल का स्वाद चखना है
शरबत बनाकर भी तो पीना है
पेड़ों में भी चढ़ना है
झूला उसमें झूलना है

शादी में भी जाना है
नागिन नाच नाचना है
मामा घर भी तो जाना है
कहानियां नानी से सुनना है
यार दोस्त से मिलना है
चित्रकारी साथ में करना है
कार्टून फिल्में देखेंगे
आइसक्रीम कुल्फी खाएंगे
हमारी केवल इतनी अर्जी
पुरी कर दो हमारी मर्जी
स्कूल जल्दी आना नहीं
गर्मी जल्दी जाना नहीं

गेंदा का फूल

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



एक दिन साक्षी का तबियत खराब था. फिर भी वह स्कूल आई थी. थोड़ी देर बाद उसके पिता जी स्कूल आये. उन्होंने शिक्षक को बताया कि साक्षी का तबियत खराब है उसे अस्पताल ले जाना है. फिर शिक्षक ने साक्षी को अस्पताल जाने के लिए छुट्टी दे दिया.

साक्षी अपनी कक्षा से बाहर आई. उसने देखा कि उसके बॉटल में पानी भरा है. उसने उसे इधर-उधर फेकने के बजाय अपने लगाए हुए गेंदे के पौधे में डाल दिया. फिर वह अपने पिता जी के साथ चली गई.

अगले दिन जब साक्षी स्कूल आई. उसने देखा कि उसके गेंदे के पौधे में फूल खिला हुआ था. उसे देखकर साक्षी बहुत खुश हुई. साक्षी अपने दोस्तों को गेंदे के फूल को दिखाई. तब से सभी बच्चे छुट्टी के समय अपने बॉटल के पानी को अपने-अपने गेंदे के पौधे में डालने लगे. तब से जब भी किसी का गेंदा खिलता बच्चे खुशी से झूम उठते थे.

भारत के प्रतीक चिन्ह

रचनाकार- सुनीता लहरे डोंडी, बालोद



सत्यमेव जयते

भारत मेरा महान है तिरंगा उसकी शान है.
जन गण मन मेरा राष्ट्रगान है.
राष्ट्रगीत है वंदे मातरम् .
जो है दुनिया में सर्वोत्तम.

कल कल बहती गंगा नदी.
निर्मल शुद्ध है उसका पानी.
सनातन से है यहां के ज्ञानी.
सुनते हैं लोगों की जुबानी.
आओ बताऊं तुमको, भारत की कहानी.

फुर्तीला है बंगाल टाइगर.
वृक्षों में है बूढ़ा बरगद.
पंचांग में है शक कैलेंडर.
भारतीय संस्कृति की अनोखी धरोहर.

डॉल्फिन है पानी की रानी.
आओ बताऊं तुमको, भारत की कहानी.

हाथी के संग किंग कोबरा.
उछलता दमकता रुपया.
संस्कृत लिपि देवनागरी उत्तम.
शीर्ष पर रहता अशोक स्तंभ.
ध्यान चंद की जान है हॉकी.
आओ बताऊं तुमको, भारत की कहानी.

पोखर में खिले सुंदर नलिन.
बगीचों में लगा सहकार.
श्रेष्ठों में अति श्रेष्ठ है भारत का संविधान.
इसकी खातिर मर जायेंगे ये हमारा अभिमान.
सारंग सा है रंग बिरंगा यहा की भाषा और बोली.
आओ बताऊं तुमको, भारत की कहानी.

प्रेम

रचनाकार- पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप

बहुत पुरानी बात है, सकरेली नामक गाँव में नेकदिल, धार्मिक विचारों वाली एक बूढ़ी महिला (वृद्धा) अपने पति और विवाह योग्य बेटी के साथ, छोटी सी कुटिया में बहुत कष्टमय जीवन व्यतीत करते हुए रह रही थीं।



एक बार रात्रि के प्रथम प्रहर में तीन अपरिचित अतिथियों ने उस महिला की कुटिया के समीप पहुँचकर रात बिताने के लिए आश्रय (सहारा) मांगने आवाज लगाई. आवाज सुनकर महिला बाहर आई, तीनों अपरिचित पुरुषों को देखकर महिला बड़ी विनम्रता से बोली- महानुभाव, यद्यपि मैं आप लोगों को नहीं जानती, परंतु आप लोगों को देखकर मुझे प्रतीत हो रहा है कि "आप लोग बहुत दूर से चलकर आए हैं, बहुत थके हुए एवं भूखे- प्यासे भी लग रहे हैं." कृपया अतिथिगण, हमारी कुटिया में प्रवेश कर अतिथि सत्कार करने का अवसर प्रदान कर हमें कृतार्थ करें तथा भोजन- जलपान ग्रहण कर रात्रि विश्राम कीजिए.

महिला की बातें सुनकर उनमें से एक पुरुष ने परिचय देते हुए कहा कि- हममें से एक का नाम प्रेम, दूसरे का नाम सफलता और तीसरे का नाम संपत्ति है तथा हममें से कोई एक ही आपके घर के भीतर प्रवेश कर सकता है, हम तीनों एक साथ किसी के भी घर में प्रवेश नहीं कर सकते. अब आप विचार कर लीजिये और किसी एक को अंदर बुला लीजिये.

महिला कुछ देर सोचने के बाद बोली- आप में जिसका नाम प्रेम है, वह मेरी कुटिया के भीतर आ जाए. प्रेम के घर में प्रवेश करते ही सफलता और संपत्ति दोनों ही प्रेम के पीछे-पीछे घर में प्रवेश कर गये. महिला आश्चर्यचकित होकर विस्फारित नजरों से उन्हें देखती रह गयी, तब प्रेम ने मुस्कुराते हुए महिला को समझाया कि जहाँ प्रेम है वहाँ सफलता और संपत्ति दोनों ही स्वतः खींचे चले आते हैं, लेकिन जो व्यक्ति सफलता या संपत्ति को अधिक महत्व देते हैं, प्रेम वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता.

शिक्षा- हमें सदैव सभी के साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करने चाहिए, तभी हमें सफलता और संपत्ति की प्राप्ति होगी.

मेहनत का फल

रचनाकार- पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप



जांजगीर नगर के पास स्थित एक गाँव में कमरीद नामक गरीब किसान रहता था. उसके पास जीविकोपार्जन के लिए लगभग एक एकड़ कृषि भूमि थी, जिसमें वह खेती किया करता था. खेती से हुई आमदनी एवं शासन द्वारा कभी-कभी चलाए जाने वाले राहत कार्यों में काम करने से प्राप्त हुई मजदूरी के सहारे उसके परिवार का कठिनाई से जीवन-यापन हो रहा था . किसान के परिवार में उसकी आज्ञाकारी सुशील पत्नी और एक बहुत सुंदर पुत्र था. पुत्र का नाम उन्होंने बड़े प्यार से राहुल रखा था. राहुल दोनों पैरों से बचपन से ही दिव्यांग था इसलिए किसान राहुल के भविष्य के लिए बहुत चिन्तित रहता था. पढ़ाई योग्य होने पर राहुल को गाँव की पाठशाला में पढ़ने भेजा.

दिव्यांग होने की वजह से राहुल आम बच्चों के समान उछल-कूद, भाग-दौड़ नहीं कर सकता था, इसलिए किसी ने भी उसे अपना मित्र नहीं बनाया. प्रायः सभी बच्चे उसके पैरों को कटाक्ष कर हमेशा उसका मजाक उड़ाया करते थे. लाचार राहुल अपना मन मसोसकर रह जाता था, परंतु उसने दृढ़तापूर्वक अपने मन में यह ठान लिया कि उसे अच्छी पढ़ाई कर अपने जीवन में कुछ ऐसा करना है, जिससे उसके माता-पिता और स्वयं उसका नाम रोशन हो सके. राहुल खूब मन लगाकर पढ़ाई करता था ,इसलिए सभी शिक्षक उसे बहुत चाहते थे और उसकी भरपूर मदद किया करते थे. मेधावी छात्र होने के कारण उसे पर्याप्त छात्रवृत्ति मिल जाने से पढ़ाई में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं आया. वह ध्यानपूर्वक पढ़ाई-लिखाई करते हुए अपना सारा वक्त गुजारता था, जिसके फलस्वरूप राहुल ने शालेय शिक्षा प्राविण्य अंकों के साथ उत्तीर्ण कर अपनी शाला और गाँव का नाम रोशन किया .

शहर के महाविद्यालय में प्रविष्टि लेकर उसने आगे पढ़ना जारी रखा. जब वह स्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र था, उसी अवधि में शिक्षक पद में भर्ती हेतु निकले विज्ञापन को देखकर राहुल ने भी आवेदन प्रस्तुत किया और उसका चयन शासकीय शिक्षक के पद पर हो गया. उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ

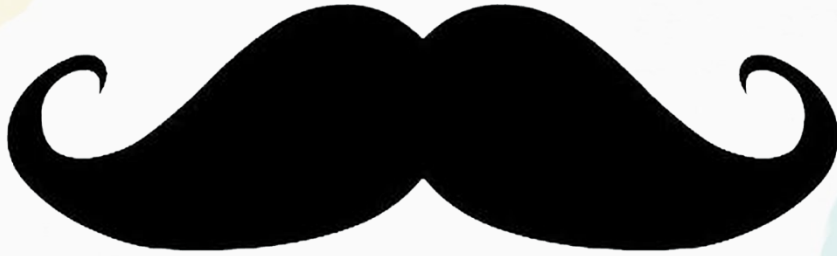
शिक्षकीय कार्य में नित नवीन प्रयोग करते हुए अपनी शाला के बच्चों को शिक्षा दिया. उसके द्वारा पढ़ाये गए आज सैकड़ों बच्चे शासकीय सेवा से विभिन्न पदों पर आसीन हैं.

एक बार संपूर्ण विश्व में महामारी फैल गई, उस महामारी के दौरान उसने अपने शाला के बच्चों के साथ-साथ पूरे गाँव के बच्चों को पूरी निष्ठापूर्वक शिक्षा उपलब्ध कराया. उन्होंने अपने शाला भवन का कायाकल्प किया. इस कार्य हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के महामहिम राज्यपाल ने राज्य द्वारा प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च शैक्षिक सम्मान एवं पुरस्कार से राहुल को सम्मानित किया. इस तरह राहुल ने अपने गाँव के साथ-साथ अपने माता-पिता का नाम रोशन किया .

शिक्षा- पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत से कार्य करने पर असंभव कार्य भी संभव हो सकता है. इसीलिए कहा गया है कि- "मेहनत का फल मीठा होता है."

पापा की मूंछे

रचनाकार- प्रदीप कुमार शर्मा



पापा की कभी बड़ी मुझे,
कभी दाढ़ी के साथ जुड़ी मूंछे
कभी मोटी, कभी पतली मूंछे,
कभी खड़ी, कभी झुकी मूंछे,
किसी की लाल, किसी की सफ़ेद मूंछे
पर पापा के काले मूंछे, चाचा के नहीं हैं मूंछे,
पापा बोले कभी आती, कभी जाती हैं मूंछे,
पर सबसे प्यारी पापा के मूंछे,
मम्मी की दादी की नहीं हैं मूंछे
छोटे भैया और दीदी की नहीं हैं मूंछे,
पर पापा मेरी भी क्यों नहीं हैं मूंछे
पापा बोले सबकी नहीं होती हैं मूंछे
कभी आती कभी जाती हैं मूंछे
दक्ष बोले सबसे प्यारी पापा की मुछे,

छुट्टी की मौज

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह "नीहार", नई दिल्ली



सुबह को जल्दी उठकर नहाना,
आठ बजे की फिक्र नहीं.
दिनभर मौज मनाओ प्यारे,
मैडम जी का जिक्र नहीं.

खेलकूद औ धमाचौकड़ी,
टायर खूब चलाएंगे.
कार्टून मनभर देखेंगे,
लट्टू खूब नचायेंगे.

होमवर्क से पीछा छूटा,
डाट - डपट से कोसो दूर.
अब छुट्टी की मौज मनाओ,
नाचो कूदो रे भरपूर.

बातों की चढ़ा चासनी,
खट्टी-मीठी बात करेंगे.
बाग-बगीचे घूमघाम कर,
एक नई शुरुआत करेंगे.

माता-पिता तुल्य जग में कोई अनमोल हीरा नहीं

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



माता-पिता को ठेस पहुंचाने तुल्य कोई पाप नहीं
माता-पिता की सेवा कर खुश रहने जैसा पुण्य नहीं
जिनके हृदय में माता-पिता का मूल्य नहीं
सृष्टि में वह मानवता के तुल्य नहीं

माता-पिता की सेवा तुल्य कोई पुण्य नहीं
मां पृथ्वी से बड़ी पिता आकाश से ऊंचा है
माता-पिता से बढ़कर कोई तीर्थ देवता गुरु नहीं
माता-पिता से मिले संस्कार की तुलना नहीं

सृष्टि में माता-पिता से बढ़कर कोई नहीं
हम क्या जाने हमारे लिए हमारी मां
कितने दिन कितनी रातें सोई नहीं
माता-पिता से बढ़कर दुनिया में कोई नहीं

मेरा संसार

रचनाकार- सागर कुशवाहा, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर



दूर रहे हम घर से,
मिलता रहा मैडम -सर का मां-बाप की तरह प्यार.
ऐसे खास स्कूल के लिए दिल से आभार,
बहुत याद आती है यह स्कूल की बातें,
जब हम चले जाते हैं,
स्कूल से चाहे दिन हो या रात,
जो बिताए हैं पल साथ भूल ना पाएंगे कभी यार.
अकेले खुद को तन्हा पाएंगे,
कैसी है इस वक्त की हालात बता नहीं सकते.
रह रहे हैं कैसे जुदा जता नहीं सकते,
वह किसी की डांट, वह किसी का प्यार,
वह किसी की तकरार, यह सब बहुत याद आएंगे यार,
जब बने थे दोस्त यार बहुत मजा आया था.
कभी दोस्ती कभी दुश्मनी कभी खुशी तो कभी गम,
आज लग रहा है काश यह पल यही रुक जाएं,

रहे हम सब सारी जिंदगी साथ यूं ही बीत जाए यारा,
अरमान का नाटक बिलाल का फेक फेक कर बातें करना,
नीलेश की दोस्ती सागर का तंग करना
अरमान का सबको हंसाना,
दिल से कहता हूं तुम सब की बहुत
याद आएंगे याद बहुत आएगी यार.

माँ की ममता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



माँ की ममता मिलती हैं सभको
कोई अच्छूता नहीं
कद्र करने की बात है
कोई करता कोई नहीं

माँ वात्सल्य प्रेमामई ममता
मिलती हैं सभको कोई अच्छूता नहीं
कद्र करने की बात है,
कोई करता कोई नहीं

माँ का आंचल अपने सपूतों के लिए
हरदम खुला बंद नहीं
अपनी तकलीफों दुखों से घिरी
पर ममता की छांव हटाई नहीं

चार बातें कड़वी भी सुनीं तुम्हारी
पर ममता की छांव हटाई नहीं
तुमने कद्र भले की हो या नहीं
पर माँ ने ममता घटाई नहीं

हैं ऐसे भी कुछ लोग माँ की ममता का
आंकलन करते नहीं
बस दिखावे में जीतें हैं माँ की ममता
का सम्मान करते नहीं

समझ लो ऐसे लोगों, माँ की ममता
नसीब करेगा भगवान भी नहीं
बस माँ की ममता आंचल में समाए रहो
फिर पूजा पाठ की जरूरत नहीं

माँ का वात्सल्य प्रेमा मई ममता
मिलती हैं सभको कोई अछछूता नहीं
कद्र करने की बात है
कोई करता कोई नहीं

कविता

रचनाकार- सीमा यादव



सहसा उठा मन में एक सवाल.
क्यों, कैसे हो जाता है मन बेहाल?

तब भीतर की शक्ति से उत्तर मिला.
तुम ही हो सारी समस्या का कारण.

हर जगह अहम् काम नहीं आता.
इस वहम् में कभी न रहना तुम.

बड़ों को मान देना,छोटों से कर लेना प्रेम.
रिश्ते -नातों में चालाकी काम नहीं आती.

रिश्ते निभाने की एक ही अचूक दवा है,
रिश्तों में वफादारी और परवाह ही मजबूती लाती हैं.

रिश्ते को निभाने वाला भले ही कितना बेवकूफ क्यों न हो.

यदि उनमें त्याग, समर्पण एवं प्रेम भाव हैं
तो वही सच्चा हमसफ़र कहा जाता है.

कर लेना एक दूजे से प्रेम की डोर सुदृढ़.
यही है सच्चे प्रेम और रिश्ते का रहस्य.

विचार एक अद्भुत शक्ति

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली



"विचार" अर्थात मन की सोच ! हमारा विचार इतना महान होना चाहिए कि हम विपरीत परिस्थिति में भी न डगमगाएँ. विचार की शक्ति अद्भुत होती है. विचार ही है जो हमें आकाश से भी ऊँचा उठा सकता और विचार ही है जो हमें पशु से भी बदतर बना सकता है. एक अच्छा विचार अनेक अच्छे नतीजों को जन्म देता है और एक घटिया विचार बहुत से घटिया परिणामों को उत्पन्न करता है. विचार एक सर्वश्रेष्ठ शक्ति है, जिसमें सम्पूर्ण जगत का प्रतिबिम्ब प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर होता है. विचार मनुष्य के अंतर्जगत का हिस्सा है. जो कि परिणाम या नतीजे के रूप में बाह्य जगत में दिखाई देता है. विचारों का हमारे मन पर गहरा असर होता है. एक अच्छा विचार वही होता है जो स्वयं के साथ-साथ औरों के लिए भी प्रेरणादायी हो. सकारात्मक विचार हमारे जीवन को समृद्ध बनाता है और हमारे आस-पास सकारात्मक ऊर्जा संचारित होने लगती है. हम जहाँ भी जाते हैं, वहाँ के वातावरण को अपने अच्छे विचारों से सुखमय बना देते हैं. उच्च विचार वाला व्यक्ति चीजों की अच्छाई पर ध्यान केंद्रित करता है., जबकि निकृष्ट विचारधारा के व्यक्ति चीजों की खामियों पर बात करता है. ऐसे व्यक्ति काम शुरू करने से पूर्व ही उसके घटिया नतीजों के बारे में सोचकर अपने मनोबल को कमजोर बना लेते हैं. जो व्यक्ति विचारों का क्षुद्र होता है. वो व्यक्ति दुर्भाग्य को अपने साथ लेकर चलता है. ऐसे व्यक्ति को यदि मौका मिले तो वे अच्छे चरित्र के लोगों के कार्यों पर भी ऊँगली उठाने से नहीं चूकते. इस प्रकार की प्रवृत्ति रखने वाले व्यक्ति से ठीक उसी प्रकार दूरियाँ रखनी चाहिए, जिस प्रकार एक पागल कुत्ते से रखते हैं.

विद्यार्थी जीवन ही नहीं अपितु जीवन के प्रत्येक कदम पर विचारों का बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव है. जिस समय हमारा मन अच्छा विचार करता है उस समय हमारा आत्मविश्वास बढ़ जाता है. हमारे मन में स्फूर्ति आने लगती है. हमारा मन उत्साहित हो जाता. हम जोखिम उठाने को तत्पर हो जाते हैं.

इसके विपरीत जब हम नकारात्मक या घटिया विचारों के बारे में सोचते हैं तो हमारी चेतना क्षीण होने लगती है. हम चीजों के बारे में निर्णय नहीं ले पाते हैं. हम खराब विचारों के वशीभूत होकर अपना साहस और धैर्य खो बैठते हैं. इस तरह धीरे-धीरे हम पतन या विनाश की ओर बढ़ने लगते हैं. एक नन्हा सा विचार हमारे मन मस्तिष्क को इस तरह प्रभावित कर देता है कि हम विशाल सागर में मोती ढूँढ़ लेते हैं.

मन के विचार भी तीन प्रकार के होते हैं -1.सात्विक, 2.राजसिक, 3.तामसिक.

जब मन में प्राणी जगत के लिए कल्याण का विचार आये तो समझ जाएँ कि ये सात्विक विचार है. जब मन में भौतिक संसाधनों या सांसारिक सुखों के बारे में विचार आने लगे तो समझें कि ये राजसी विचार है और जब मन किसी के लिए अहित सोचे या किसी को नुकसान पहुंचाने के विचारों में घिरा हो तो समझ जाएँ कि इस समय तामसी शक्तियां आप पर हावी हो गयी हैं. हर समय, हर बार अच्छा विचार आना बहुत ही कठिन है. हम हमेशा एक ही प्रकार के विचार के अधीन भी नहीं होते हैं, यह भी सच है. अतएव यह कोशिश की जानी चाहिए कि कभी भी मन को क्षुद्र कर देने वाला विचार मन में कभी न लाएं, यदि दुर्भाग्य से ऐसा विचार आ भी जाये तो एक ही रास्ता है कि आप अपने मन की फ्रीक्वेंसी को परिवर्तित करके उसे वहाँ लाइए जहाँ आप अच्छा महसूस करते हैं या फिर सर्व हित के भाव से कुछ अच्छी चीजों के बारे में विज्यूलाइज कीजिये. मन बहुत ही चंचल या गतिशील होता है. एक ही क्षण में कहाँ से कहाँ तक पहुँच जाता है, हम स्वयं भी समझ ही नहीं पाते हैं. "स्वामी विवेकानंद जी"के अनुसार :- "अपवित्र कल्पना भी उतना ही हानिकारक है, जितना कि अपवित्र कर्म."सार यह है कि जो भी कार्य जिस किसी के भी माध्यम से होता है, वे सभी उनके आंतरिक विचारों की शक्ति का ही परिणाम है.

छोटा बच्चा

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली



मीठी-मीठी किलकारी,
मेरी सुन्दर है बोली.

सबको देख खुश हो जाता हूँ,
वे भी खुशी से गदगद हो जाते हैं.

न किसी से लड़ता हूँ,
न किसी से जलता हूँ.

क्या अपना क्या पराया,
मेरे लिए हैं सब जन बराबर.

दिन रात चंचल रहता हूँ,
हर कदम सीखना चाहता हूँ.

मैं सदा रहता हूँ मस्त मतवाला,
क्योंकि मैं छोटा सा बालक हूँ.

मैं भगवान का रूप कहलाता हूँ,
इसीलिए सब करते हैं मुझको प्रेम-दुलार.

काश!मेरे पंख होते

रचनाकार- कु.गायत्री चन्द्राकर, कक्षा-8 वीं, गुंडरदेही, बालोद



काश!मेरे भी पंख होते,
जो मैं पंछी जैसे उड़ती.
काश!मेरे भी पंख होते,

न कोई भी बंधन होता,
न कोई फिर मुझे रोकता,
मैं तो आजादी से उड़ती.
काश!मेरे भी पंख होते,

छू लेती नील गगन को,
जी भर देखती,नदी,नग,वन को,
सारे जग का सैर मैं करती.
काश!मेरे भी पंख होते.

खो गई, वो कल्पना

रचनाकार- कु.गायत्री चन्द्राकर, कक्षा-8 वीं, गुंडरदेही, बालोद



भारत की बेटी थी, कल्पना,
अंतरिक्ष में जाने का,
था, उनका सपना. भारत.
भारत की वो पहिली बेटी,
जो सोची थी, चांद-सितारों पर जाना,
बहुत ही प्यारा लगता था, जिन्हें,
चांद-सितारों को निहारना,
दुनिया को दिखा दिया,
साकार करके, अपना वो सपना,
वो भारत की बेटी कल्पना,
पर सितारों में ही खो गई वो कल्पना.

माँ तो आखिर में माँ होती है

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", शिवरीनारायण



माँ तो आखिर में माँ होती है,
जगत मे यही महान होती है,
माँ से बड़कर कोई और नहीं,
माँ ममता की खान होती है.

माँ दया, वात्सल्य, की मूर्ति है,
आँचल में मीठी छाँव होती है,
इससे बढ़कर और स्वर्ग कहाँ,
माँ के चरणों में ही तीर्थ होती है.

माँ ही जगत की खेवननहार है,
यही सन्तानों की पालनहार है,
माँ ही सृजन का पावन द्वार है,
माँ ही इस सृष्टि का आधार है.

माँ की महिमा भी अपरम्पार है,
इस जगत में माँ तेरा ही उपकार है,
तेरे समान यहाँ कोई और नहीं
तू ही कर देती सबका उद्धार है.

माँ क्या हम ऋण चुका पाएंगे?
तेरे उपकार से उऋण हो पाएंगे?
इस जन्म क्या, सात जन्म में भी,
तेरे ऋण को हम न चुका पाएंगे.

अच्छा लगता है

रचनाकार- आशीष निराला, कक्षा-5, शासकीय प्राथमिक शाला बिनौरी



मुझे स्कूल आना अच्छा लगता है.
मुझे स्कूल में पढ़ना-लिखना अच्छा लगता है.
मेरे स्कूल का नाम शासकीय प्राथमिक शाला बिनौरी है.
मुझे स्कूल में खेलना अच्छा लगता है.
मुझे स्कूल में पेड़ लगाना,
उसमें पानी डालना अच्छा लगता है.
मुझे स्कूल में चित्र बनाना अच्छा लगता है.
स्कूल में स्टोरी बुक पढ़ना अच्छा लगता है.

गर्मी के दिन

रचनाकार- डंकेश साय, कक्षा- 5, प्राथमिक शाला बिनौरी, पलारी, बलौदा बाजार



गर्मी के दिन में हम तालाब और नहर में नहाते हैं। गर्मी में खूब आम खाते हैं। नाना-नानी के घर जाते हैं। गर्मी में आम का अचार खाते हैं। गर्मी में बहुत धूप होता है, इसीलिए घर से निकलना मुश्किल होता है। लेकिन हम नानी के घर बहुत घूमते हैं। गर्मी में बहुत मज़ा आता है।

आजा कान्हा मोर घर

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार



आजा कान्हा मोर घर
तोला माखन मिश्री खवाहू.

तोला पहिराहू पीयर धोती
अउ मोर मुकुट सजाहू.
आमा तरी झूलना बांधहू,
अउ ओमा तोला झूलाहू.

आजा कान्हा मोर घर,
तोला माखन मिश्री खवाहू.

मोर बांटा के खई खजेना,
आधा बांट के तोला खवाहू.
बनहू मे ह तोर बर घोड़ा,
पीठ म तोला बइठाहू.

आजा कान्हा मोर घर,
तोला माखन मिश्री खवाहू.

खेलहू जब लुका छिपी
तोला घलो खेलाहू.
तरिया तउरे बर जब जाबो,
तोला रगड़ रगड़ नहवाहू.

आजा कान्हा मोर घर,
तोला माखन मिश्री खवाहू.

मुरली के तोर धुन में कान्हा
तुमक तुमक नाच देखाहू.
मरकी गगरी तेहा फोड़बे,
में ह बड़ मजा उड़ाहू.

आजा कान्हा मोर घर
तोला माखन मिश्री खवाहू.

घोंसला

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



चिड़िया का एक जोड़ा था. उसने एक बगीचे में अपना घोंसला बनाया बगीचा बड़ा सुंदर था. उसमें आम अमरूद नीम जामुन तथा संतरे के बहुत सारे पेड़ थे. आम के पेड़ पर चिड़िया का घोंसला था. घोंसले में चिड़िया के अंडे थे. आम का पेड़ चिड़िया और उनके अंडों को अपने ऊपर देख बड़ा खुश होता वह सोचा करता है कि एकदिन अंडे से बच्चे निकलेंगे. छोटे-छोटे बच्चे जब चींची करेंगे तो कितना आनंद आएगा वह चिड़िया की मीठी बोली सुनकर प्रसन्न होता था. कुछ दिन बाद अंडों से छोटे-छोटे तीन बच्चे बाहर निकले चिड़िया का जोड़ा उन्हें देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ. आम के पेड़ ने भी बच्चों के बोलने की आवाज सुनी उसे भी बड़ी खुशी हुई. आज तो सभी बहुत खुश थे पेड़ के पत्ते भी मुस्कुरा रहे थे खुशी के मारे चिड़िया डाली डाली चहक रही थी. धीरे-धीरे बच्चे बड़े होने लगे चिड़िया का जोड़ा खेतों में दाना चुगने चला जाता. आम का पेड़ बच्चों की देखभाल करता वह उनकी मीठी आवाज सुनकर खुश होता था जब चिड़िया का जोड़ा बच्चों को देने आता तो शोर मचा कर अपनी चोंच खोल देते. तब दाना उनके मुंह में डाल देती बच्चे शांत हो जाते. तीनों बच्चे चलने योग्य हो गए थे. बाहर आकर शाखा पर घोंसला में लौट जाते और एक चिड़िया का बच्चा उड़ चला शेष दोनों बच्चे भी उसे देख कर यूँ ही पंख फड़फड़ा कर उड़ गए. तभी चिड़िया का जोड़ा दाना लेकर घोंसले में आ गए. घोंसले में बच्चे ना पाकर बेचारी चिड़िया सीसकर के रोने लगे सभी पेड़ पौधे पत्ते तथा अन्य पक्षी भी उदास बैठे थे. इतने में जोर से आंधी आई रात का समय होता जा रहा था. अंधेरा बढ़ने लगा था. प्रातः काल का सूर्य अपनी लालिमा लिए उदित हुआ अचानक पास के पेड़ से ची ची की आवाज सुनाई दी. सभी प्रसन्न हो उठे तीनों बच्चे बैठे अपने माता-पिता को पुकार रहे थे चिड़िया का जोड़ा तुरंत उनके पास गया और उन्हें गले से लिपटा कर खूब रोया मां हम आंधी में रास्ता भटक गए थे अब हम तुम्हें छोड़कर नहीं जाएंगे तीनों बच्चे बोल उठे सभी पेड़ पौधे फूल पक्षी मुस्कुरा उठे और खुशी से झूमने लगे.

मटका गोलमटोल

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग



मैं हूँ मटका गोलमटोल.
गर्मी में है मेरा खूब रोल.

मिट्टी की है मेरी काया.
कुम्हार ने है मुझे बनाया.

खूब सहा हूँ उनकी मार.
तब मैं पाया हूँ ये आकार.

मेरे अंदर जो रहता है जल.
लगता सबको मधुर शीतल.

कंठ को लगता अमृत घोल.
ठंडक, राहत देता अनमोल.
मैं हूँ मटका गोलमटोल.

प्यारी गिलहरी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग



बहुत ही प्यारी एक गिलहरी.
मेरे आंगन में एक दिन उतरी.

रेशम जैसे उसके कोमल बाल.
उछल-उछलकर करती चाल.

दोनों आगे पैर में चना दबायी.
फिर झाड़ी की ओर दौड़ लगायी.

जिसमें छुपकर चना को खायी.
फिर नीचे आने नज़र दौड़ायी.

पर मुझे देखकर हुई भागखड़ी.
बहुत ही प्यारी एक गिलहरी.

नटखट बुलबुल

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

बुलबुल-"मम्मी आँगन में झूला डाल दीजिये ना."

बुल बुल ने जिद करते हुये मम्मी से कहा.

मम्मी -"ठीक है बुलबुल.मैं पापा से झूला मँगवा दूँगी."

दूसरे दिन बुलबुल का झूला आ गया.मोहल्ले की सहेलियाँ गुनगुन,रिया आकर बुलबुल के साथ खेलने लगीं.आँगन में तीनों की किलकारियाँ गूँजने लगती.वे तीनों खूब धमाचौकड़ी करतीं.

बुलबुल के खिलौनों की एक बास्केट है जिसमें वह सारे खिलौने रख देती है.एक छोटा सा घर है जिसमें बार्बी गुड़िया का बिछौना लगा है.

एक दिन उसके पापा किचन सेट लेकर आये.बुलबुल बहुत खुश हो गयी.वह दौड़कर अपनी सहेलियों को किचन सेट दिखाने चली गयीं.खिलौने दिखाने के बाद बच्चे बहुत प्रसन्न हो जाते हैं.

रविवार का दिन था. बुलबुल की मम्मी घर के काम निपटाकर आराम कर रही थी.दोपहर में गुनगुन भी आ गयी.वह बुलबुल के साथ खेलने लगी.

गुनगुन ने कहा -"बुलबुल तुम्हें कौनसी डिश बनाना आता है."

बुलबुल -"मुझे तो चाय बनाना आता है पर मम्मी कभी बनाने नहीं देती.तुम्हें पता है हलुवा भी बहुत जल्दी बनता है."

गुनगुन -"तुमको बनाना आता है."(आश्चर्य से)

बुलबुल -"हाँ बहुत सरल है.सूजी भूँजो फिर चीनी और पानी डाल दो.हलुवा बन जाता है. "

बुलबुल ने भोलेपन से जवाब दिया.

गुनगुन -"बना के दिखाओ ना.तुम्हारी गुड़िया भी खायेगी."

बुलबुल-"मम्मी जाग जायेगी.किचन में नहीं बना सकते हैं."



एक आइडिया है हम आँगन में चूल्हा जलायेंगे.उसमें कढ़ाई रख कर हलुवा बनायेंगे.

गुनगुन -"हाँ हाँ चलो आँगन में बनायेंगे." गुनगुन ने समर्थन भरे स्वर में कहा.

दोनों बच्चियों ने चूल्हा जला लिया.बुलबुल की मम्मी चूल्हे में ही पानी गरम किया करती थी.

बुलबुल दबे पाँव घर के भीतर गयी और कढ़ायी ,चीनी ,घी और पानी ले आयी.जलते हुये चूल्हे में कढ़ायी रखी गयी.घी डालकर सूजी डाली फिर भूँजने लगी.

बुलबुल -"थोड़ा चूल्हा फूँको.धुँआ मेरी आँखों में जा रहा है."

गुनगुन चूल्हा फूँकने लगी.

गुनगुन कढ़ाई में पानी डाली. बुलबुल चम्मच चलाने लगी.सूजी का हलुवा में उसे नन्हे हाथोंसे चम्मच चलाना भारी लग रहा था .कढ़ाई एक तरफा हो गयी और पलट गयी.कढ़ाई असंतुलित होने से बुलबुल भी गिर गयी.कढ़ाई का हलुवा बुलबुल की जाँघ पर गिर गया.वह जोर जोर से चीख रही थी.गुनगुन डाँट पड़ने डर से भाग गयी.

मम्मी जब चीखपुकार सुनी तो दौड़कर आँगन में आयी.वे मरहम लगा कर उसे डाक्टर के पास ले गयीं.जाँघ में फफोला पड़ चुका था.बुलबुल दर्द से छटपटा रही थी.स्कूल से भी एक सप्ताह की छुट्टी लेना पड़ गया.आठ दिन आराम करने के बाद उसके पापा उसे लेकर स्कूल गये.

छाया मैडम ने कहा- "बुलबुल तुम कैसे जल गयी बेटा?"

बुलबुल -"हलुवा बना रहे थे मैडम" (बुलबुल ने शर्माते हुये कहा)

मैडम -"दिखाओ बेटा कहाँ जली हो ?" बुलबुल ने स्कर्ट उठाकर जला हुआ घाव दिखाया.

मैडम-"ओहो बेटा तुमको हलुवा खाने मन था तो अपनी मम्मी से फरमाइश क्यों नहीं की ?वो तो बना देती ना.अब कभी ऐसा मत करना.जाओ क्लास में बैठो."

बुलबुल सिर झुका कर चुपचाप क्लास में चली गयी.

हाथी आया

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



देखो देखो हाथी आया
संग में अपने साथी लाया
कुश, प्रकाश, ओरांस आओ
नाचो, गाओ, शोर मचाओ

सुंदर, गोल मटोल है तन
लगता है हर्षित है मन
अपने धून में चलता है,
पर चींटी से वह डरता है

सूपा जैसे उसने कान
देखो-देखो उसकी शान
मोटे- मोटे उनके पैर
करते जंगल में वह सैर

छोटी पूछ,और लंबी सुंड
करते विचरन अपने झुंड
गन्ना पत्ती जब मिल जाता
झूम झूम कर खूब चबाता

स्कूल खुलने वाली है

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



बीत गई गर्मी की छुट्टी,
स्कूल खुलने वाली है.
स्कूल जाते हँसते गाते,
दिन वों आने वाली है.

पहुंचे जब स्कूल बन-ठन,
बज रही थी घंटी टन-टन.
सुन आवाज घंटी की हम,
प्रार्थना में खड़े हो गए हम.

जन-गण-मन गायन कर,
सुविचार का वाचन कर.
पीछे हाथ बांध कर हम,
कक्षप्रवेश, कर गए हम.

स्कूल से घर आकर हम
होम वर्क हम करते है.
शिक्षक के बातों का हम,
अनुसरण हरदम करते है.

मैं भी स्कूल जाऊंगा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, "कुशप्रीत", धमतरी



पापा अब मैं बड़ा हो गया
अब मैं भी स्कूल जाऊंगा.

कॉपी, कलम, किताब पकड़कर
समय पर स्कूल जाऊंगा.

अनुशासन का पाठ पढ़ूंगा
गुरुओं का मैं आदर करूंगा.

नहीं कभी आपस में लड़ूंगा
मिल जुल कर सबसे रहूंगा.

क, ख, ग, घ, और ङ अक्षर
पढ़ लिख मैं बनूंगा साक्षर.

समर कैम्प

रचनाकार- शबनम बंजारे, बलौदा बाजार



समर कैम्प 2023 में आज हमें किसी भी एक विषय में अपने विचार लिखने कहा गया जिसमें मैं समर कैम्प के बारे में लिख रही हूँ. पहले वाले समर कैम्प, दस दिन का था जिसे जलहरे मैम और फेकर मैम द्वारा लगाया गया था. उसमें हम बहुत चीजें बनाने के लिए सीखे हैं और सुबह योगा, गाना गाते और डांस करते थे. चित्र बनाना और मॉडल बनाना सीखा था. पेंसिल के छिलके से पौधे, प्याज के छिलके से और दाल से हम कमल का फूल बनाये थे. कुर्सी दौड़ करवायें ये तो एक लड़की फस्ट आयी थी. सुई धागे का दौड़ हुआ था, चम्मच दौड़ हुआ था. तीन रंग से पेंटिंग बनाये थे. गिट्टी से खिलौना बनाकर लाये थे. नारियल के खोटली से बाजा और नारियल रेशे से बाघ का सिर बनाये थे. मेहंदी लगाना सीखा. समर कैम्प के आखिरी दिन हम सबको इनाम मिला था और आइसक्रीम खाये थे इन सब में हमें बहुत मजा आया था.

राजू की शिक्षा यात्रा

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

सोनपुरी नामक गांव में एक तालाब के किनारे छोटा सा भोलेनाथ का मंदिर था. वहां पर गांव के सारे बच्चे सुबह-शाम जाकर खेलते थे. आसपास में आम का पेड़ लगा हुआ था जिससे बच्चे आम तोड़कर खाते थे वहीं पर एक लड़का रहता था जिसका नाम था राजू.



राजू स्कूल नहीं जाता था और बच्चों को आते जाते देखकर उसे बड़ा मन लगता था कि मैं भी स्कूल जाता. वह अपनी मां से कहता है की मां इस बार स्कूल खुलेगा तो मेरा भी नाम लिखा देना. मां कहती है ठीक है बेटा इस बार हम स्कूल चलेंगे राजू अपने स्कूल जाने की दिन गिनने लगा. स्कूल जब खुलेगा तो मैं सबसे पहले जाकर अपना नाम लिखवाउंगा. आज राजू का जन्मदिन था राजू अपना जन्मदिन मंदिर के पेड़ के नीचे मना रहा था. उसने सभी बच्चों को वहां पर बुलाया सभी बच्चे आए और जन्मदिन मना कर सभी ने राजू को उपहार दिए उसमें था स्कूल ड्रेस और बैग में पुस्तकें पेंसिलमिली. यह देखकर राजू अत्यंत खुश हुआ. वहां सभी लोगों ने कहा कि कल जब विद्यालय जाएंगे तो हम तुमको भी साथ ले चलेंगे और वहां जाकर हमारे साथ में पढ़ना. राजू को मां ने स्कूल के लिए तैयार किया गया. वह बच्चों के साथ स्कूल गया. शिक्षक देखते ही बोले क्या पढ़ लिखकर जीवन में आगे बढ़ोगे राजू. राजू ने कहा जी. विद्यालय का पहला दिन था शिक्षक ने उसे चित्र वाली पुस्तक जिसमें जंगलों की छुट्टी में बच्चों ने राजू को अपने भोजन में थोड़ा-थोड़ा दिया उसने पेट भर कर भोजन किया छुट्टी होने पर बच्चों के साथ राजू घर आ गया. आज वह बहुत खुश था. मंदिर के पेड़ पर बैठी चिड़िया उसका रास्ता देख रही थी. राजू जैसे ही घर आया मां बहुत खुश हुई और उसे गोद में उठा लिया और उसे खूब प्यार किया. स्कूल में दिए गए सारे काम करने लगा वह कहता है कि मां विद्यालय विद्या मंदिर है वहां पर मुझे आज बहुत कुछ सीखने को मिला है.

विद्यावान बनकर ही जीवन के वास्तविक उद्देश्य प्राप्त किया जा सकता है.

शहरिया पेड़

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया, रायपुर



आज तो मेरी पत्तियाँ भी झुलस रही हैं. अरे गर्मी से नहीं. उस सूरज महाराज की कृपा है. जो मछुआरा बन पानी को फांसता फिर रहा है. ए.सी. से गर्म हवाओं ने मुझे पूरी तरह से झुलसा ही दिया है.

क्या कहा?

जरा जोर से बोलो!

मेरी उम्र हो चुकी है

और आजकल मैं जरा ऊँचा सुनता हूँ.

नाम?

नाम मेरा पेड़ ही तो है.

अच्छा तुम चाहो तो शहरिया पेड़ कह सकते हो.

पहचान, पैदाइश, कुल, गोत्र?

सब बताता हूँ भई. जरा धीरज तो धरो....

मेरी पैदाइश यहीं शहर दीवार के पीछे ही हुई थी. मेरी नन्हीं कोंपलों का अन्नप्राशन धूल व बारिश के रीसते पानी से ही हुआ था.

कौन-कौन आया था?

हाँ आए थे बहुत से मेहमान.

कहां उगे थे?

घर के पिछली दीवार पर मैं उगा था.

तुम्हारे विशाल काया से उस घर के बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा?

उस घर में कंचों सी आंखों वाला बच्चा जो झांक - झांक कर मुझे देखता था. बच्चा शायद सोचता था कि बिना गमले, मिट्टी के भी भला कोई पौधा उगता है क्या? उसने तो शहर में महंगे कलेवर वाले गमलों में, नर्सरी से मंगाई गई नाजुक पौधों को ही देखा था. कंपोस्ट खाद के बिना जिनका अस्तित्व ही नहीं हो सकता है

भई हमारा क्या? हम तो बहादुर शाह जफर की गजल सरीखे हैं " ना किसी के आंख का नूर हूं, ना किसी के घर का चिराग हूं ". बहुत बोलता हूं कुछ गलत कहा हो तो माफ करना. भई मैं जरा ऊंचा सुनता हूं और मेरी याददाश्त भी जरा सुस्त हो रही है.

पूरी बात इत्मीनान से बताओ!

हां तो हम कहां थे ? मेरे अन्नप्राशन में तो घर की मालकिन भी थी. पड़ोसन भी आई थी. घर की मालकिन को हमारा जन्म लेना जरा भी नहीं सुहाया था. वो बुदबुदाती थी " मुआ जाने कहां से उग आया " और हम अवतरित भी ऐसे स्थान पर हुए थे कि उनका हाथ हमारे गले तक नहीं पहुंच पा रहा था. अगर हम गिरफ्त में आते तो कब के काल कलवित हो चुके होते.

कौन से गोत्र के हो?

अब रही हमारी बात हमारे गोत्र की तो हम बताये देते हैं हम पीपल के वंशज हैं. हमारे सहोदर आसपास के देवालय, मंदिरों, तालाब पार में आपको दिख ही जाया करेंगे. हमारे पूर्वजों की तो शान ही निराली थी. अब रही बात हमारे मिजाज की तो भई अब हम शहर में हैं तो शहरिया ही कहलायेंगे ना.....

शहर के पेड़ वह भी इतने बदसूरत!

क्या कहा? बदसूरत, अवांछनीय ?

ठीक ही सुना आपने. अगर मन्नत में मांगे गए होते तो आज किसी देवी स्थान, मंदिर, देवालय के या किसी शानदार ड्राइंग रूम में अपने हाथ पैर नुचवाकर कर "बोनसाई" बनकर पसरे होते. खैर भ्रूण हत्या की कोशिश भी हमारे साथ भी की गई थी.

क्या हुआ था तुम्हारे साथ?

शहर की इमारत के मलमल में हम भैया " टाट के पैबंद ". तो हमारी हत्या के लिए क्या-क्या जतन नहीं किये गये. किसी ने दीवार से गरम पानी रितोया (बहाया), किसी ने एसिड. पर दीवार से ऊपर से नीचे बहते तक कुछ अंश ही हमारा जला. पर कोख बची रही जिससे पुनः नई जड़े फूटी..... जवानी हममें भी ऐसी आयी कि गमले में उगे पौधों की जवानियां भी अश- अश कर उठे. गदराया यौवन, बलिष्ठ शाखाएं, हरीतिक्त पत्तियां ऐसे लचकती थी, जैसे कि इनकी नोकों पर नटनी करतब दिखा हो रही हो. शाखाएं ऐसी कि गमले के पौधों को जिम जाने पर भी ऐसी सुपुष्ट

बॉडी (देह) ना मिले.

रंगत का क्या कहना.कहीं गहरा हरा, कहीं पीला, कहीं ललछाँवा तो कभी सुनहरे रंग की दिखती है मेरी पत्तियां.

शहर की दोपहरी में जब सूरज मछुआरा पानी को फांसता फिरता है तब भी हमारी लुनाई देखते ही बनती है. " इस सूरज के घनत्व में तरलता है तो वह हमारी छांव है. जब धूप चढ़ती है और धूप में छाँव के बंटवारे होते हैं. तो हमारी पत्तियां बिल्कुल खामोश रहती है. सबसे ऊपर की शाखों पर धूप की कड़ाही में मेरे पत्ते तले जाते हैं तो उन्हें उनके घपचियानेको लेकर कोई मलाल नहीं होता. क्योंकि नीचे की पत्तियों को सूरज छांव जो बांटता है. "

अपने पक्ष में तुम्हें कुछ कहना है?

जी .

गमले के पौधों के ऊपर तो हरी तालपतरी तानी जाती है फिर भी वो बेचारे झुलस जाते हैं. कीड़े - मकोड़े, पक्षियों , कौओं की बारात मेरे बदन पर ऐसे नाचते हैं जैसे कि महादेव की बारात में भूत, परेत, मसान, पिशाच नाचा किये होंगे. जिसे जहां ठौर मिला वो वहां अपना आसरा बना लेता है. भई हमको तो गमलों के पौधों से बड़ी उलझन होती है.मुआ एक कीड़ा उनकी देह पर चढ़ा नहीं की मंहगी दवाइयों का छिड़काव उन पर हो जाता था. अब तो गिलहरियों को भी हमने न्यौता दे दिया है.

तुम्हारी शिक्षा दीक्षा?

क्या कहा शिक्षा - दीक्षा?

हम कभी स्कूल गये ही नहीं. मंदिर के घंटियों से जागना, चिड़ियों के चहचाहट से गिनती, हमारी भाषा " धूप - धूप में छाया के अनुवाद से होती है." मौसम के अखबार में हमारा रिजल्ट निकलता है. बारिश में तिमाही तो ठंड में छःमाही की परीक्षा होती है. हम बोर्ड की परीक्षा में तभी उत्तीर्ण माने जाते जब पतझड़ में गिरे पत्तों से दोगुने नए पत्ते हमारी देह की अंकसूची में नंबर भरते हैं. कीड़े, मकोड़े, पक्षी, कौवे, गिलहरी ही हमारे परीक्षक हुआ करते हैं. जो बिना लाग लपेट मौसम के पंचांग में हमारा रिजल्ट छाप देते हैं.

शहर में उगने के लिए कितनी रिश्त तुमने दी थी?

शहर में उगने के कारण हमने इसके भारी कीमत चुकाई है. गांव के पीपल में जहां जुगनूओं की बारात सजती है यहां शहर में हमारे तन पर बल्बों की झालर लपेट दी जाती है. इनकी तपिश से मेरे बदन में छाले पड़ जाते हैं. पर इनसे उनको क्या? " बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना " जैसे झालर का सेहरा बांध मैं भी नाच लेता हूं.

तुम्हें किस चीज का डर है?

आज मैंने ऊंची आवाज में किसी से कुछ कहने की आवाज सुनी.

क्या सुना?

अब इस पेड़ को काटना ही पड़ेगा. बेकार की गंदगी फैलाता है. जब देखो तब जगह मांगता फिरता है. कभी इस डंगाल (शाखा) को कभी उस डंगाल के लिये. और इस मुस्टंडे पेड़ की मुस्टंडई तो देखो खा - खाकर मुटा रहा है. हाँथ - पाँव (जड़ों) को फैला रहा है. रामसेतु बन गया है. जिस पर फुदकती गिलहरियां छत पर सुखाई गई गेहूं को खा रही है, मिर्च कुतर रही है और तो और इसकी दादागिरी को देखो. इसकी छाँव अब गमलों के पौधों पर " बेजा कब्जा " किए जा रही हैं.

फिर क्या हुआ?

मेरा तो डर के मारे काटो तो खून नहीं. हे प्रभु मेरी अर्जी कौन सुने? पर अगले ही दिन दो पेड़ कटईया आये. दोनों ने मेरे अनावृत्त यौवन को तौला, परखा. फिर कहा अभी इससे कोई खतरा नहीं. इसकी टहनियों को काँट - छाँट कर जरा छोटा कर देते हैं. फिर क्या था. चीरहरण हुआ मेरा, मेरे तन को ढकने वाली शाखाओं, पत्तियों को मेरे तन से हटा दिया गया. मैं शर्म से पानी- पानी हो गया. जाने उन्होंने मुझे जीवित क्यों छोड़ा? रोज रात को आक्सीजन देने वाला मैं खुद को ही आज निष्प्राण सा महसूस करने लगा हूं. " मौसम के हरकारे आते, पत्ते डाकिया बन संदेश सुनाते, गिलहरी सुख-दुख बांचती ". समय बीतता गया. शहर की धूल, ए.सी. की हवा से मेरी सेहत अब खराब रहने लगी. मेरी उम्र हो रही है. पर आज तो समय से पहले ही मृत्यु आ गई हो. ऐसा लग रहा है. बड़ी सी आरी, दरांती

लिए दो यम के दूत मेरी ओर बढ़े चले आ रहे हैं. मेरी जड़ों के मकान के टॉयलेट को जाम कर दिया था ना. आज मेरी हत्या निश्चित थी.

तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?

मरने से पहले मैं अपनी वसीयत करना चाहता हूं.

मेरी अस्थियाँ किसी मंदिर में रख दी जायें और कोख (जड़ों) को किसी गांव में रोप दिया जाय, मेरी अस्थियों से किसी बूढ़े को लाठी मिल जाये, मेरी जड़ के सत्व से किसी मरीज का भला हो जाये. एकाध कोपल किसी चौराहे पर रोप दी जाये. जहां ये अपनी शाखाओं से, जटाओं से बच्चों की खिलखिलाहट, गिलहरियों की फुदकन, पनिहारिनों का कलश ठौर, संध्या दीपक रखने का अलाव बन सकूं. जानता हूं, यह बहुत बड़ी ख्वाहिश है.

तुमने शहरिया पेड़ होने का गुनाह किया है!

यह आरोप सिद्ध हो चुका है!

मेरा गुनाह मुझे पता है कि मैं पेड़ हूं. वह भी शहरिया . शहर के कंक्रीटों भयावह जाल में मुझ जैसे पेड़ का भला क्या काम ? पर पेड़ तो पेड़ होता है ना?

प्रकृति रोप दे जहां भी जिसको,
पेड़ वहीं का बाशिंदा हो जाता है.

ना करो शक मेरी नियत पर,

पेड़ कभी गंवईया

ना कभी शहरिया होता है.

दे दे जो एक मुड्डी

माटी और,

एक मुड्डी आकाश,

पेड़ उसी का ,

हमसाया हो जाता है.

पेड़ ना कभी गंवईया,

ना कभी शहरिया होता है.

छोटू भालू का घर

रचनाकार- उपासना बेहार



गर्मियों में अंशुल और राघव परिवार के साथ जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान घुमने आये थे. उनके रिसोर्ट के आसपास जंगल और पहाड़ थे. दोनों बच्चे खूब मजा कर रहे थे. एक दिन वो घुमने रिसोर्ट के ठीक पीछे वाले जंगल गए तो गाइड ने वहाँ एक पहाड़ की तरफ ऊँगली करते हुए बताया कि यहाँ एक मम्मी भालू अपने बच्चे के साथ रहती है. दोपहर में दोनों बच्चे जब रिसोर्ट के पीछे खेल रहे थे तभी उन्हें पेड़ के पीछे से कुछ आवाज सुनाई दी, उन्होंने देखा कि वहाँ भालू का बच्चा था. वो तुरंत समझ गए कि ये मम्मी भालू का बच्चा है. अंशुल ने पत्ती और टहनिया तोड़ कर प्यार से बच्चे को खाने को दिया. दोनों भाई छोटू भालू को मम्मी भालू के पास ले जाने की प्लानिंग करने लगे. राघव ने बैग में खाने-पीने का सामान ले लिया फिर छोटू भालू के गले में एक पट्टा बाँध पहाड़ी की तरफ चल पड़े. तीनों जब पहाड़ी की तरफ चढ़ने लगे तो दूर एक गुफा दिखाई दी, जैसे जैसे वो ऊपर चढ़ने लगे, जमीन कम चट्टानों की संख्या बढ़ती चली गयी. राघव ने जब एक चट्टान पर पैर रखा तो चट्टान खिसक गया. राघव ने बिना घबराये जल्दी से दोनों हाथों से पास के एक पेड़ को पकड़ कर अंशुल को आवाज लगाई. अंशुल ने तुरंत छोटू भालू के गले से पट्टे को उतार कर राघव की तरफ फेंका. राघव सिर को पकड़ कर साइड के चट्टान की तरफ बड़ी मुश्किल से पहुँच गया. तीनों फिर से ऊपर की ओर चढ़ने लगते हैं. गुफा के पास पहुँच कर वो खुश हो जाते हैं. छोटू भालू को गुफा के मुहाने पर छोड़ते हैं. वो आसपास को सूँघता है और तेजी से अंशुल की तरफ भागता है. दोनों भाइयों को समझ नहीं आता कि ये अपने घर के अन्दर क्यों नहीं जा रहा है, तभी ध्यान से देखते हैं कि 'अरे ये तो शेर की माँद है', तीनों घबरा कर वहाँ से तेजी से ऊपर की ओर चढ़ते हैं. जैसे तैसे वो ऊँचाई पर पहुँचते हैं. वहाँ फिर एक गुफा दिखती है. छोटू भालू उस गुफा को सुघ कर अन्दर की तरफ भागता है. दोनों समझ जाते हैं कि ये गुफा उसी की है और छोटू भालू के लिए खुश हो कर वो वापस जाने लगते हैं.

तभी उन्हें पहाड़ के नीचे से मम्मी-पापा और लोगों की आवाजें आने लगती हैं। असल में मम्मी-पापा ने जब बहुत देर से दोनों भाइयों को नहीं देखा तो परेशान हो रिसोर्ट में सब जगह खोजा पर उनका कहीं पता नहीं चला तब वो जंगल में खोजने आये। तभी सबकी नजर पहाड़ी पर पड़ी जिधर से राघव-अंशुल नीचे आ रहे थे। दोनों ने सभी को छोड़ भालू के बारे में बताया, पर सभी ने उन्हें समझाया कि 'इस तरह अकेले यहाँ नहीं आना चाहिए था, जान का खतरा भी हो सकता था तुम लोगों को वन अधिकारी को बताना चाहिए था।' दोनों ने आगे से इस बात का ख्याल रखने को कहा और सभी को परेशान करने के लिए माफ़ी मांगी

तेरे चरणों मे माँ तीरथ द्वार है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



माँ मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ भटकूँ
तेरे चरणों मे ही तीरथ द्वार है,
सारे देवता हैं माँ तेरे चरणों मे
नमन करूँ तुझको बारम्बार है.

करूँ स्तुति मैं, करूँ आराधना
करूँगा मैं तेरा, नित गुणगान है,
जग में है माँ तेरी पावन महिमा
माँ तू ही इस जगत में महान है.

तुम ही हो जग की जन्मधात्री
तुम ही तो हो पहिली गुरुमाता,
तुम हो शक्ति माँ देवी स्वरूपा
तुम ही तो हो माँ सृजन-कर्ता.

तुम ही तो हो माँ वात्सल्यमयी
तुम ही माँ ममता की खान हो,
तुमसे बढ़कर जग में कोई नहीं
तुम ही देती सबको वरदान हो.

माँ तुम हो सबकी पालनहारी
और तुम ही हो दया की मूर्ति,
तेरे बिना सब यह जग है सुना
तुझसे यह धरा-धाम सँवरती.

कुल्फी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



आ हा! कुल्फी वाला आया.
रंगबिरंगी कुल्फी लाया.
धूम मच गई गली - गली
बच्चों को लग रही भली
अम्मा! मुझको पैसे दे दो
मेरा भी मन है ललचाया.

इसमें हैं काजू - बादाम
स्वाद, सुगंध में है सरनाम
ठंडी - ठंडी मजा दे रही
गर्मी को है दूर भगाया.

मुँह में रखो, शीघ्र गल जाती
दिखा - दिखाकर विभा चिढ़ाती
खाना अधिक, हानिकारक है
बाबा जी ने हमें बताया.

सूरज

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



सूरज बाबा! तुम्हें प्रणाम.
कितना रूप - स्वरूप ललाम.

बड़ा आग का गोला हो तुम
लगते हो बिल्कुल फुटबाल,
भरी हुई हैं गैसों तुममें
शक्ति - ताप से मालामाल,

हर दम निकला करती लपटें
जिसमें हैं धातुएँ तमाम.

प्रतिदिन सुबह चमकने लगते
आ जाते हो अंबर में,
तनिक नहीं आलस करते हो
जनवरी से ले, दिसंबर में,

जब दिखते हो दिन कहलाता
रात में करते क्या विश्राम.

जाने कबसे बँधी नियम में
धरती लगा रही चक्कर,
ग्रह, नक्षत्र. चंद्रमा भी तो
परिक्रमा कर रहे निरंतर,

मौसम का क्रम बदला करता
वर्षा. जाड़ा, भीषण घाम.

किरणों से ही ऊर्जा पाकर
वृक्ष बनाते हैं भोजन,
तुमको देख नियंत्रित होते
सकल सृष्टि के आयोजन,

हमें विटामिन डी सँग देते
सौर ऊर्जा भी अविराम.

थोड़ी शक्ति हमें भी दे दो
नाम देश का हम चमकाएँ,
तिमिर कुहासे दूर भगाकर
आगे बढ़ते ही जाएँ,

कैसे और कहाँ रहते हो
हमें दिखा दो अपना धाम.
सूरज बाबा! तुम्हें प्रणाम.

जल बचाओ जीवन बचाओ

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



मानसून 2023 आ रहा है
जलवायु परिवर्तन चेता रहा है
जल बचाओ जीवन बचाओ जलबिना
मानव जीवन अधूरा बता रहा है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है
पानी को अहम दुर्लभ मानकर
अपव्यय करने से बचाना है

पानी के स्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने
के लिए जी जान से ध्यान लगाना है
पानी बचाओ जीवन बचाओ
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है
हर मानव को ज़ल संरक्षण संचयन अपनाकर
पानी बचाकर जनजागृति लाना है
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है

बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है
पानी का उपयोग अब हमें
प्रसाद की तरह करना है.

पर्यावरण बचाना है

रचनाकार- श्रीमती सरोजनी साहू, सारंगढ़



आओ आज कतारों में,
रोप वृक्ष हजारों में,
श्रम का बिगुल बजाना है
पर्यावरण बचाना है.
वन परिवेश न घटने दे,
एक भी पेड़ न कटने दे.
पेड़ सभी अनमोल रतन
आओ इसका करें जतन.
आओ आज कतारों में रोपे वृक्ष हजारों में
श्रम का बिगुल बजाना है .
पर्यावरण बचाना है,
पेड़ की हर डाली से
प्यार करे हम हरियाली से,
कहता यही जमाना है,
पर्यावरण बचाना है.

भारतीय किसान

रचनाकार- दिनेश साहू, कक्षा -12 वीं (कला), शास.उच्च माध्य विद्या.करेली
बड़ी, मगरलोड, जिला धमतरी



नई सोच नई दिशा से तकनीक अपनाना है,
इसे जन - जन किसानों तक पहुंचाना है.
अब किसानों का काम आसान कराना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

नई - नई कंपोस्ट खादों का चलन बढ़ाना है,
बीमारियों को जड़ से मार गिराना है.
देश की जिम्मेदारियों को भी संभालना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

अब अपने-अपने धान की कीमत बढ़ाना है,
जगह - जगह इसका व्यापार भी चलाना है.
सरकार से नई - नई योजना खुलवाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

किसानों की परेशानियों को दूर भगाना है,
किसानों को कर्ज से उबारना है.
किसानों को आत्महत्या करने से भी बचाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

सभी किसानों को बोनस का मांग कराना है,
सभी त्यौहारों को भी धूम - धाम से मनाना है.
साथ में घर का खर्चा भी ध्यान से चलाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

कृषि का भी स्कूल में पढ़ाई कराना है,
पढ़ाई के साथ कृषि कार्य भी सिखाना है.
सत्य की राह जनमानस को भी दिखाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

भारतीय किसानों में भी एकता बनाना है,
जन-जन किसानों को आगे बढ़ाना है.
किसानों का भी खुद का पहचान लाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

सब धर्म का भेद - भाव मिटाना है,
किसानों को समान अधिकार भी दिलाना है.
किसानों की जिंदगी में खुशहाली लाना है,
भारतीय किसानों का मान बढ़ाना है.

गर्मी में सावधानी

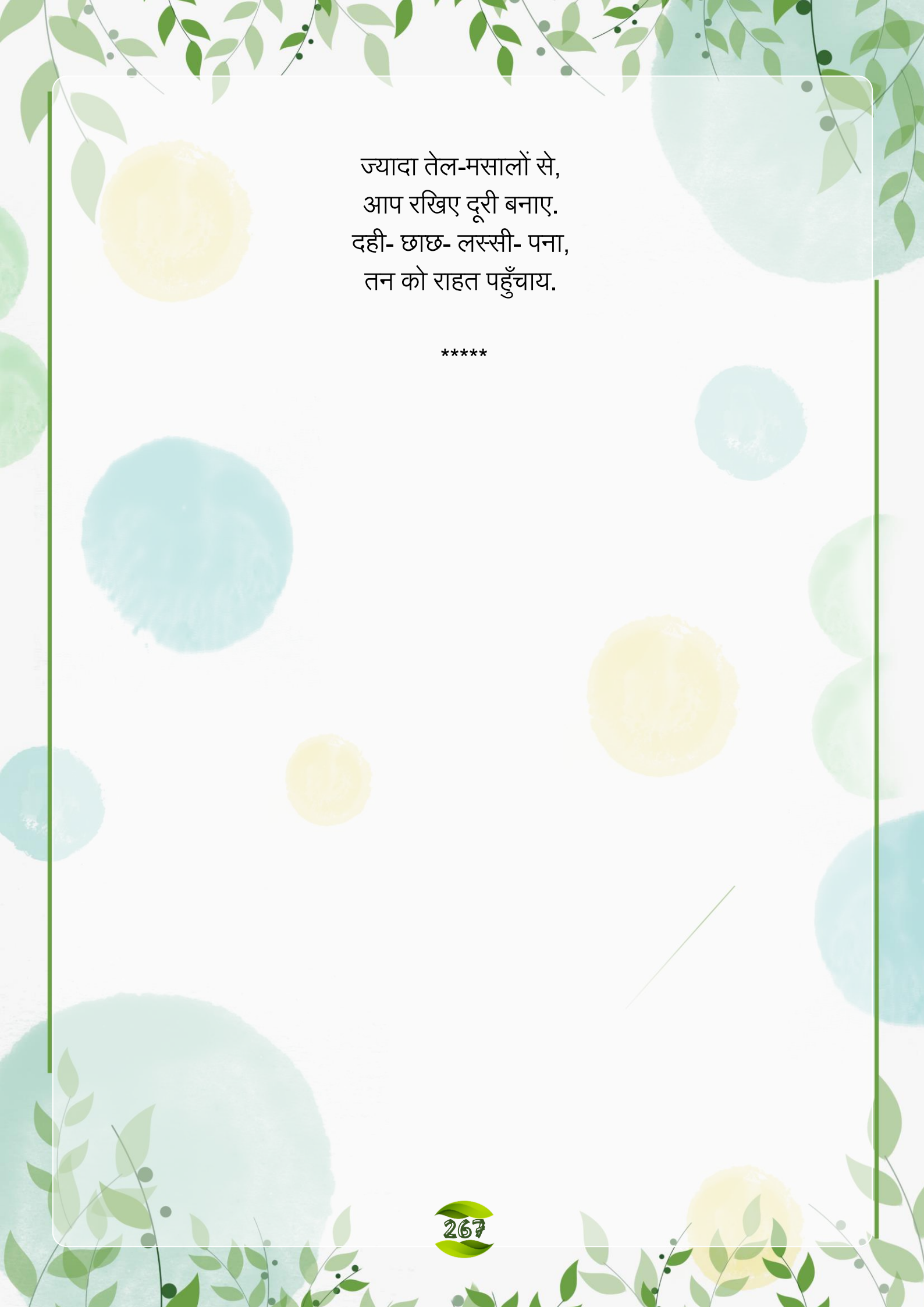
रचनाकार- कमलेश वर्मा, बेमेतरा



भीषण गर्मी की तपिश में,
चेहरा हुआ मुरझाय.
पानी आप भरपूर पीयो,
कहत सुजान कविराय.

यदि धूप में बाहर जाना हो,
कभी खाली पेट न जाय.
जलजीरा-शरबत-नींबू पानी,
ये तरल पदार्थ अपनाय.

लू के गर्म थपेड़ों से,
खुद को रखिए बचाय.
सिर-चेहरा सब ढँकिए,
तब आँच कम ही जनाए.



ज्यादा तेल-मसालों से,
आप रखिए दूरी बनाए.
दही- छाछ- लस्सी- पना,
तन को राहत पहुँचाय.

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ह	2		3		4 तु		5		6
			7	8			9 ट	10	
11			12 गु						
								13 ता	14
15 मं		16					18 धू		
				19		20 घो			
		21 स	22				23 न		
						24 बो			
25		26 गु		27					28
29 तु						30 र			

बाएँ से दाएँ

- पहुंचा 4. तुम लोग
- पेड़ पौधों का क्रम से लगा होना 9. खोज, ढूँढ
- ओला 12. मीठा
- योजना 15. दोपहर
- दूर 20. इच्छा, चाहत
- सराहना 23, गायब
- बहना उठाने में मदद,
- ठीक से बोलने/जवाब नहीं देने वाला 29. तुम्हारा
- रथ यात्रा

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 ए	त	2 के			3 प	न	4 ही		5 ख
क		6 रा	7 ह	प	ट		8 त	स्म	ई
ज			व		की		वा		र
9 ति	हा	10 र		11 तो	प			12 बो	खा
या		13 ख	वा		14 ट	क	र	हा	
	16 सु	वा		17 लु	का		त		18 ग
19 दु	वा	री		लु		20 प	न	वा	री
21 आ	री			22 हा	डा		पु		या
		23 का	ब	र		24 न	री	या	य
25 सु	खी	या	र		26 गु	र	हा		

ऊपर से नीचे

- बेचारा 3. सरगुजा क्षेत्र वासी 4. महानदी का उद्गम
- मुकर 6. ठण्ड 8. दिन
- माता 14. रुको
- बीच 16. नापसंद करना 18. हवा देने/धूकने का पात्र/वस्तु 19. मोहल्ला
- हम लोग 24. एक भाजी का नाम 25. खाद
- गुड़ 27. मुंह
- तन/शरीर